अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

७८वाँ स्थापना दिवस समारोह

मंगलवार, २५ दिसम्बर २०१२, ज्ञानमंच, कोलकाता

मुख्य अतिथि
माननीय श्री सुब्रत मुखर्जी
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी
एवं पंचायत व ग्रामीण विकास मंत्री
पश्चिम बंग सरकार

अध्यक्षता
श्री हरिप्रसाद कानोड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

मुख्य वक्ता
श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका
सुप्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी

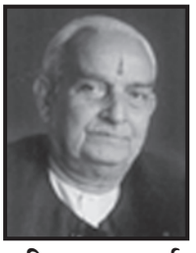

श्री अम्बु शर्मा

इस अवसर पर मूर्धन्य साहित्यकार श्री अम्बु शर्मा (महमिया) को सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

नाटक मंचन : बेटियाँ और एक लोटा पानी

नाटककार : डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया
परिकल्पना निर्देशक : श्री मिथिलेश राय
संगीत : श्री जयदीप मुखर्जी
सलाहकार : श्री रवीन्द्र भारती

नाट्य सारांश

हमारे समाज में बालिकाओं एवं नारियों की स्थिति सदियों से दयनीय रही है और वे उपेक्षा का पात्र रही हैं। आज यह आवश्यक है कि हम बेटियों को बेटों के सदृश ही समझें और उनके शिक्षा और स्थास्थ्य पर बराबर का ध्यान दें।यह हर्ष का विषय है कि आज लड़कियाँ प्रत्येक क्षेत्र में आगे आ रही हैं किन्तु अभी इस विषय पर बहुत कार्य करने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार धार्मिक अनुष्ठानों एवं दिखावे तथा आडम्बर पर भी काफी अपव्यय होता है और हमें अपने संसाधनों का उपयोग विचारपूर्वक करने की आवश्यकता है।

नाट्य रूपक 'बेटियाँ और एक लोटा दूध' उपरोक्त बिन्दुओं पर समाज का ध्यान आकृष्ट करने का एक प्रयास है।

समाज विकास

◆ दिसम्बर २०१२ ◆ वर्ष ६३ ◆ अंक १२ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक - १०० रु.

अनुक्रमणिका

शीर्षक	*पृष्ठ संख्या*
चिट्ठी आई है	६
गद्य गीत – ***नथमल केडिया***	६
सम्पादकीय : देख तेरे इन्सान की हालत क्या हो गयी भगवान – ***सीताराम शर्मा***	७-८
अध्यक्षीय : नये साल में प्रेम की गंगा बहाते चलें – ***हरिप्रसाद कानोड़िया***	९
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के विगत अधिवेशन और पदाधिकारी	११
एक स्मरणीय वर्ष – ***संतोष सराफ***	१३-१६
कविता : मन – ***किशन लाल शर्मा***	१६
सम्मेलन के प्राण पुरुष एवं पूर्व अध्यक्ष	१७-२३
वर्तमान राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति एवं स्थायी समिति	२५-२७
हिन्दुत्व – चिरंतन, वैश्विक सहिष्णुता, स्वीकार्यता एवं औचित्य-बोध – ***हरिप्रसाद कानोड़िया***	२९-३३
व्यापार से किनारा करता मारवाड़ी युवा – ***संजय हरलालका***	३९-४०
सहज व्यक्ति थे इन्दर कुमार गुजराल – ***सीताराम शर्मा***	४१-४२
समाज के लिए क्यों आवश्यक है मारवाड़ी सम्मेलन – ***विनय सरावगी***	४५-४६

शीर्षक	*पृष्ठ संख्या*
आदर्श लोक सेवक : म्हारी डायरी रो एक पानो – ***नथमल केडिया***	४९-५०
मेरे ही साथ क्यों? – ***राम कुमार गोयल***	५१-५३
मारवाड़ी सम्मेलन की जीवन यात्रा : क्या खोया क्या पाया – ***श्यामसुन्दर हरलालका***	५५-५६
मारवाड़ी समाज : हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी? – ***विजय कुमार गुजरवासिया***	५९-६०
धर्म व सेवा के नाम पर आडम्बर, दिखावा, शोहरत.... – ***श्यामसुन्दर बगड़िया***	६१
कविता : कृपा - ***श्याम सुन्दर खेमाणी***	६७
समाचार	६७-७७
कविता : बेटी बचाओ देश बचाओ - ***गौरी शंकर गुप्ता***	७८
कविता : घूमते–घूमते - ***कृष्णचंद्र द्विवेदी***	७९
समाचार	८१
कविता : बेरो पाड़ तो सरी बीरा - ***जगदीश प्रसाद पाटोदिया "चाँद"***	८३
कविता : नये युग के नये अर्जुन सुन - ***गौरीशंकर मधुकर***	८७
तसवीरों के आईने में सम्मेलन	९३-९८

स्वत्वावधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७
फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित
प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

जय राष्ट्र - जय समाज!

समाज-विकास का नवंबर अंक प्राप्त हुआ। विस्तार से सभी विद्वानों का लेख पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हमें नाज है हमारे अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़ियाजी पर जिन्होंने अपने संघर्षमय जीवन में अपने गहन अध्ययन से विस्तार से "सभी धर्मों का सत्य : धर्म अनेक सत्य एक" ऐसा सुव्यवस्थित लेख जो वड़ा ही विचारवान है, लिखा। सर्व धर्म समन्वय की परिभाषा बड़ी ही व्यापक है। यह इतना गहन विषय है कि जीवन का सारा समय भी इस पर समाप्त कर दें फिर भी इसकी अतल गहराई तक नहीं पहुँचा जा सकता। ब्रह्मलीन परमहंस रामसुखदासजी ने कहा है कि "जो सबका अपना है, वह परमात्मा है।" पाल ब्रान्टन ने पूछा -- आस्तिकता क्या है? ईश्वर है भी या नही? महर्षि रमण ने हँसते हुये बोला – पहले यह वताओ कि तुम हो या नहीं और यदि तुम हो तो तुम कौन हो? आस्तिकता, आध्यात्मिक चिकित्सा की एक विधि है। जीवन का सारा दुख इसके अधूरेपन की अनुभूति में है। जव कोई इसे संपूर्णता में अनुभव करता है तो उसके घोर संताप शमित हो जाते हैं। अपनी अंतरआत्मा में ही उसे परमात्मा की फाँकी मिलती है। स्वयं के जीवन में ही जगत के विस्तार का बोध होता है; हालॉकि इस अनुभूति के लिये नैतिकता की नीति का अनुशरण करना जरुरी है।

तिनके के समान हलका वनने से वृक्ष के समान सहिष्णु बनने से, दूसरों को मान देने से, इष्ट की महिमा समझने से तथा अभिमान का त्याग करने से साधना शीघ्र सफल होती है। भक्ति रसमय है, इस लिये इसकी अभिव्यक्ति में आनन्द है। यही वजह है कि भक्ति बोलती नहीं, गाती है, इसमें विचार नहीं, नृत्य है। भक्ति का संबंध तर्क से नहीं, विचार से नहीं, हृदय और प्रेम से है। भक्ति है रस, इसके अर्थ को कह-सुनकर नहीं डूब-मिटकर ही जाना जाता है। पाप आचरण नहीं, भावना है। आचरण एवं व्यवहार तो कर्मप्रेरित निमित्त हैं, केवल भावना ही आत्म प्रेरित है।

श्रद्धेय सीताराम जी शर्मा ने 'खेतान एवं कंपनी' की १०० वर्ष की कहानी पर विस्तारपूर्वक लिखा। "सादा जीवन उच्च विचार" अपने समाज की शान है। हमारे पूर्वजों ने इसे ही अपनाकर पूरे संसार में अपना अपूर्व स्थान बनाया। भाई जगदीश तुलस्यान ने 'टूटता विश्वास' में अपनी भावना की गहराईयों को वड़ी ही बारीकी से कविता में प्रगट किया। हस सभी उनकी भावनाओं की कद्र करते हैं; साथ ही उन्हें विश्वास दिलाते है कि धैर्यपूर्वक परिस्थितियों का मुकावला करने से परमात्मा निश्चित रूप में उनके 'टूटते विश्वास' को सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे - ऐसा हमें विश्वास है। हम 'समाज-विकास' के संपादक एवं सभी कार्यकारिणी के सदस्यों को आभार प्रगट करते है कि बुनियादी तौर पर इस पत्रिका द्वारा देश के कोने-कोने में अपने सद्विचारों से अत्यधिक लाभ दिलाने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं। विशेष प्रभु कृपा योग्य सेवा।

शुभेच्छु

– सत्यनारायण तुलस्यान
मुजफ्फरपुर (विहार)

गद्य-गीत

– नथमल केडिया
साहित्य महोपाध्याय

मैनें यौवन की देहरी पर अभी पग भी नहीं रखा था कि तुम जीवन में आये। उस दिन किशोर वय के खेल खेलते-खेलते हम लोग नदी-तट तक पहुँच गये। साँझ की बेला हो आई थी। हमलोग कौतुक-कौतुक में दीप प्रज्वलित कर उन्हें दोनों (पत्तों) में रख जल में प्रवाहित करने लगे। ओह! कितना आनन्द होता था जव मेरा दीप तुम्हारे दीप से आगे निकल जाता था। मैं उल्लासपूर्वक तुम्हारी ओर देखने लग जाती थी। और उसी तरह तुम भी मुस्कराकर मेरी ओर देखने लग जाते थे जव तुम्हारा दीप आगे निकल जाता था।

और तब एकाएक न जाने किस अदृश्य से संचालित हो तुम्हारा दीप और मेरा दीप एक दूसरे से सट कर साथ-साथ बहने लगे थे।

उन्हें देखकर मेरे गाल लज्जा से लाल हो उठे थे। शायद तुम्हें नहीं मालूम उसी क्षण मैं युवती हो गई थी।

सम्पादकीय

"देख तेरे इन्सान की हालत क्या हो गयी भगवान" बाप बेटे से डरता है!

– सीताराम शर्मा

आज से ७७ वर्ष पूर्व १९३५ में जब समाज के चिन्तनशील, प्रबुद्ध, दूरदर्शी एवं तेजस्वी नेतृत्व ने समाज के विकास एवं सुधार हेतु अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना की तब मारवाड़ी समाज का स्वरूप आज से बिल्कुल भिन्न था। समाज कुरीतियों एवं रूढ़ियों में जकड़ा था। महिलायें पर्दे में थीं। बालिका शिक्षा के साथ-साथ साधारणतया शिक्षा का भी अभाव था। विधवा-विवाह कल्पनातीत था। विदेश-यात्रा प्रतिबन्धित ही नही, समाज से निष्कासन के रूप मे दण्डनीय थी।

जीवन एवं रहना-सहन सादगीपूर्ण था, फिजूलखर्ची एवं दिखावा को समाज अच्छी नजर से नही देखता था। परिवार मे पारस्परिक प्रेम था, संयुक्त परिवारो का जमाना था। व्यवसाय-धन्धे मे इतनी ईमानदारी थी कि "न खातो, न बही, जो मारवाड़ी कहे वही सही" जैसी कहावत ने स्वीकृति प्राप्त की। माता-पिता के प्रति अगाध श्रद्धा थी। साधारणतया बुर्जुगो के प्रति सम्मान की भावना थी। गाँवों में तो अपने परिवार के वरिष्ठ ही नहीं गाँव के बुर्जुग नाई, कुम्हार, खाती भी चाचा-ताऊ थे। समाज नशाखोरी-शराब से दूर था एवं सामाजिक नैतिक मूल्यो के प्रति आस्था थी।

मारवाड़ी सम्मेलन, जिसके स्थापना काल से ही मुख्य उद्देश्य समाज-सुधार, समरसता तथा राष्ट्रीय विकास एवं एकता रहे हैं, ने विशेषकर समाज सुधार के क्षेत्र में लगातार सफल प्रयास किया है। समाज को कुरीतियों एवं रूढ़ियों से बाहर निकालने में सम्मेलन पिछले सात दशक से कार्यरत है। कुछ क्षेत्रों में सफलता मिली है, कुछ में अभी बहुत कुछ करना बाकी है। सम्मेलन के कार्यकर्ताओं ने पर्दाप्रथा के विरूद्ध लाठियाँ खाई, दहेज दिखावा, फिजूलखर्ची के खिलाफ लगातार आन्दोलन किये हैं, विधवा-विवाह के समर्थन में आवाज उठाई, नारी शिक्षा पर जोर दिया, समरसता के प्रयासों को बढ़ावा दिया, राजनैतिक चेतना जागृत करने की कोशिश की, उच्च शिक्षा के समाज के इच्छुक मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को आर्थिक सहयोग से प्रोत्साहित किया, राजस्थानी भाषा की श्रीवृद्धि के लिए साहित्यकारों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया एवं समाज को संगठित करने के साथ, विपदा के समय सम्मेलन सदैव सम्बल बना। सम्मेलन ने मूलतः एक तरफ खामियों की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट किया एवं उनको सुधारने के लिए प्रयास किये, वहीं समाज की खूबियों को बढ़ावा दिया।

सम्मेलन की प्रासंगिकता पर गाहे-बेगाहे प्रश्न उठता रहता है। मेरी समझ में सम्मेलन की आवश्यकता आज पहले से अधिक है। इन प्रश्नों पर सम्पूर्ण समाज की ओर से बातचीत करने वाला, प्रश्न उठाने वाला एवं चुनौती देने वाले और कोई आवाज या मंच नहीं है।

पिछले सात दशक में समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है। कुछ शुभ, कुछ अशुभ। समाज ने निःसंदेह प्रत्येक क्षेत्र – व्यवसाय, शिक्षा, साहित्य, कला आदि – में आशातीत प्रगति की है। समाज की तस्वीर भी बदली है। समाज बहुत सी रूढ़ियों एवं कुरूतियों से बाहर निकला है। समाज की लड़कियाँ आज लड़कों से बढ़कर केवल शिक्षा ही नहीं, अन्य

क्षेत्रों में भी बराबरी कर रही है।

दूसरी ओर कुछ परिवर्तन चिंता के विषय हैं। धन का महत्व लगातार बढ़ रहा है। परिवार में जो भाई धनी है वही 'बड़ा भाई' है। पारिवारिक एकता एवं प्रेम में कमी आई है, संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। तलाक बढ़ रहे हैं। व्यवसाय में ईमानदारी में कमी आई है।

इस नये अनुशासित समाज में कोई पंच नहीं है। बुजूर्गों के प्रति सम्मान में इतनी कमी आयी है कि आज का बाप बेटे से डरता है। बाप बेटे को घर से नहीं निकाल सकता, बेटा बाप को घर से निकाल देता है। बुजुर्ग माँ-बाप वृद्धाश्रम पर आश्रित हैं। सारे देश में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट आयी है, मारवाड़ी समाज भी अछूता नहीं है। सम्मेलन आडम्बर, दिखावा, फिजूलखर्ची पर नकेल नहीं लगा पा रहा है। धार्मिक अनुष्ठान आस्था की बजाय दिखावा के प्रतीक हो गये हैं।

सम्मेलन की प्रासंगिकता पर गाहे-बेगाहे प्रश्न उठता रहता है। मेरी समझ में सम्मेलन की आवश्यकता आज पहले से अधिक है। इन प्रश्नों पर सम्पूर्ण समाज की ओर से बातचीत करने वाला, प्रश्न उठाने वाला एवं चुनौती देने वाले और कोई आवाज या मंच नहीं है। समाज में सुधार या परिवर्तन एक सहज रास्ता नहीं है। यह एक निरन्तर प्रक्रिया है। इसकी सफलता या असफलता को दिनों में नहीं, दशकों और कभी -कभी सदियों में मापा या नापा जा सकता है। क्या ७७ वर्ष पूर्व समाज ने आज की शिक्षित एवं प्रगतिशील नारी की कल्पना की थी? विदेश यात्रा करने पर निष्कासित करनेवाला समाज ७७ वर्ष पूर्व कभी कल्पना कर सकता था कि उसके समाज के युवक ही नहीं युवतियाँ भी, शिक्षा एवं व्यवसाय के, यहाँ तक कि मनोरंजन के लिए, सुबह-शाम स्वतंत्र रूप से विदेश यात्रा करेंगी? यह मारवाड़ी समाज की खूबी है कि वह अपनी खामियों के विषय में बात करता है क्योंकि वह उन्हें सुधारना चाहता है एवं मारवाड़ी सम्मेलन का मंच उसे वह आवाज प्रदान करता है। ★★★

कोलकाता से 29 साल से नियमित निकलनेवाला एकमात्र सान्ध्य हिन्दी अखबार

सेवासंसार

Sister Concern
MEDIA SEVA
ADVERTISING AGENCY

सबसे बेस्ट

प्रधान कार्यालय

42, पाथुरिया घाट स्ट्रीट, कोलकाता-6 (प.बं.)

फोन : (033) 2259 9404, 098300 83319, फैक्स : (033) 2259 4049

e-mail : sevasansar@gmail.com, mediasevash@gmail.com

खबरें श्रेष्ठ

वर्द्धवान जिला कार्यालय

सेवा सदन, जी. टी. रोड, पानागढ़,

जिला : वर्द्धवान (प.बं.) भारत

अध्यक्षीय

नये साल में प्रेम की गंगा बहाते चलें संस्कार – सादगी जीवन का मूल

– डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया

सम्मेलन के ७८वें स्थापना दिवस पर आप सबको बधाइयाँ; नव वर्ष की शुभकामनाएँ एवं राम-राम, राधे-राधे!

अब से ७७ वर्ष पूर्व सन् १९३५ में हमारे दूरदर्शी पूर्वजों – स्व. ईश्वरदास जी जालान, स्व. रायबहादुर रामदेव जी चोखानी, स्व. काली प्रसाद जी खेतान, स्व. बद्रीदास जी गोयनका, स्व. घनश्यामदास जी बिड़ला आदि – ने समाज को चुनौती देती समस्याओं का संगठित रूप से सामना करने के लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की नींव रखी। उनके आदर्शों एवं समाजहित में सत्प्रयासों से प्रेरणा लेकर, उनके दिखाए मार्ग का अनुशरण करते हुए, स्थापना दिवस के इस पावन अवसर पर, हम उन पुनीत उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सतत् प्रयत्नशील रहने का संकल्प लें।

स्वतंत्रता-संग्राम से लेकर समाज सुधार के कार्यों यथा बाल-विवाह, पर्दाप्रथा, आडम्बर, फिजूलखर्ची जैसी कुरीतियों के विरुद्ध एवं प्रगतिशील विचारों यथा नारीशिक्षा, विधवा-विवाह, सादगी आदि के समर्थन में सम्मेलन ने महती भूमिका निभाई है। कुछ क्षेत्रों में हमें आशातीत सफलता भी मिली है। उदाहरण के लिए हम यह गर्व से कह सकते हैं कि बाल-विवाह, पर्दा प्रथा आदि से समाज प्रायः मुक्त हो चुका है। विधवा-विवाह को भी आज सामाजिक मान्यता प्राप्त है। सम्मेलन एक वैचारिक संस्था/विचार मंच है और हमें सदैव आत्म-मंथन से अपने कर्त्तव्य का निर्धारण कर प्रगति पथ पर बढ़ना है।

संगठन के क्षेत्र में अभी बहुत कार्य शेष है। हालाँकि नारीशक्ति के रूप में अखिल भारतवर्षीय महिला मारवाड़ी सम्मेलन एवं युवाशक्ति के रूप में अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच ने सम्मेलन के संगठन को सर्वांगीण बनाया है, मारवाड़ी समाज के जनसंख्या के दृष्टिकोण से हमारी सदस्य-संख्या आशानुरूप नहीं है। हमें प्रत्येक स्तर पर इसमें सुधार हेतु कदम उठाने होंगे। सशक्त संगठन के अभाव में इस युग में लक्ष्यप्राप्ति संभव नहीं – "संघशक्ति कलियुगे"। यहाँ मैं अपने हाल के बिहार दौरे की चर्चा करना भी प्रासंगिक समझता हूँ। अगस्त माह के आखिरी सप्ताह में मैंने बिहार का छः–दिवसीय व्यापक दौरा किया। बिहार के सभी नौ प्रमंडलों में स्थानीय पदाधिकारियों और विभिन्न शाखाओं के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं के साथ बैठकें आयोजित की गयीं। यह बताते हुए मुझे अपार हर्ष है कि सभी स्थानों पर कार्यकर्त्तागण उत्साह से लबरेज थे एवं बड़ी संख्या में उपस्थित थे, खासकर महिलाओं की उपस्थिति अत्यंत उत्साह-वर्धक थी।

एक और उल्लेखनीय विषय है – हमारा उच्च शिक्षा कोष। आज शिक्षा कोष में दो करोड़ से अधिक की राशि एकत्रित की जा चुकी है और लाखों रूपयों की राशि समाज के मेधावी और जरुरतमंद छात्र-छात्राओं को दी जा चुकी है। प्रादेशिक सम्मेलनों, युवामंच एवं महिला सम्मेलन की शाखाओं से हमें निरन्तर आवेदन पत्र प्राप्त हो रहे हैं और आवेदकों को यथासम्भव सहायता दी जा रही है।

एक बार और कहना चाहूंगा कि हमारे प्रयासों में शिथिलता कदापि न आने पाए और हम निरंतर आगे बढ़ते रहें। महाकवि स्व. डॉ. हरिवंश राय बच्चन को उद्धृत करता हूँ :

"अभी कहाँ विश्राम बदा, ये मूक निमंत्रण छलना है।
अरे अभी तो मीलों मुझको, मीलों मुझको चलना है॥"

सबको साथ में लेकर चलें, साथी नहीं मिले तो, अकेला चलें मंजिल पहुँचती है। हमारी मंजिल है संस्कार, पूरी सादगी – विचारों में, कार्यकर्म में। नकल नहीं करनी है। हम बन्दर हों तो नकल करें। विवाह, शादी, वर्षगांठ, धार्मिक आयोजन मे सादगी से ईश्वर के प्रेम में डूब जायें। डूबने से भगवान मिलेंगे जैसे गहरी डूबकी सागर में लगाने से मोती हासिल होता है।

नारीशक्ति प्रेम का श्रोत है। बेटियों से प्यार करें। बहुओं को प्रेम-आदर दें। उनको सभी क्षेत्रो में आगे बढ़ायें। आर्थिक व्यवस्था भी अच्छी करेंगी। कम खर्च करेंगे। सादगी में रहेंगी। मांगें कम हो जायेंगी। इसलिये भगवान विष्णु लक्ष्मी जी को आर्थिक व्यवस्था सौंप दिए। बेटियों को अच्छी शिक्षा दें। जीवन का सफर सुख-दुख का है। दुख के समय में उच्च शिक्षा ही सुख का साधन बनेगा।

सभी भाई-बहनें, युवा, प्रण करें कि अधिक से अधिक सदस्य बनायेंगे।

राष्ट्रीय सम्मेलन, महिला सम्मेलन, युवा मंच सब मिलकर काम करें। संगठन का झंडा संसार में लहरायें।

नये साल मे ईश्वर से प्रार्थना है कि गीता के उपदेश पर जीवन की आनन्दमय यात्रा हो। ★★★

WITH BEST COMPLIMENTS FROM

DINODIYA WELFARE TRUST

A Social Service Institution To Work For The Under-Privilege

Population of Rural & Tribal Areas.

4A, NEW ROAD, ALIPORE

KOLKATA – 700 027

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के
विगत अधिवेशन और पदाधिकारी

कार्यकाल	स्थान	अध्यक्ष	महामंत्री
१९३५-१९३८	कोलकाता	स्व. रायबहादुर रामदेव चोखानी (कोलकाता)	स्व. भूरामल अग्रवाल
१९३८-१९४०	कोलकाता	स्व. पद्मपत सिंघानिया (कानपुर)	स्व. ईश्वरदास जालान
१९४०-१९४१	कानपुर	स्व. बद्रीदास गोयनका (कोलकाता)	स्व. रामेश्वरलाल नोपानी
१९४१-१९४३	भागलपुर	स्व. रामदेव पोद्दार (मुम्बई)	स्व. रामेश्वरलाल नोपानी
१९४३-१९४७	दिल्ली	स्व. रामगोपाल मोहता (बीकानेर)	स्व. बजरंगलाल लाठ
१९४७-१९५४	मुम्बई	स्व. बृजलाल बियाणी (अकोला)	श्री रामेश्वरलाल केजड़ीवाल
			श्री नन्दकिशोर जालान
१९५४-१९६२	कोलकाता	स्व. सेठ गोविन्ददास मालपानी (जबलपुर)	श्री नन्दकिशोर जालान
१९६२-१९६६	कोलकाता	स्व. गजाधर सोमानी (मुम्बई)	स्व. रघुनाथप्रसाद खेतान
१९६६-१९७४	पूना	स्व. रामेश्वरलाल टांटिया (कोलकाता)	स्व. रामकृष्ण सरावगी
			स्व. दीपचन्द नाहटा
१९७४-१९७६	राँची	स्व. भंवरमल सिंघी (कोलकाता)	श्री नन्दकिशोर जालान
१९७६-१९७९	हैदराबाद	स्व. भंवरमल सिंघी (कोलकाता)	श्री नन्दकिशोर जालान
१९७९-१९८२	मुम्बई	स्व. मेजर रामप्रसाद पोद्दार (मुम्बई)	स्व. बजरंगलाल जाजू
१९८२-१९८६	जमशेदपुर	श्री नन्दकिशोर जालान	स्व. बजरंगलाल जाजू
			श्री रतन शाह
१९८६-१९८९	कानपुर	श्री हरिशंकर सिंघानिया (दिल्ली)	श्री रतन शाह
१९८९-१९८९	राँची	स्व. रामकृष्ण सरावगी (कोलकाता)	स्व. दुलीचंद अग्रवाल
१९८९-१९९३		श्री हनुमान प्रसाद सरावगी (कार्यवाहक अध्यक्ष)	
१९९३-१९९७	दिल्ली	श्री नन्दकिशोर जालान (कोलकाता)	स्व. दीपचंद नाहटा
१९९७-२००१	हैदराबाद	श्री नन्दकिशोर जालान (कोलकाता)	श्री सीताराम शर्मा
२००१-२००४	कानपुर	श्री मोहनलाल तुलस्यान (कोलकाता)	श्री सीताराम शर्मा
२००४-२००६	मुम्बई	श्री मोहनलाल तुलस्यान (कोलकाता)	श्री भानीराम सुरेका
२००६-२००८	भुवनेश्वर	श्री सीताराम शर्मा (कोलकाता)	श्री राम अवतार पोद्दार
२००८-२०१०	दिल्ली	श्री नन्दलाल रूँगटा (चाईबासा)	श्री राम अवतार पोद्दार
२०११-२०१३	पटना	श्री हरिप्रसाद कानोड़िया (कोलकाता)	श्री संतोष सराफ

INDIA'S MOST POPULAR VEST, NOW IN AN ALL-NEW AVATAR.
EXTRA SWEAT ABSORBENT
EXTRA-BROAD FOLDING
WIDE SHOULDERS
LONG-FIBRE COTTON
SUPERIOR WHITE FINISH
STYLISH BRANDING
www.rupa.co.in
RUPA
Frontline
PREMIUM VEST
NOW IN AN ATTRACTIVE 1PC. PACK
RUPA®
Frontline
YEH ARAM KA MAMLA HAI!
Join us on www.facebook.com/rupaknitwear | For franchise enquiry, please contact info@rupa.co.in

एक स्मरणीय वर्ष

– **सन्तोष सराफ,** राष्ट्रीय महामंत्री

सम्मेलन के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों एवं शुभेच्छुओं को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ७८वें स्थापना दिवस एवं नव वर्ष की बधाईयाँ देता हूँ हमारा पिछला स्थापना दिवस समारोह २५ दिसम्बर २०११ को विद्या मंदिर सभागार, कोलकाता में मनाया गया। समारोह का उद्घाटन तत्कालीन केन्द्रीय परिवार एवं स्वास्थ्य राज्यमंत्री श्री सुदीप बंद्योपाध्याय ने किया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में तत्कालीन केन्द्रीय शहरी विकास राज्यमंत्री श्री सौगत राय मौजूद थे। इसी दिन सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार डॉ० उदयवीर शर्मा को प्रदान किया गया। इस मौके पर भक्तिमय नाटक मीरा की अमर कहानी का मंचन किया गया। मैं इस समारोह के बाद के सम्मेलन के प्रमुख कार्यों का लेखा-जोखा यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

२६ दिसम्बर २०११ को हिन्दुस्तान क्लब में महिला उपसमिति सदस्यों की एक ऐतिहासिक बैठक उपसमिति अध्यक्ष श्रीमती विमला डोकानिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती स्मिता चेचानी एवं अन्य पदाधिकारीगण मौजूद थी। बैठक में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० हरिप्रसाद कानोड़िया की मौजूदगी में महिला सम्मेलन की ऐतिहासिक संयुक्त घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किये। संयुक्त घोषणा पत्र में कहा गया है कि दोनों संगठन अपने स्वतंत्र स्वरूप को बरकरार रखते हुए राष्ट्रीय प्रांतीय एवं स्थानीय स्तर पर मिल-जुलकर समाज सुधार के क्षेत्र में काम करेंगे।

७-८ जनवरी २०१२ को महाराष्ट्र के जालना में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन के राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० हरिप्रसाद कानोड़िया और संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका ने भाग लिया। डॉ० कानोड़िया ने महिला सम्मेलन के कार्यों को देखते हुए प्रोत्साहन स्वरूप २१ हजार रूपये की नगद राशि भेंट की।

११ जनवरी २०१२ को समाज सुधार उपसमिति सदस्यों की बैठक उपसमिति के अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर सराफ की अध्यक्षता में हुई। बैठक में विवाह समारोह में मद्यपान के सेवन पर चिंता प्रकट की गई एवं इसे किस तरह रोका जाए इस पर विचार-विमर्श हुआ। इस बैठक में यह निर्णय लिया गया कि महंगे एवं दिखावे वाले समारोह आयोजित करने वाले परिवार को पत्र देकर सादगी बरतने की अपील की जायेगी।

२६ जनवरी २०१२ को अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन में गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडोत्तोलन किया गया। झंडोत्तोलन सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने किया।

जनवरी २०१२ में श्री ओंकारमल अग्रवाल पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित किये गये। उन्होंने यह पदभार पूर्वोत्तर प्रांत के अध्यक्ष डॉ० श्यामसुन्दर हरलालका से ग्रहण किया। २५ मार्च २०१२ को गुवाहाटी में आयोजित पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की नवगठित कार्यकारिणी के पदाधिकारियों के पदभार-ग्रहण समारोह में राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ और संयुक्त महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी ने भाग लिया।

८ अप्रैल २०१२ को हरिद्वार में उत्तराखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की संयुक्त बैठक हुई। बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, श्री रमेशचंद गोपीकिशन बंग, श्री संतोष अग्रवाल, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका और श्री कैलाशपति तोदी, केन्द्रीय सम्मेलन के अन्य पदाधिकारियों, मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष श्री ललित गाँधी, अलग-अलग प्रांतों के अध्यक्ष एवं महामंत्री, अखिल भारतीय समिति के सदस्यों और राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्यों ने भाग लिया। इस बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने समाज से आडम्बर एवं दिखावे से बचने हेतु सादगी की क्रांति लाने का आह्वान किया। समाज सुधार के

भावी कार्यक्रम तय किये जाने के बारे में कई प्रस्ताव पारित किये गये। इस अवसर पर सम्मेलन की सदस्यता डायरेक्टरी (२०११-१३) का लोकार्पण भी किया गया।

सम्मेलन के भवन निर्माण उपसमिति की बैठक शनिवार १९ मई २०१२ को उपसमिति के चेयरमैन श्री द्वारका प्रसाद डाबड़ीवाल की अध्यक्षता में हुई। बैठक में कोलकाता नगर निगम के नये कानून के मुताबिक नये नक्शे की समीक्षा की गई उसे नगर निगम में जमा करने निर्णय लिया गया।

१ जून २०१२ को सम्मेलन के उच्च-शिक्षा कोष कमेटी के चेयरमैन श्री प्रहलाद राय अग्रवाल ने लेकटाउन निवासी श्री प्रियंक भूतोड़िया को उच्च शिक्षा हेतु २.५० लाख का ड्राफ्ट सौंपा। प्रियंक ग्रेटर नोएडा स्थित श्रद्धा इंस्टीच्यूट में दाँत के डाक्टरी की पढ़ाई कर रहा है। चार वर्ष के इस सत्र की पढ़ाई में यह उसका तीसरा वर्ष है। आर्थिक अभाव में वह इस परीक्षा में बैठने से वंचित रह जाता।

सम्मेलन के पदाधिकारीगण प्रियंक भूतोड़िया को ड्राफ्ट देते हुए

२४ जून २०१२ को केन्द्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री सुदीप बंद्योपाध्याय की अपील पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन व मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में बेलियाघाटा के पागलाडांगा में लगी आग से बेघर हुए लोगों के बीच राहत सामग्री का वितरण किया गया। श्री सुदीप बंद्योपाध्याय के अलावा विधायक परेश पाल, पार्षद जीवन साहा, सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन के ट्रस्टी श्री सीताराम शर्मा, सम्मेलन उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, पूर्व पार्षद ओमप्रकाश पोद्दार, संयुक्त महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी की उपस्थिति में आयोजित इस राहत सामग्री वितरण कार्यक्रम में आग से बेघर हुए लोगों को प्रेशर कूकर, मशहरी, बर्तन, कपड़े आदि दिए गये। इस मौके पर श्री बंद्योपाध्याय ने कहा कि मारवाड़ी समाज हमेशा जरूरतमंदों की सेवा हेतु तत्पर रहता है।

पिछले कुछ समय से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संगठन, सदस्यता, कार्यक्रम आदि को और अधिक सशक्त एवं प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता को देखते हुए एक लगातार विचार-विमर्श चल रहा था। इस परिप्रेक्ष्य में गत दिल्ली अधिवेशन (दिसम्बर २००८) एवं तत्पश्चात् सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति की बैठकों में एकल सदस्यता, एक संविधान, एक नाम विषयों पर विस्तृत एवं व्यापक चर्चा के बाद कतिपय महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। इसी प्रक्रिया में राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों की एक संयुक्त बैठक का आयोजन पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में २१ जुलाई २०१२ को साल्टलेक स्थित होटल हवेली में किया गया। बैठक की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया ने की। बैठक में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा एवं निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रूँगटा सहित कोलकाता से सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, बिहार से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामपाल अग्रवाल नूतन, महाराष्ट्र से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशचंद गोपीकिशन बंग, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ, संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन अध्यक्ष श्री विजय किशोरपुरिया, उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ, महाराष्ट्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन अध्यक्ष श्री जयप्रकाश मूंधड़ा, पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल, झारखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन अध्यक्ष श्री विनय सरावगी के अतिरिक्त बिहार के महामंत्री श्री राजेश बजाज, कोषाध्यक्ष श्री महेश जालान, उत्कल के महामंत्री श्री विजय केडिया, छत्तीसगढ़ के महामंत्री श्री घनश्याम पोद्दार, पश्चिम बंगाल के महामंत्री श्री विजय डोकानिया, महाराष्ट्र के महामंत्री श्री नेमीचन्द पोद्दार, मध्य प्रदेश के महामंत्री श्री कमलेश नाहटा, पूर्वोत्तर के महामंत्री श्री मधूसूदन सिकरिया, दिल्ली के महामंत्री श्री पवन कुमार गोयनका व अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे। सम्मेलन अधिक से अधिक

लोगों को जोड़ने हेतु अब १०० रुपये के सदस्य भी बनायेगा। इसके अलावा संरक्षक सदस्यता को दो श्रेणी में बाँटा गया है - विशिष्ट संरक्षक एवं संरक्षक।

राष्ट्रीय/प्रान्तीय पदाधिकारियों का सम्मेलन : २१-२२ जुलाई २०१२

२१ जुलाई २०१२ को राजनैतिक चेतना एवं भागीदारी विषयक संगोष्ठी का आयोजन होटल हवेली, कोलकाता में किया गया, जिसमें वक्ताओं ने समाज के लोगों से राजनीति में भागीदारी का आह्वान किया वहीं सम्मेलन से इस दिशा में कारगर कदम उठाने की अपील की।

१५ अगस्त २०१२ को अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडोत्तोलन किया गया। झंडोत्तोलन सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया ने किया।

सम्मेलन भवन में झंडोत्तोलन : १५ अगस्त २०१२

सम्मेलन व संगठन को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती प्रदान करने एवं समाज के अधिकाधिक लोगों को सम्मेलन से जोड़ने हेतु राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया ने २४ अगस्त २०१२ से ६ दिवसीय बिहार दौरा किया। इस दौरे में उनके साथ राष्ट्रीय महांत्री श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामपाल अग्रवाल नूतन बिहार प्रदेश अध्यक्ष श्री विजय किशोरपुरिया, सम्मेलन के संगठन उपसमिति के चेयरमेन व निवर्तमान बिहार प्रदेश अध्यक्ष श्री कमल नोपानी, संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री श्री कैलाशपति तोदी, प्रदेश महामंत्री श्री राजेश बजाज, सहित कई पदाधिकारी शामिल थे। दौरे के दौरान अध्यक्ष ने पटना, गया, दरभंगा, छपरा, भागलपुर, पूर्णिया, बड़हिया, मुंगेर, सहरसा, मुजफ्फरपुर सहित बिहार के सभी नौ प्रमंडलों का दौरा किया एवं स्थानीय शाखाओं के साथ भी बैठकें की।

मार्च २०१२ में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष स्वर्गीय बद्रीनाथ भीमसरिया के स्वर्गवास के बाद रिक्त हुए स्थान पर अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने बिहार से सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्य श्री रामपाल अग्रवाल नूतन को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत किया। श्री नूतन बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष रह चुके हैं।

अखिल भारतीय समिति की बैठक : २३ सितम्बर २०१२

२३ सितम्बर २०१२ को, मर्चेन्ट चैम्बर ऑफ कॉमर्स, कोलकाता में सम्मेलन के सर्वोच्च नीति निर्धारक मंडल अखिल भारतीय समिति की बैठक हुई। बैठक में एकल सदस्यता संबंधी ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित हुआ और केन्द्रीय संविधान में एतदर्थ एवं कतिपय अन्य संशोधन किए गए और उन्हें १ अक्टूबर २०१२ से प्रभावी करने का निर्णय लिया गया।

दूर्गापूजा के मौके पर १५ अक्टूबर २०१२ को कोलकाता के मैदान आउट्राम पार्क में राज्य के पर्यटन विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कोलकाता पतंग महोत्सव का आयोजन किया

गया। महोत्सव में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने एक प्रमुख प्रायोजक के रूप में शिरकत की। सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री राम अवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ, संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका एवं अन्य कार्यकर्ताओं ने समारोह में सक्रिय योगदान दिया। इसके अलावा पर्यटन विभाग द्वारा इस मौके पर चलायी गयी दो विशेष ट्रामों की सजावट की जिम्मा भी सम्मेलन ने उठाया। ट्रामों के दोनों तरफ सम्मेलन के बैनर लगे हुए थे। दोनों ट्रामें पूरे दिन कोलकाता की सड़कों पर आवागमन करती रही।

पतंग महोत्सव : १५ अक्टूबर २०१२

४ नवम्बर २०१२ को राँची में झारखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय समिति ने श्री राजकुमार केडिया को सत्र २०१२-१४ के लिए प्रांतीय अध्यक्ष निर्वाचित किया।

गत १ दिसम्बर २०१२ को ३७, शेक्सपीयर सरनी, कोलकाता में सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा पुरस्कार के नाम के चयन हेतु निर्णायक मंडल की बैठक श्री रतन शाह की अध्यक्षता में हुई। बैठक में प्रस्तावित नामों - श्री बैजनाथ पवार, श्री अर्जून सिंह शेखावत, डॉ. जेबा रशीद, श्री पदम मेहता तथा अम्बु शर्मा महमिया पर चर्चा हुई। विस्तृत चर्चा के बाद पुरस्कार हेतु श्री अम्बु शर्मा महमिया के नाम पर सर्वसम्मति से सहमति हुई। ★★★

मन

प्रियजन की मृत देह चिता पर
जलते देखकर, आदमी सोचता है
क्षण भंगुर जीवन के लिए वह
छल कपट, लूट खसोट, मिथ्या का
सहारा लेकर अपना घर भरने का
प्रयास क्यों कर रहा है?
धन और भौतिक सुख के संसाधन
यहीं रह जाते हैं तो संचय क्यों?
आदमी में वैराग्य भाव जागृत
हो उठता है, वह मन ही मन सोचता है
छोड़ देगा सारे गलत काम
झूठ नहीं बोलेगा, बेइमानी,
छल कपट, धोखा नहीं करेगा
ज्यों ज्यों चिता की लपटें
ऊँची उठती जाती हैं,
आदमी का मन पवित्र होता जाता है
बार बार पूर्व में किये बुरे कर्मों पर
पश्चाताप करता है और भविष्य में
सदाचारी जीवन जीने का प्रण करता है
लेकिन श्मशान से बाहर आने पर
ज्यों ज्यों श्मशान से दूर होता जाता है
भौतिक सुख के साधन नजर आने पर
कुछ क्षण पहले मन में किये प्रण और
"जीवन क्षणभंगुर है" को भूल जाता है।

– किशन लाल शर्मा
आगरा (उ. प्र.)

सम्मेलन के प्राण-पुरुष स्व. ईश्वरदास जालान

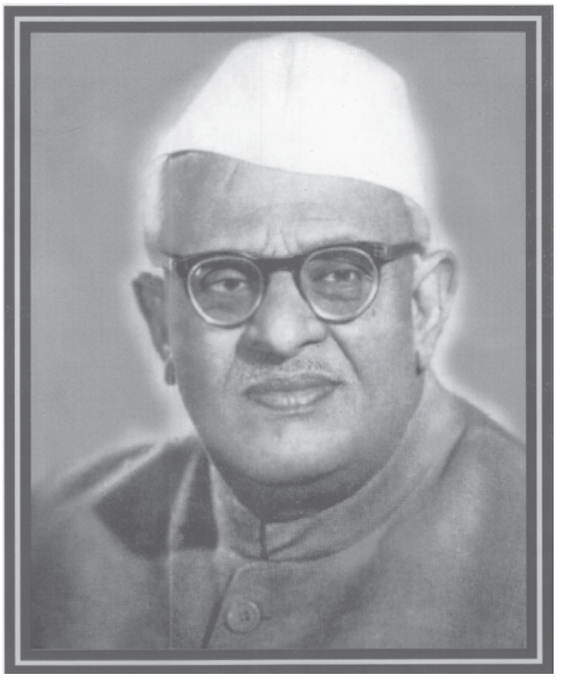

दैनन्दिन जीवन में जैसी विलासिता और अनैतिकता आ गयी है, वह समाज के लिए घातक होगी। मद्यपान, आमिष भोजन, अनैतिकता, विलासिता जितनी बढ़ गयी है, उन्हें हटाये या नियंत्रित किये बिना समाज बच नहीं सकता।... विवाह-शादियों में हमारे यहाँ जो अपव्यय और प्रदर्शन होते हैं, वे मारवाड़ी समाज को दूसरों की दृष्टि में गिराते हैं। जहाँ करोड़ो मनुष्य दरिद्रता के दुखों को भोग रहे हों, जहाँ सरकार गरीबो को दूर करने का भगीरथ प्रयत्न कर रही हो, वहाँ पर इस प्रकार के प्रदर्शन और अपव्यय शोभा नहीं देते।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

१९३५-१९३८

भूतपूर्व अध्यक्ष
स्व. रायबहादुर रामदेव चोखानी

अभी तक समाज की विभिन्न शाखाओं का जो संगठन हुआ है, श्रृंखलित न होने के कारण उसके द्वारा हम देश के सार्वजनिक जीवन पर प्रभाव डालने में तथा उसके सभी क्षेत्रों में अन्यान्य समाजों के साथ अपनी सत्ता स्थापित करने में समर्थ नहीं हुए हैं। इस प्रकार के संगठन की आवश्यकता जो हम इस समय विशेष रूप से अनुभव कर रहे हैं इसका कारण है देश की स्थिति में परिवर्तन। आज समाज के वृद्ध एवं युवक दल में, सनातनी और सुधारक में जो इतना पार्थक्य दीख रहा है और दोनों एक दूसरे को कोसों दूर समझते हैं, उसका कारण भ्रम ही है। यह भ्रम दोनों का ही एक समान शत्रु है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

१९३८-१९४०

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. पद्मपत सिंघानिया

समाज के सुधार की समस्या वर्षों से हमारे सामने है और हम उस पर विचार कर रहे हैं। किन्तु यह विषय इतना विवादास्पद है कि हमने आपस में कहीं तर्क-वितर्क किया भी है, पर खास ध्यान आकर्षित करना उचित नहीं प्रतीत होता। मैं उसे भविष्य के लिए छोड़ देता हूँ किन्तु यह चेतावनी दे देना भी जरूरी समझता हूँ कि हम चाहें अथवा नहीं, सामाजिक समस्या का निकट भविष्य में सामना करना ही पड़ेगा। आज नहीं तो कल हमको एकत्र होकर अपने समाज के सम्पूर्ण संगठन की योजना और सामाजिक पहेलियों का निदान करना ही पड़ेगा।

१९४०-१९४१

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. बद्रीदास गोयनका

मारवाड़ी समाज के लिए व्यापारिक शिक्षा का प्रश्न सबसे अधिक महत्व का है। सामाजिक नवयुवक आधुनिक व्यापार की जरुरतों के माफिक शिक्षा प्राप्त कर सकें, उसके लिए व्यावहारिक और किताबी दोनों प्रकार की व्यापारिक शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है जिसको प्राप्त कर हमारे नवयुवक अपने जीवन में योग्य साबित हो सकें। खेद है कि अब तक इस विषय में कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया गया है और अभी तक इस विषय का अभाव उसी तरह बना हुआ है जितना दस वर्ष पहले था।

१९४१-१९४३

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. रामदेव पोद्दार

हमारे समाज में गमी, ब्याह और छोटे-छोटे प्रसंगों में धन का अपव्यय करने की कुप्रथा है। इससे सभी भाइयों को कष्ट तथा धन-ह्रास और समय नष्ट होता है। अब युग-परिवर्तन हो गया है। इससे हमारी आर्थिक स्थिति पर गहरा असर पड़ता है, इसलिए इन अवसरों पर फिजूलखर्च नहीं करना चाहिए। जनता का ध्यान इधर जा रहा है और आशा है कि यह कुप्रथा भी शीघ्र ही दूर हो जाएगी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

१९४३-१९४७

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. रामगोपाल जी मोहता

आपस की हमारी फूट पर हमने धर्म की छाप लगा ली है और इस तरह के धार्मिक अन्ध-विश्वासों ने हमको स्वतंत्रता से विचार करने योग्य भी नहीं रखा है। धर्मभीरु होना हम अपने लिए गौरव की बात समझते हैं। धार्मिक और सामाजिक रीति-रिवाजों और रुढ़ियों एवं नाना प्रकार के बन्धनों ने हमें मनुष्यता से गिरा दिया है।

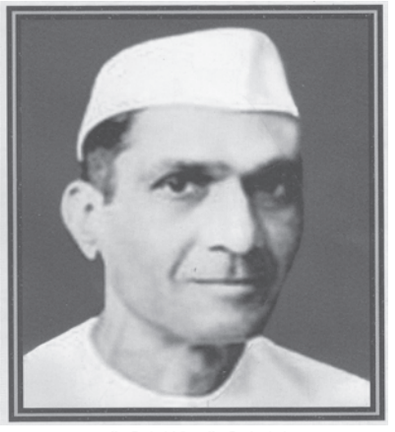

१९४७-१९५४

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. बृजलाल बियाणी

किसी भी समूह को अपना भावी कर्त्तव्य निश्चित करने के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह अपनी प्राचीन अवस्था को समझे, वर्तमान का अवलोकन करे और भविष्य की ओर देख अपने कर्त्तव्य का निश्चय करे। मारवाड़ी सम्मेलन को और उसके सारे कार्य को उसी निगाह से देखना चाहता हूँ। गुणों को देखने के साथ ही अवगुणों का अवलोकन भी जीवन में उपयोगी होता हैं, इस तत्व का भी मुझे स्मरण है।

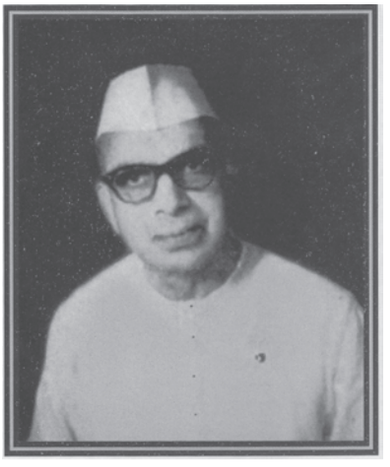

१९५४-१९६२

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. सेठ गोविन्द दास मालपानी

हमें बदलते हुए समय के साथ चलना होगा। आज के युग में पर्दा और दहेज जैसी कुप्रथाएँ सहन नहीं की जा सकतीं। युवकों पर तो इस मानसिक और व्यवस्थात्मक क्रान्ति को लाने का मुख्य भार होगा ही। उन्हीं को तो आज की विरासत संभालनी है और उस विरासत में उनको मिलेगी आज की सम्पति और आज की समस्याएँ। यदि वे केवल आज की सम्पति की ही ओर टकटकी लगाए रहें, तो वे न तो उसे बचा पाएंगे और न अपने को। उन्हें समस्याओं को भी अच्छी तरह से देखना तथा समझना है और उनको सुलझाने के लिए कटिबद्ध हो जाना है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

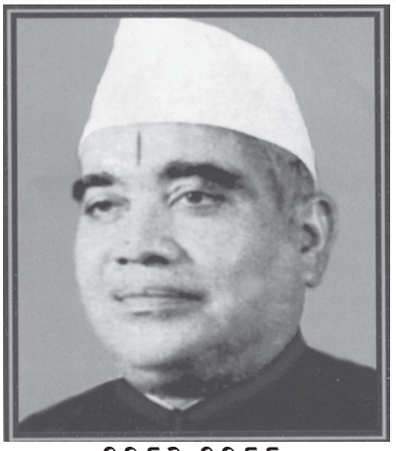

१९६२-१९६६

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. गजाधर सोमानी

विवाहों में आज भी हम अपने वैभव का इतना प्रदर्शन करते हैं कि दूसरों की दृष्टि में हम खटकने लगते हैं। ..... पर्दाप्रथा से महिला समाज को छुटकारा दिलाने में सम्मेलन ने बहुत बड़ा काम किया है और अब सामाजिक चेतना का इसमें संचार करना समाज के लिए आवश्यक हो गया है। .... दहेज की बढ़ती हुई बीमारी क्षय रोग की तरह हमारे गृहस्थ जीवन का विनाश कर रही है और महिलाओं की प्रतिष्ठा के तो यह सर्वथा प्रतिकूल है।

१९६६-१९७४

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. रामेश्वरलाल टांटिया

सामाजिक सुधारों के अलावा देश-व्यापी राष्ट्रीय प्रवृतियों में हिस्सा लेना भी सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य रहा है। हमारे समाज का विस्तार देश के कोने-कोने में हुआ है और हमें सन्तोष है कि इस समाज के लोग जिस भी राज्य या प्रांत में जा बसे हैं, वहाँ के नागरिक और सामाजिक जीवन में पूरी तरह हिस्सा ले रहे हैं तथा स्थानीय प्रवृत्तियों में पूरा सहयोग दे रहे हैं जो कि सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति का प्रतीक है। मारवाड़ी समाज की किसी भी संस्था ने अपने लिए विशेष संरक्षण या अधिकार की मांग नहीं की बल्कि सारे देश व राष्ट्र के साथ तन्मय होकर चलने का प्रयत्न किया।

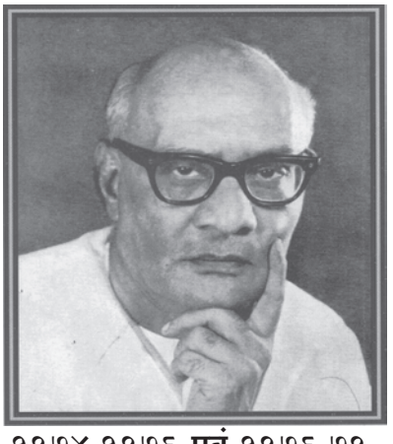

१९७४-१९७६ एवं १९७६-७९

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. भंवरमल सिंघी

समाज के भावी कर्णधारों को अपने अपने प्रान्तवासियों के साथ समरस होकर एक लक्ष्य बनाकर, स्वस्थ सार्वजनिक जीवन में आधिकाधिक भाग लेना चाहिए। इसके पीछे हमारी जातिगत स्वार्थ की नहीं, राष्ट्रीय संभावनाओं के प्रतिफलन की ओर उत्तरदायित्वपूर्ण सहयोग की भावना होनी चाहिए।... दहेज की वर्तमान स्थिति के विरुद्ध दृढ़प्रतिज्ञ आदर्शवान युवकों को प्रतिज्ञापूर्वक अपने आचरण का उदाहरण रखते हुए सक्रिय आन्दोलन करना चाहिए। जब ऐसा होने लगेगा, तभी संभवतः इस राक्षसी प्रथा का समूल नाश होगा।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

१९७९-१९८२

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. मेजर रामप्रसाद पोद्दार

वधुओं को दहेज के अभाव में जलाना, तलाक, भोंडा दिखावा तथा आचरणहीनता बराबर बढ़ रही है। वधुओं और बेटियों में फर्क समझनेवाला मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं।.... समाज में व्यक्तिवाद घर किए हुए है। समष्टिवाद बहुत कम दिखलाई पड़ता है। समाज के संगठन की आवश्यकता दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। मैं चाहता हूँ कि इस दिशा में सम्मेलन की ओर से ठोस कदम उठाए जाएँ जिससे संगठन की भावना जोर पकड़े और सारे भारत के मारवाड़ी बन्धु सम्मेलन के द्वारा अपनी आवाज बुलंद कर सकें।

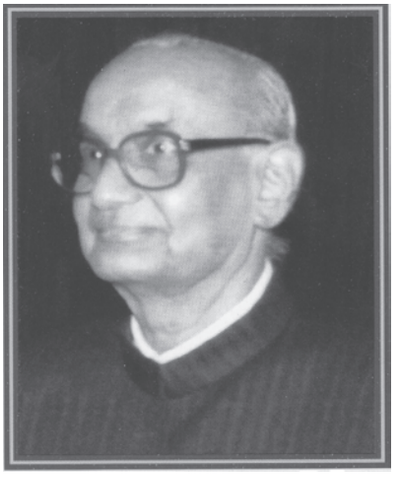

१९८२-१९८६, ९३-९७ एवं ९७-२००१

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. नन्दकिशोर जालान

यदि हमें अपने युवकों की उर्जा का लाभ लेना है तो हमें अपनी सार्वजनिक संस्थाओं और उनके क्रिया-कलापों को आधुनिकता का जामा पहनाना होगा, जिनसे हमारा युवक उनसे जुड़ सके, अपना वर्चस्व दिखा सके और पिछले बीते युग से कहीं शक्तिशाली व प्रभावोत्पादक रूप से नवनिर्माण व सामाजिक सुधारों की गंगा बहा सके।... दहेज-रूपी विष का जितना इलाज किया गया, यह विष उतनी ही तेजी से बढ़ता गया। अब हमें यह नारा देना होगा कि हर शादी मन्दिरों में, धर्म-स्थानों में हो और केवल नजदीकी रिश्तेदारों की उपस्थिति में हो।

१९८६-१९८९

भूतपूर्व अध्यक्ष श्री हरिशंकर सिंघानिया

भारतीय परम्परा त्याग, बलिदान, सेवा एवं प्रेम पर आधारित रही है। हमने इतिहास में उनलोगों की पूजा की है जिन्होंने अपने स्वार्थ को परहित के सामने गौण समझा है। हमारे पूर्वजों की इस धरोहर को अक्षुण्ण रखते हुए सर्वांगीण विकास करना है। कोई चीज पुरानी होने से ही त्याज्य नहीं हो जाती बल्कि उसका सही मूल्यांकन कर हमें एक स्वस्थ समाज की रचना करनी है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

१९८९-१९९३

भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. रामकृष्ण सरावगी

जो सामाजिक संस्थाएँ सुधार आन्दोलनों की आवश्यकता नहीं समझतीं, वे संस्थायें कभी भी जीवित नहीं रह सकतीं और जो कार्यकर्त्ता सामाजिक सुधारों को अपने जीवन में नहीं उतार सकते, वे न तो समाज को नेतृत्व दे सकते हैं और न उनके प्रति श्रद्धा और आदर हो सकता है। कथनी और करनी का अन्तर मिटाने का कार्य कार्यकर्त्ता को स्वयं से शुरु करना पड़ता है और तब समाज उसके उदाहरण से सीख लेता है। यह सही है कि सामाजिक कार्यकर्त्ता बनना निस्संदेह बड़ा कठिन है।

भूतपूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान

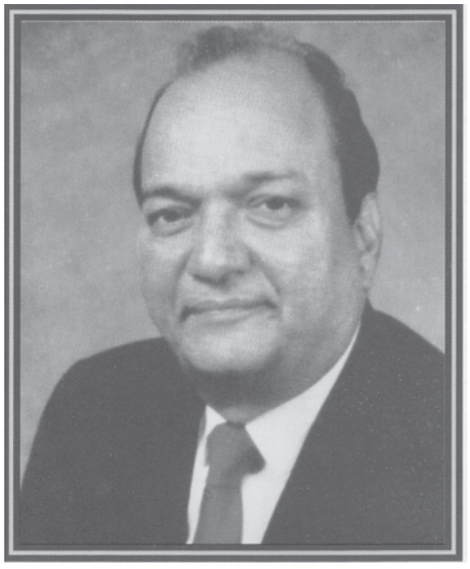

२००१-०४ एवं २००४-०६

विगत वर्षों में सामाजिक-राजनैतिक क्षेत्र में नैतकता का पतन बड़ी तेजी से हुआ है। नेतृत्व का उद्देश्य समाज और राष्ट्र के उत्थान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करना न होकर सिर्फ अपनी जेब भरना एवं अपने को स्थापित करना हो गया है। स्वार्थ की अंधी गली में दौड़ लगाते हुए नेतृत्व को इस बात का ख्याल रहा ही नहीं कि उनके इस आचरण का प्रभाव आनेवाली पीढ़ियों पर भी पड़ेगा। .... अतएव यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि समाज के नेतृत्व में आमूल परिवर्तन हो और कमियों-खामियों की व्याख्या के साथ-साथ सामाजिक आधार को दृढ़ से दृढ़तर बनाने की कोशिशें तेज से तेजतर हों। नई पीढ़ी को, नई सोच के लोगों को भी इस मुहिम में अग्रिम पंक्ति में रखा जाना चाहिए ताकि समाज की सभी कड़ियों में सामंजस्य बनाने में सहूलियत हो।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष

भूतपूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा

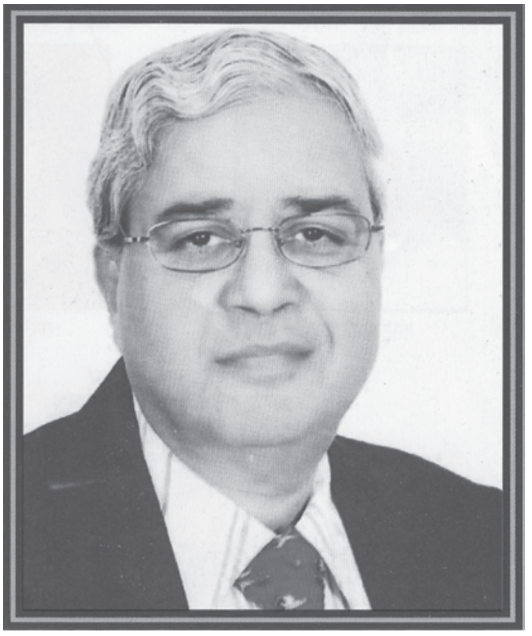

२००६-२००८

मेरी मान्यता है कि मारवाड़ी सम्मेलन को विचार मंच से आगे बढ़कर एक सक्रिय वैचारिक आंदोलन का रूप लेना चाहिए। समाज-सुधार एवं समरसता हमारा नास हो। हमें दहेज-दिखावा, नारी-प्रताड़ना, आडम्बर, फिजूलखर्ची का सक्रिय विरोध करना है। मारवाड़ी सम्मेलन की केन्द्रीय, प्रांतीय एवं जिला स्तर पर सांगठनिक क्षमता का विकास कर इसे सही मायने में मारवाड़ी समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्थापित करना है। सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास के लिए मारवाड़ी सम्मेलन में नयी चेतना जागृत करनी है। मारवाड़ी समाज की नई, आधुनिक प्रतिभा को देश के सम्मुख प्रस्तुत करना है। साहित्य, संस्कृति, कला, राजनीति, ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र में उभरती प्रतिभाओं की परिचिति के साथ-साथ उन्हें मान्यता एवं सम्मान प्रदान कर समाज को नया स्वरूप एवं नया व्यक्तित्व देना है।

भूतपूर्व अध्यक्ष श्री नंदलाल रूँगटा

२००८-२०१०

आज समाज शिक्षित हुआ है। शिक्षित समाज का सपना हम भी देख रहे हैं, परन्तु साथ ही हमें यह देखना होगा कि इस शिक्षा से समाज में व्याप्त कुरीतियों को न सिर्फ समाप्त किया जा सके, इसके साथ-साथ हम हमारी सामाजिक धरोहर जैसे शाकाहारी, धार्मिक-सामाजिक प्रवृति में किस तरह विकास ला सकें।... धन के फिजूलखर्ची ने समाज के एक वर्ग को अंधा बना दिया है। हम एक दूसरे से कम नहीं होकर एक दूसरे से आगे निकलने के प्रयास में समाज की संस्कारों की संपदा कहीं समाप्त न कर दें। इस पर हमें सोचने की जरूरत है कि इस प्रकार की प्रवृत्ति को किस तरह बढ़ने से रोका जा सके। सम्मेलन इस दिशा में पहल करने के लिए सदा तत्पर रहेगा।

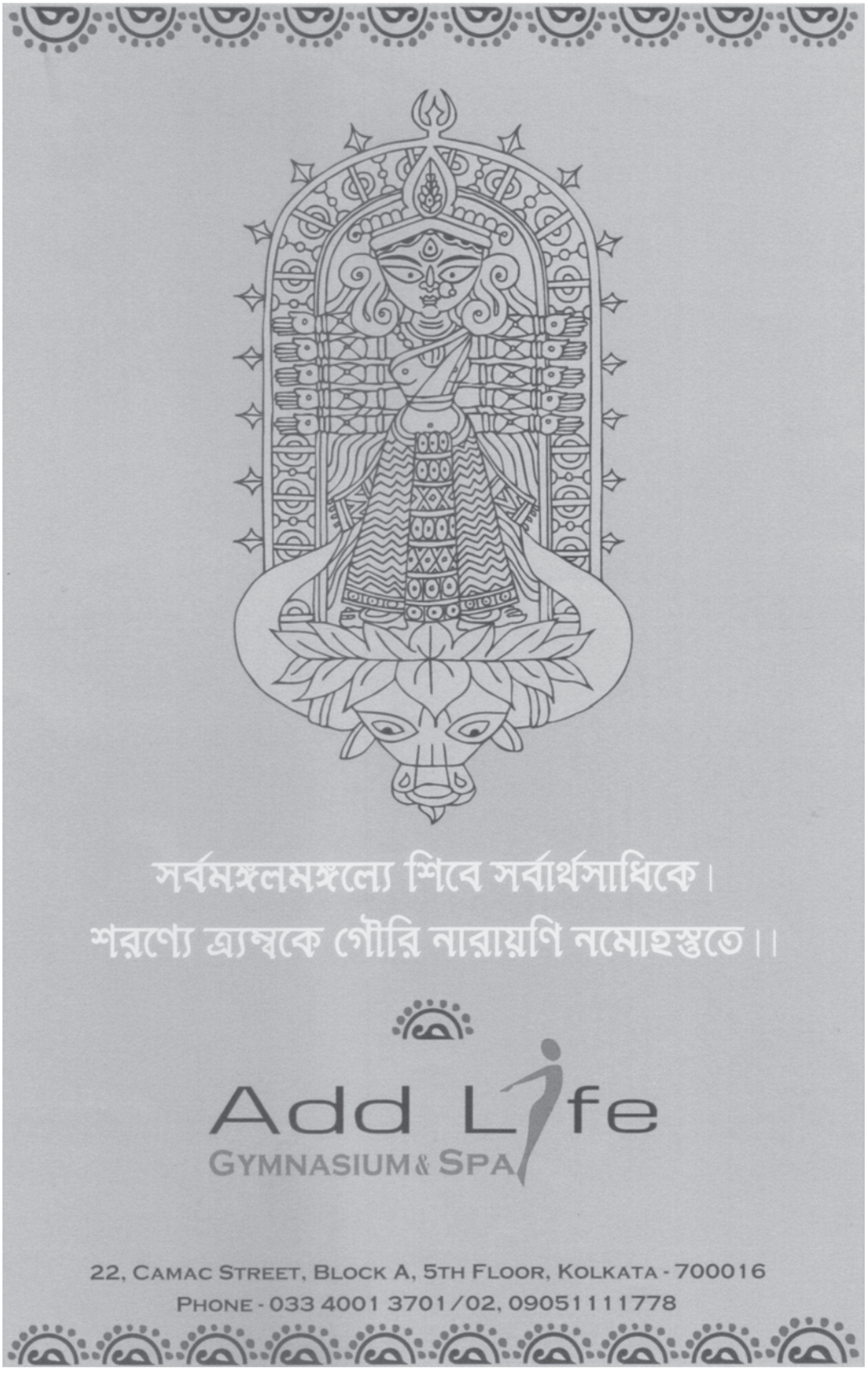
সর্বমঙ্গলমঙ্গল্যে শিবে সর্বার্থসাধিকে।
শরণ্যে ত্র্যম্বকে গৌরি নারায়ণি নমোহস্তুতে।।
Add Life
GYMNASIUM & SPA
22, CAMAC STREET, BLOCK A, 5TH FLOOR, KOLKATA - 700016
PHONE - 033 4001 3701/02, 09051111778

वर्तमान राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति

राष्ट्रीय पदाधिकारीगण

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया	राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री राम अवतार पोद्दार	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री रामपाल अग्रवाल 'नूतन'	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री संतोष अग्रवाल	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री राम कुमार गोयल	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री रमेशचंद गोपीकिशन बंग	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री संतोष सराफ	राष्ट्रीय महामंत्री
श्री संजय हरलालका	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
श्री कैलाशपति तोदी	राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री
श्री आत्माराम सोंथलिया	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री

अध्यक्ष	महामंत्री
श्री हरिशंकर सिंघानिया	श्री रतन शाह
श्री मोहनलाल तुलस्यान	श्री सीताराम शर्मा
श्री सीताराम शर्मा	श्री भानीराम सुरेका
श्री नन्दलाल रूँगटा	श्री राम अवतार पोद्दार

कार्यकारिणी समिति के सदस्यगण

श्री द्वारिका प्रसाद डाबड़ीवाल	श्री हरि प्रसाद बुधिया
श्री बाबु लाल धनानीया	श्री अतुल चुरीवाल
श्री श्रवण कुमार तोदी	श्री नवल जोशी
श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल	श्री मामराज अग्रवाल
श्री युगल किशोर जैथलिया	श्री सज्जन भजनका
श्री चिरंजी लाल अग्रवाल	श्री बाल किशन माहेश्वरी
श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका	श्री श्यामलाल डोकानिया
श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया	श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल
श्री ओम प्रकाश पोद्दार	श्री पी. डी. तुलस्यान
श्री श्याम सुन्दर बेरीवाल	श्री आर. एस. फ्लोर
श्री हरि किशन चौधरी	श्री बलराम सुल्तानिया
श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल	श्री नारायण प्रसाद माधोगढ़िया
श्री घनश्याम दास अग्रवाल	श्री बसंत मित्तल

कार्यकारिणी समिति के सदस्यगण

श्री जगदीश प्रसाद चौधरी
श्री विश्वनाथ मारोठिया
श्रीमती उमा सराफ
श्री रामनाथ झुनझुनवाला
श्री अनिल कुमार जाजोदिया
श्री रवीन्द्र चमड़िया
श्री रमेश कुमार गर्ग
श्रीमती रचना नाहटा
डॉ. जुगल किशोर सराफ
श्री श्याम सुन्दर सोनी
श्री वीरेन्द्र प्रकाश धोका
श्री नंद किशोर अग्रवाल
श्री बिजय कुमार मंगलुनिया

कार्यकारिणी समिति के स्थायी विशिष्ट आमंत्रित

श्री विश्वनाथ केडिया
श्री नरेन प्रसाद डालमिया
श्री राजेन्द्र कुमार बच्छावत
श्री धरमचंद अग्रवाल
श्री विश्वनाथ चांडक
श्री बंसत कुमार नाहटा
श्री ईश्वरी प्रसाद टाँटीया
श्रीमती कुमकुम अग्रवाल
श्री सज्जन कुमार तुलस्यान
श्री सूर्यकरन सासवा
श्री सूर्य प्रकाश बागला
श्री हर्षवर्द्धन नेवटीया
श्री साधु राम बंसल
श्री बालकिशन दास मुंधड़ा
श्री कमल कुमार दुग्गड़
श्री चम्पालाल सरावगी
श्री महेश कुमार सहरीया
श्री चन्दूलाल अग्रवाल
श्री बनवारीलाल शर्मा (सोती)
श्री शम्भु चौधरी
श्री गोविन्द प्रसाद केजरीवाल

प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री

अध्यक्ष		महामंत्री
श्री नरेश चन्द्र विजयवर्गीय	**आंध्र प्रदेश**	श्री रामपाल अटल
श्री विजय कुमार किशोरपुरिया	**बिहार**	श्री राजेश बजाज
श्री विनय सरावगी	**झारखण्ड**	श्री कमल कुमार केडिया
श्री जी. एन. पुरोहित	**मध्यप्रदेश**	श्री कमलेश कुमार नाहटा
श्री जयप्रकाश शंकरलाल मुंधड़ा	**महाराष्ट्र**	श्री नेमीचंद पोद्दार
श्री ओंकारमल अग्रवाल	**पुर्वोत्तर**	श्री मधुसुदन सिकरिया
श्री कैलाश मल दुग्गड़	**तमिलनाडु**	श्री विजय कुमार गोयल
श्री विजय गुजरवासिया (अग्रवाल)	**प० बंगाल**	श्री विजय डोकानिया
श्री राजेश कसेरा	**उत्तर प्रदेश**	श्री आकाश गोयनका
श्री पन्ना लाल बैद्य	**दिल्ली**	श्री पवन कुमार गोयनका
श्री सुरेन्द्र लाठ	**उत्कल**	श्री विजय केडिया

प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री

अध्यक्ष		महामंत्री
श्री रामानंद अग्रवाल	**छत्तीसगढ़**	श्री घनश्याम पोद्दार
श्री नारायण अग्रवाल	**कर्नाटक**	श्री देवेन्द्र कुमार सोनी
श्री रंजीत कुमार जलान	**उत्तराखण्ड**	श्री रंजीत कुमार टिबरेवाल

युवा मंच

श्री ललित एस. गांधी	राष्ट्रीय सभापति
श्री संदीप डी. भंडारी	राष्ट्रीय महामंत्री

महिला सम्मेलन

श्रीमती लता अग्रवाल	राष्ट्रीय सभापति
श्रीमती वीणा खिरवाल	राष्ट्रीय महामंत्री

स्थायी समिति

श्री विश्वनाथ सराफ	श्री दिलीप कुमार गोयनका
श्री जयगोविन्द इन्दोरिया	श्री ओम लड़िया
श्री राम निवास शर्मा	श्री राजेश कुमार पोद्दार
श्री मुकुन्द राठी	श्री प्रदीप डेडीया
श्री मनोज कुमार अग्रवाल	श्री ओम प्रकाश अग्रवाल
श्री सुभाष मुरारका	श्री कांतिचंद गोयनका
श्री विनोद कुमार सराफ	श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा
श्री कृष्ण कुमार डोकानिया	श्री दुर्गामल सुरेका
श्री दिनेश कुमार जैन	श्री प्रेमचंद सुरेलिया
श्री बिष्णु पोद्दार	श्री प्रमोद कुमार गोयनका
श्री प्रवीण कुमार बैद्य	श्री मनमोहन गारोडीया

उप-समितियों के चैयरमैन

श्री सिताराम शर्मा, चेयरमैन, सलाहकार उपसमिति
श्री द्वारिका प्रसाद डाबड़ीवाल, चेयरमैन, भवन निर्माण उपसमिति
श्री रवीन्द्र लड़िया, चेयरमैन, डायरेक्टरी उपसमिति
श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल, चेयरमैन, उच्च-शिक्षा उपसमिति
श्री विश्वनाथ भुवालका, चेयरमैन, सदस्यता उपसमति
श्री रतन शाह, चेयरमैन, राजस्थानी भाषा उपसमिति
डॉ. जुगल किशोर सराफ, चेयरमैन, समाज सुधार उपसमिति
श्री कमल नोपानी, चेयरमैन, संगठन उपसमिति
श्रीमती बिमला डोकानिया, चेयरमैन, महिला उपसमिति
श्री कैलाशपति तोदी, संयोजक, युवा उपसमिति
(**सभी राष्ट्रीय पदाधिकारीगण इस समिति के पदाधिकारी हैं।**)

NSI (INDIA) LIMITED

(INDIA) LTD.

An ISO 9001 Certified Company

Beltala, Chamrail, Howrah- 711114
Phone: (03212) 246912, 246016, 246032
Fax: (03212) 246291

Corporate Office:
46, M.A.K Azad Road, Howrah- 711 101, India
Phone: (033) 2666-2581/2585,
Fax: (033) 2666 2582
Email: nsi@nsilimited.com
Website: www.nsilimited.com

NIF (UK) LTD.

Unit 4, Suite- 15A, Orwell House, Ferry Lane
Felixtowe, Suffolk, IP 11 3QR. U.K
Phone: +44 (1394) 675504
Fax: +44 (1394) 675507
Email: nifuk@nifuk.com
Website: www.nifuk.com

NSI MIDDLE EAST TRADING LLC.

Behind Emirates NBD Bank, Alfahidi Street, Bur Dubai
Mobile: +971 566250336
Email: tyr@nsime.com

- Narayan Pd. Madhogaria

हिन्दुत्व – चिरंतन, वैश्विक सहिष्णुता, स्वीकार्यता एवं औचित्य-बोध

– डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया

स्वामी विवेकानन्द, एक सच्चे सन्यासी, एक महान सुधारक, एक उपदेशक राष्ट्रवादी, एक प्रदीप्त आत्मा, ने साढ़े नौ साल तक एक सक्रिय सुधारवादी जीवन जिया। उन्होंने सोमवार, ११ सितम्बर १८९३ को शिकागो (अमेरिका) के आर्ट इन्स्टीट्यूट में आयोजित 'World Parliament of Religions' में उपस्थित चार हजार लोगों धर्म-प्रतिनिधियों के करतल निनाद के मध्य हिन्दुत्व के विस्तार का उद्घोष किया।

'अमेरिका के भाइयों और बहनों' को सम्बोधित करते हुए और सभी आयोजकों को धन्यवाद देते हुए, सभी धर्मों की जननी और करोड़ो हिन्दुओं के सभी वर्गों की ओर से स्वामी विवेकानन्द ने सिहनाद किया, "मुझे गर्व है कि मैं 'हिन्दुत्व' नामक एक ऐसे धर्म से संबंधित हूँ जिसने विश्व को सहिष्णुता एवं स्वीकार्यता का पाठ पढ़ाया है। मैं सभी धर्मों को सत्य मानते हैं। मेरे देश ने पारसी सरीखे सभी देशों से आए सताए लोगों और शरणार्थियों को शरण दिया है।

हिन्दु धर्म जीवित धर्मों में सबसे पुराना, अनादि, अनंत और सनातन है। यह दैवी सत्य के प्रकटीकरण एवं ज्ञान पर आधारित हैं। अनेक ज्ञानी ऋषी-साधु-संत जो सेवा द्वारा ज्ञान-प्राप्ति के पथ पर अग्रसर थे; जिन्होंने परम पिता परमेश्वर से एकाकार होने का प्रयत्न किया और उनसे वार्तालाप किया – हिन्दू धर्म उनकी शिक्षाओं का निचोड़ है।

फारसी भाषा में, जो लोग 'सिन्धु' नदी के आसपास रहते थे वे 'सिन्धु' कहलाए – बाद में 'हिन्दू'। सभी ज्ञान एवं चारों वेद 'स्तुति' या 'स्मृति' के माध्यम से वर्णित हुए। इनके अतिरिक्त और धर्मग्रन्थ थे – रामायण, महाभारत, वेदान्त, पुराण, उपनिषद एवं भगवत गीता।

वर्षों तक, आध्यात्मिक निधियों और विधियों की खोज महात्माओं ने उसी प्रकार की जैसे गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत इसके प्रकाश में आने के पूर्व अस्तित्व में था और यदि पूरी मनुष्य जाति उसे भूल जाए तब भी अस्तित्व में रहेगा। आध्यात्मिक ब्राह्मांड को नियंत्रित करनेवाले नियम भी ऐसे ही हैं। दो आत्माओं के बीच नैतिक और आध्यात्मिक संबंध और आत्मा और परमात्मा के बीच संबंध हमेशा से थे और सदैव रहेंगे।

वेद हमें सिखाते हैं कि श्रृष्टि का आदि या अंत नहीं होता। विज्ञान ने यह प्रमाणित किया है कि ब्राह्मांडीय उर्जा का योग सदैव स्थिर रहता है। इससे यह निष्कर्ष निकाल जा सकता है कि श्रृष्टि शाश्वत है।

वेदों ने घोषणा की, "मैं शरीर में स्थित एक आत्मा हूँ, मैं शरीर नहीं हूँ। शरीर नष्ट होगा लेकिन मैं नष्ट नहीं होऊँगा। मैं सदैव जीवित रहूंगा। मेरा एक इतिहास भी है। आत्मा की रचना नहीं की गयी थी क्यों कि जिसकी रचना होती है उसका भविष्य में विध्वंस निश्चित है।" यदि उनकी रचना हुई थी, क्यों एक न्यायप्रिय और दयालु ईश्वर ने एक को दुःखी और दूसरे को खुश बनाया। जरूर उस मनुष्य के जन्म के पूर्व के कारण रहे होंगे, उसके पूर्व कर्म रहे होंगे, जिनसे वह एक दयनीय या खुश अवस्था में पहुँचा। एक आत्मा जिसका सहज लगाव के नियमों के कारण किसी खास दिशा में झुकाव हो, ऐसे ही शरीर धारण करेगी जो उसके लगाव के क्षेत्र के लिए सर्वश्रेष्ठ उपकरण हो। यह विज्ञान के नियमों से भी सम्मत है जो 'आदत से' सभी की व्याख्या करती है। आदत पुनरावृति सेपैदा होती है। इस तरह, हिन्दू ये मानते हैं कि वे आत्मा है। भगवान कृष्ण ने गीता में कहा, "उसे तलवार काट नहीं सकती, उसे आग जला नहीं सकती, जिसे पानी डूबा नहीं सकता, जिसे हवा सुखा नहीं सकती।"

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैन क्लेदन्त्यापो न शोषयति मारुतः।२-२३।।
देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तर प्राप्ति धीर्रस्तन्त्र न मुद्यति।२-१३।।

हिन्दू मानते हैं कि प्रत्येक आत्मा एक वृत्त है जिसकी कोई सीमा नहीं है किन्तु उसका केन्द्र शरीर में स्थित है। मृत्यु के उपरांत यह केन्द्र दूसरे शरीर में स्थापित हो जाता है। आत्मा भौतिक परिस्थितियों का दास नहीं है। यह स्वतंत्र, निर्बंधन, पवित्र, शुद्ध, पूर्ण, अमर और अकाल है। वर्तमान पूर्व कर्मों से निर्धारित होता है एवं भविष्य वर्तमान कर्मों से।

स्वामी विवेकानन्द ने अपने उद्‌बोधन में कहा, सुनो, ऐ अमर्त्य परमानंद की सन्तानों, तुम भी उपरी गोले में निवास करते हो। मैंने अनादि-अनंत को पा लिया है जो सभी अन्धकारों; सभी भ्रमों से परे हैं। मात्र उनका ज्ञान ही तुम्हें जन्मचक्र से बचा सकता है। मुझे अनुमति दें कि मैं आप भाइयों के 'अमर परमानंद के उत्तराधिकारी' के मधुर सम्बोधन से पुकारुं – हाँ, हिन्दू आपको पापी नहीं कहेगा। किसी मनुष्य को पापी कहना पाप है; यह मनुष्य प्रकृति पर मिथ्या दोषारोपण है। जागो, ऐ सिंहों, और इस भ्रम को हटाओ कि तुम भेड़ें हो; तुम आत्मा हो, अमर, मनोवृति से स्वतंत्र, वरदान प्राप्त और सनातन। तुम भौतिक पदार्थ नहीं हो, तुम शरीर नहीं हो। भौतिक पदार्थ तुम्हारे दास हैं, तुम इनके दास नहीं।

वेद घोषित करते हैं कि एक शक्ति ऐसी है जिसके आदेश से हवा बहती है, आग जलती है, बादल बरसते हैं और मृत्यु पृथ्वी पर आती है। वह सर्वत्र है – शुद्ध और निराकार, सर्वशक्तिमान और दया से परिपूर्ण। आप हमारे पिता हैं, आप हमारी माता हैं, आप हमारे प्यारे मित्र हैं, आप सभी शक्तियों के श्रोत हैं, हमें शक्ति दें। उसकी पूजा प्यार से की जाती है, उसके प्यार के बदले प्यार। इस दुनिया में कमल की तरह रहो। आत्मा देवी है। जब फल पक जाते हैं, वे गिर जाते हैं। उसी प्रकार, जब आत्मा पूर्ण और ज्ञानमयी हो जाती है, यह भौतिक शरीर से स्वतंत्र हो जाती है। ईश्वर की कृपा से बंधन टूट सकते हैं। कृपा शुद्ध लोगों पर आती है। ईश्वर शुद्ध हृदय वाले को अपना साक्षात्कार कराते हैं। हिन्दु साधू कहते हैं, "मेरे पास आत्मा है, मैंने ईश्वर को देखा है, मैंने ईश्वर से बात की है।" परमहंस रामकृष्ण ने माँ काली से बात की थी। हिन्दू मत ज्ञान प्राप्त करने में विश्वास रखता है, अन्धविश्वास में नहीं; यह ईश्वर बनने और उससे एकाकार हो जाने में विश्वास रखता है। पूर्णता प्राप्त करने पर, अनंत आनंद की जीवन की ईच्छा रखता है। फिर वह ईश्वर के साथ रहता है, आत्मा पूर्ण हो जाती है। यह ब्रह्म से एकाकार हो जाती है – पूर्ण ज्ञान एवं परमानंद की स्थिति। संपूर्ण आनन्द की प्राप्ति तब होती है जब यह एक वैश्विक चेतना हो जाती है।

विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि भौतिक व्यक्तित्व एक भ्रम हैं; वास्तव में, हमारा शरीर भौतिकता के अखण्ड समुद्र का एक सतंत्र परवर्तनशील अंग है। दूसरे हिस्से, आत्मा के लिए अद्वैत एक अनिवार्य उपसंहार है। अद्वैत की प्राप्ति विज्ञान है। उसका लक्ष्य है पूर्ण अद्वैत को प्राप्त करना। रसायन शास्त्र का लक्ष्य है एक ऐसे तत्व की खोज करना जिससे अन्य पदार्थ बनाए जा सकें। भौतिक शास्त्र ऐसे उर्जा की खोज करता है जिसके बाकी सब प्रतिरूप मात्र हों। धर्म का विज्ञान तब पूर्ण होगा जब वह उनकी खोज कर लेगा जो उस मृत्यु-भुवन में जीवन स्वरूप हो, जो उस सतत् परिवर्तनशील विश्व का स्थिर आधार हो। वह परमात्मा जिनकी स्वरूप मात्र ही बाकी आत्मायें हैं। बहुवाद एवं द्वैत से ही अंतिम अद्वैत तक पहुँचा जा सकता है। धर्म उससे आगे नहीं जा सकता। यह सभी विज्ञानों का ईश्वर है।

मया ततमिदं सर्व जगदव्यक्तमूर्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्वस्थितः।।

पूरा विश्व मेरे आकार का स्वरूप है। सभी जीव मेरे उपर निर्भर हैं किन्तु मैं किसी पर निर्भर नहीं।

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्त्रमेकांशेन स्थितो जगत।।

मैं अपने एक अंश से उस सृष्टि को धारण किए रहता हूँ। आज के दिन रचना नहीं अपितु 'प्रकटीकरण' विज्ञान का

शरद है। हिन्दू जनमानस प्रसन्न है कि जो बात युगों से उसके सीने में थी वो अब, विज्ञान के निष्कर्षों के आलोक में, एक प्रभावी ढंगे से लोगों को पढ़ायी जाएगी।

हिन्दू पूजा के समय एक बाह्य प्रतीक का उपयोग करते हैं। यह उन्हें जिसकी पूजा कर रहे हैं उस पर मस्तिष्क केन्द्रित रखने में मदद करता है। वह ईश्वर के सारे गुण उनकी मूर्तियों में स्थापित मान कर चलता है। यह बहु ईश्वरवाद नहीं है। वह एक ईश्वर के गुणों का कई (मूर्तियों) में प्रकटीकरण मात्र है। वह पवित्रता, शुद्धता, सत्य, उच्च नैतिकता, सवत्र स्थित होने की क्षमता और उस प्रकार की भावनाओं को विभिन्न धारणाओं / कल्पनाओं या मूर्तियों से जोड़कर देखता है। हिन्दू धर्म ज्ञान पर केन्द्रित है। मनुष्य को दैवी ज्ञान प्राप्त कर दैवी बनना है। मूर्तियाँ इस कार्य में सहयोगी-मात्र हैं।

धर्मग्रन्थ कहते हैं, "बाह्य पूजा, भौतिक पदार्थों की पूजा या कामना सबसे निम्न अवस्था है; उपर उठने के लिए संघर्ष, मानसिक प्रार्थना अगली अवस्था है और ईश्वर का ध्वनि सर्वोच्च अवस्था हैं। हन्दुत्व निम्न से उच्यस्तर सत्य और फिर सत्य से सत्य की यात्रा में विश्वास रखता है।" ईश्वर के एक अवतार भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, "जैसे मोतियों के माले में, धागा होता है उसी प्रकार मैंसभी धर्मों में स्थित हूँ। जहाँ कहीं भी आय अद्‌भुत पवित्रता और अद्‌भुत शक्ति का उत्थान और उसे मनुष्यता के पवित्र करते देखें, जान लें कि मैं वहाँ हूँ। हरेक धर्म भौतिक मनुष्य को क्रमशः एक ईश्वर के रूप में विकसित कर रहा है। विभिन्न धर्म उसी प्रकार हैं जैसे एक ही प्रकाश विभिन्न रंग के कांचों से गुजरकर अलग-अलग रंग का दिखता है। परमहंस श्री रामकृष्ण ने कहा, "मैं कृष्ण हूँ, मैं राम हूँ", जब उनसे पूछा गया कि आप कौन हैं। परमहंस योगानन्द ने एस.आर.एफ. हरमिटेज, एनसिनाइट्स, कैलिफोर्निया, में शिष्यों से बात करते हुए कहा, "सबकुछ ईश्वर है। मेरी चेतना में यह कमरा और पूरा विश्वएक चलचित्र की तरह तैर रहे हैं। मैं शुद्ध आत्मा, शुद्ध प्रकाश और शुद्ध आनन्द के अतिरिक्त कुछ नहीं देखता। मेरे शरीर, आपके शरीर और दूनिया के सारे चीजों की तस्वीरें उस पवित्र प्रकाश से फूटती प्रकाश की किरणें मात्र हैं। उस पवित्र प्रकाश के आलोक में मैं सिर्फ पवित्र आत्मा को देखता हूँ।

यावानर्थ उद्यने सर्वतः सम्प्लुतोदके।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः।।

"जल का बड़ा श्रोत मिल जाने के बाद जल के छोटे श्रोत की आवश्यकता नहीं रहती। उसी प्रकार जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया हो उसके लिए वेदों के सारे उद्देश्य और उनमें निहित ज्ञान कीसी उपयोग के नहीं।

स्वामीजी ने कहा, "वर्तमान समय में, हिन्दू शब्द का अर्थ कुछ बुरा है, उसको छोड़ो, अपने कार्य से हमें यह सिद्ध करना है कि किसी भी भाषा के लिए यह सर्वोच्च शब्द है। हिन्दू उन सभी चीजों के प्रतीक हैं जो शानदार और आध्यात्मिक हैं। ईश्वर की कृपा से, प्राचीन आर्यों की सन्तानों को भी वही गर्व है। तुम्हारे पास वही गर्व हो, तुम्हारे पूर्वजों का वहू विश्वास तुम्हें अपने खून में मिले, यह तुम्हारे जीन का अंग बन जाए और विश्व के त्राण और कल्याण के लिए कार्य करे। विश्व की सारी संपदाएँ और कष्ट बिना हमें प्रभावित किए निकले जाएंगे और हम प्रह्लाद की तरह लपटों से निकल जाएंगे, जब तक हम अपने महान उत्तराधिकार और आध्यात्मिकता का आचरण करते रहेंगे। हम सर्वशक्तिमान की संतानें हैं, हम उस अनंत दैवी प्रकाश की चिनगारियाँ हैं। स्वयं पर विश्वास न रखना, ईश्वर पर विश्वास न रखने के बराबर है।

भारत में आध्यात्मिकता का अर्थ अनुभूति है। ईश्वर पुराने-नये सभी लोगों द्वारा देखे गए हैं। जिसे सत्य और परमानंद की अनुभूति हो चुकी है उस हृदय से सिर्फ प्रेम के शब्द ही निकलेंगे। भगवान श्रीकृष्ण ने अपने प्रिय शिष्य अर्जुन से बातें की। उन्होंने अर्जुन को 'योग' के विषय में बताया। यह मनुष्य और मनुष्यता के बीच; तथा स्वयं, ईश्वर और प्रेम का योग (मिलन, जुड़ना) है। उन्होंने कहा कि योग चारतरह के होते हैं – कर्मयोग, ज्ञानयोग, राजयोग और भक्तियोग।

कर्मयोग : निस्वार्थ, निस्पृह और बिना फल की आशा के अपना कार्य करते हुए ईश्वर की प्राप्ति कर्मयोग है। राजा जनक ने ज्ञान प्राप्त किया। अतः आपको प्रकृति के पथ पर निस्वार्थ भाव से जनहित में अपने सारे कार्य करने चाहिए।

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि सम्पश्यत्कर्तुमर्हसि।।

ज्ञानयोग : ज्ञान के योगी के लिए, ईश्वर जीवन का जीवन है, उसके आत्मा की आत्मा। वह स्वयं ईश्वर है, आत्मा के अतिरिक्त और कुछ नहीं। भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा, "जो अनुरक्ति, भय एवं क्रोध से स्वतंत्र हैं, मुझमें पूरी तरह लीन हैं, ज्ञान और ध्यान से पवित्र हुए हैं, वे मुझसे एकीकृत हो गए हैं।"

राजयोग : यह मस्तिष्क नियन्त्रित करने की प्रक्रिया है। इसमें योगी एकाग्रता पर विशेष ध्यान देता है। भगवान कृष्ण ने कहा, "वह योगी जो भगवान पर एकाग्र होना चाहता है उसे अपना मस्तिष्क नियंत्रित रखना चाहिए, एकान्त और शान्त स्थान में रहना चाहिए, इच्छाओं के बंधन और स्वामित्व की भावना से स्वतंत्र होना चाहिए और लगातार ईश्वर का ध्यान करना चाहिए।

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः।।

भक्तियोग : यह केवल प्रेम-प्रेम-प्रेम का योग है। प्रेमासक्त व्यक्ति हर प्रकार के अनुष्ठानों/कर्मकाण्डों, फूलों, अगरबत्ती, आदि का प्रयोग करता है। परमहंस रामकृष्ण माँ काली को खाना खिलाया करते थे, प्रेम-आह्लाद से उनसे बातें किया करते थे। भावनात्मक प्रवृत्ति के लोग अमूर्त्त सत्य की परिभाषाओं की परवाह नहीं करते। उनका प्यार माँ के प्रति शिशुवत होता है। उनका प्यार निस्वार्त, आसारहित और ईश्वर के अतिरिक्त प्रत्येक बंधन से मुक्त होता है। जहाँ कहीं भी हृदय उदार होता है, वह ईश्वर का सारूप होता है। महाप्रभु चैतन्य, संत बामाखापा, स्वामी त्रैलंगा, मीराबाई आदि भी महान प्रेमी थे। कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपने एक गीत में लिखते हैं, "मैं तुम्हें माँ-माँ कह पुकारुंगा, जैसे एक छोटा बच्चा जब बोलने में सक्षम हो जाता है तो भावावेश में खुश होकर मा-मा पुकारता है। मैं नेत्रों में आँसू भर ईश्वर का नाम लूंगा और मुस्कुराऊँगा किन्तु बिना किसी आकांक्षा के।" भगवान कृष्ण ने कहा, "जो अपने आप को मुझपर केन्द्रित कर देता है, मुझमें निष्ठावान रहता है, हमेशा मेरी पूजा करता है और मुझपर अखंड विश्वास रखता है, मुझमें पूरी तरह एकीकृत हो जाता है, उसे मैं अपने प्रति सबसे अधिक समर्पित समझता हूँ।"

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्युक्ता उपासते।
श्रद्धया परयोपेताः ते मे युक्ततमा मताः।।

भगवान कृष्ण ने कहा, अपने मस्तिष्क को एकाग्र कर मुझपर लगाओ, मेरे भक्त, और अपनी श्रद्धा मुझपर समर्पित करो। इस प्रकार तुम मुझे प्राप्त करोगे। मैं यह वादा करता हूँ क्योंकि तुम मुझे बहुत प्रिय हो। ईश्वर अपनी दैवी शक्ति से इस विश्व में अपने वास्तविक रूप में प्रकट होते है।

भगवान कृष्ण कहते हैं, "जब कभी धर्म और औचित्य की हानि होती है और अधर्म और पाप बढ़ते हैं, मैं अपने आप को प्रकट करता हूँ। पवित्र लोगों की रक्षा और अधर्मियों के नाश हेतु और धर्म तथा औचित्य-बोध की पुनर्स्थापना हेतु, मैं प्रत्येक युग में अवतार लेता हूँ। भागवद्गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि एक ज्ञानी व्यक्ति सभी के भले के लिए कार्य करता है : "सर्वभूतिते रता"। जिन्होंने सबसे कम पाप किया है, जो दूसरों की भलाई के लिए कार्य कर रहे हैं, जो स्वयं-नियंत्रित हैं और द्वैत के सभी शंकाओं का समादान कर लिया है, परमानंद अथवा ईश्वर को प्राप्त करते हैं। हिन्दू सभी की भलाई में विश्वास करते हैं। वे सभी की भलाई के लिए कार्य करते हैं।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा, "हिन्दुत्व एक वैश्विक धर्म है, यह अकाल है, इसके स्थान या समय की कोई सीमा नहीं। यह ईश्वर की तरह अनंत होगा। इस वैश्विक धर्म का सूर्य हरेक उपदेशक, हरेक धर्म के फूलों पर चमकेगा। इशके मतावलम्बियों में अत्याचार या असहिष्णुता के लिए कोई स्थान नहीं होगा।

हिन्दुत्व प्रत्येक स्त्री-पुरुष में दैवी शक्ति को पहचानेगा। इसकी सम्पूर्ण शक्ति मनुष्य जाति को अपने सच्चे दैवी प्रकृति का पहचान करने में केन्द्रित होगी। "अपने धर्म को प्यार करो, दूसरे धर्मों का आदर करो और उनके प्रति विनम्र रहो।"

स्वयं पर एवं ईश्वर पर विश्वास रखो। दृढ़ रहो कि तुम एक पापी नहीं हो। तुम एक पूर्ण एवं अनन्त आत्मा हो। आदत के गुलाम मत बनो बल्कि भौतिक शरीर और इसके आदतों के स्वामी बनो। पूर्णता, ज्ञान और अंतिम ब्राह्मांडीय अनंत – ईश्वर से एकीकृत होने के पथ पर चलो। वैश्विक ईकाई से एकाकार हो जाओ। अनेकता में एकता ही प्रकृति की योजना है। प्रेम करो किन्तु निशंसता का सामना करो। कट्टर मत बनो, कट्टरता का सामना करो। अपने धर्म से प्यार करो, किन्तु दूसरे धर्मों का आदर करो। यदि तुम एक ईसाई हो, ईसाई रहो; यदि तुम एक हिन्दू हो, हिन्दू रहो। सहिष्णुता एवं शान्ति बनाए रखो।

(लेखक सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।)

With Best Compliments from :

RITESH TRADEFIN LTD.

Lenin Sarani, Durgapur-713210
Ph. - 0343 255 3518/255 9762

Manufacturer of Sponge Iron &
RTF - Structural Angles & Channels

With Best Compliments from :

C. L. SARAWGI

श्री

SAVERA SAREES PVT. LTD.

95, PARK STREET, KOLKATA-700 016
✆ 2226-2326, 2226-1695, Telefax · +91 33 2226-1695
E-mail : saverasarees@sify.com

व्यापार से किनारा करता मारवाड़ी युवा

– संजय हरलालका

मारवाड़ी समाज की पहचान बनिक (व्यापारी) समाज की रही है। एक कहावत है कि 'जहाँ न जाये बैलगाड़ी, वहाँ पहुँचे मारवाड़ी।' इस कहावत का मतलब था कि मारवाड़ी अपने व्यापार के लिए वहाँ तक पहुँच सकता है जहाँ पहुँचने का कोई साधन न हो। व्यापार करना और उसमें सफलता प्राप्त करना ही इस समाज की सबसे बड़ी खासियत रही है। कठिन परिश्रम और बुद्धि के बल पर देश के किसी भी कोने में व्यापार को ऊँचाईयों तक पहुँचाने का माद्दा रखने वाले मारवाड़ी समाज की पूछ भी इसी वजह से होती रही है।

लेकिन इसे दुर्भाग्य कहें या बदलते समय का तकाजा, आज मारवाड़ी समाज का युवा वर्ग व्यापार से हिचकने लगा है। पढ़े-लिखे लोगों को अपने व्यापार में नौकरी देने वाले समाज का युवा अब खुद पढ़-लिखकर नौकरी की तलाश करता है। पढ़-लिखकर उसका एकमात्र लक्ष्य किसी बड़ी कम्पनी में नौकरी करना रह गया है। व्यापार के झंझटों से वह कोसों दूर रहना चाहता है। चाहे इसके लिए उसे अपने माता-पिता को छोड़कर विदेश ही क्यों ना जाना पड़े।

बंद हो रहे हैं मारवाड़ी समाज के पुश्तैनी कारोबार

इससे जो समस्या पैदा हो रही है वह है लोगों के पुश्तैनी कारबार का बंद होना। इसका कारण है कि आजकल लोग एक या दो बच्चे ही पैदा करते हैं। जिसमें अगर एक लड़का है और वह अपने पिता के कारोबार में रूचि न लेकर नौकरी करने लगता है तो मजबूर होकर वृद्ध पिता को अपना कारबार समेटना पड़ रहा है। आखिर उसे संभालेगा कौन?

एक ऐसे ही वाकये का उदाहरण देना चाहता हूँ। महानगर के एक संभ्रान्त परिवार का बड़ाबाजार में अच्छा-खासा कारबार था। उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र को खूब पढ़ाया, पढ़ने के लिए विदेश तक भेजा। वहाँ से आकर उसने अपने पिता के कारोबार में अरूचि दिखाई। फिलहाल वह दिल्ली में किसी अच्छी कम्पनी में नौकरी कर रहा है। करीब ७५ वर्षीय पिता को किडनी की शिकायत है। अकेले व्यापार संभालना उनके वश की बात नहीं है। लक्ष्मी की भी कोई कमी नहीं है। सो उन्होंने धीरे-धीरे अपने व्यापार को समेटना शुरू कर दिया। दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता में जो सम्पत्ति है उसे बेचने लगे। रखकर आखिर करते भी क्या? पुत्र अकेला दिल्ली में रह रहा है और अपने तरीके से जीवन यापन कर रहा है जबकि वृद्ध माता-पिता कोलकाता में रह रहे हैं। पहले तो उन्हें इसके लिए अफसोस होता था लेकिन अब उन्होंने इस परिस्थिति से समझौता कर लिया है।

ऐसी परिस्थिति में यहाँ सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि क्या मारवाड़ी समाज स्वयं के व्यापारी समाज होने की पहचान खोता जा रहा है? अगर समाज का युवा पढ़-लिखकर आइएएस-आइपीएस अफसर बने या सरकारी महकमे में ऊँचे ओहदे पर कार्यरत हो तो यह गर्व करने लायक बात है। डाक्टर-वकील बनना भी स्वयं को सिद्ध करने जैसा है। लेकिन पढ़-लिखकर किसी निजी कम्पनी में चन्द लाखों की नौकरी करना ही क्या इस समाज को गौरवान्वित करना है? क्या हमारा युवा परिश्रम से कतराने लगा है? जिस बुद्धि के बल पर वह पढ़े-लिखे को नौकरी देता था और उनकी बुद्धि का उपयोग अपने व्यापार के लिए करता था, आज उसी समाज का युवा ऐशो-आराम की जिन्दगी के लिए झंझटों व परिश्रम से दूर रहकर स्वयं की बुद्धि को कौड़ियों के मोल बेच रहा है। शादी के बाद यह युवा वर्ग अपनी पत्नी के साथ नौकरी का हवाला देकर अपने आप माँ-बाप और परिवार से अलग किसी दूसरे शहर या देश में रहने लगता है। जिससे पहले से खत्म हो रहे संयुक्त परिवार का चलन और जोर पकड़ रहा है। जिस पुत्र को बुढ़ापे की लाठी कहा जाता था वह बुढ़ापे का सिरदर्द बनने लगा है। अगर माता-पिता अपने पुत्र के साथ दूसरे शहर में जाकर रहने लगें तो

उन्हें जैसी जिन्दगी जीनी पड़ती है वह तो भुक्तभोगी ही जानें। क्योंकि अकेले स्वतंत्र रूप से रहने के कारण यह युवा अपने जीवन में किसी भी प्रकार की दखलंदाजी बर्दाश्त नहीं कर पाता है जबकि माता-पिता ता अपने स्वभाव व जीवन अनुभव के आधार पर कोई गलत कार्य होने पर टोका-टोकी अवश्य करते हैं। बस यहीं से शुरु होता है उनका जीवन दूभर। उन्हें कई तरह से अपनों के ही हाथों लांक्षित होना पड़ता है। हाँ, समय के अनुकूल अपने पुत्र और पुत्रवधू के सामने आत्मसमर्पण करने पर वे दिखावे के सम्मान का जीवन अवश्य जी रहे हैं। इस मामले में कुछ अपवाद अवश्य हो सकते हैं।

इससे इतर, आजकल अधिकांश मामलों में देखा जा रहा है स्वयं माता-पिता बच्चे को धनोपार्जन के लिए स्वयं से दूर कर देते हैं। क्योंकि उस समय वे स्वयं में शारीरिक रूप से सक्षम होते हैं। लेकिन जब बदलते समय के अनुसार, उसकी जरूरत होती है तो लाख इच्छा के बावजूद भी उसे अपने पास नहीं पाते। विदेश में रह रहा पुत्र माता-पिता की मृत्यु पर उन्हें कंधा देने के लिए उपलब्ध नहीं होता। जबकि पुत्र का अंतिम सबसे बड़ा धर्म यही होता है कि वह अपने माता-पिता का अंतिम संस्कार स्वयं के हाथ से करे।

जिस तेजी के साथ इसका प्रचलन बढ़ रहा है यह निश्चित रूप से हमारे समाज के लिए चिन्ता का विषय है। अपने बच्चे को पढ़ाना-लिखाना प्रत्येक माता-पिता का न सिर्फ कर्तव्य बल्कि समय का तकाजा भी है। उसी तरह पुत्र का यह कर्तव्य है कि वह अपने पिता के कारोबार को संभाले। अपनी बुद्धि व परिश्रम से उसे और आगे बढ़ाये। अगर पिता का कारोबार नहीं हो तो चाहे पहले नौकरी करके ही धनोपार्जन करे लेकिन उस धन को मौजमस्ती में खर्च न कर संचित करे और लक्ष्य रखे कि उसे व्यापार करना है। इससे एक तरफ जहां हमारे समाज की पहचान कायम रहेगी वहीं संयुक्त परिवार का सिलसिला भी आगे बढ़ता रहेगा। कुछ समय के लिए एकल परिवार सुख अवश्य देता है किन्तु अंततोगत्वा उसका खामियाजा ही भोगना पड़ता है। नाना प्रकार की कठिनाईयों से जूझना पड़ता है। इससे बचने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए सहनशीलता व संयम का होना भी जरूरी है।

(लेखक सम्मेलन के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री हैं।)

A COMPLETE SERVICE TO INDUSTRY
for
BALL & ROLLER BEARING

STEELCO PRODUCTS

(Prop. ESPEE ENTERPRISES P. LTD.)
138, BIPLABI RASH BEHARI BASU ROAD.
2nd FLOOR, R-211, P.B. NO. - 2824.
KOLKATA - 700 001.

PHONE : 2243-1012/3969
(M) : 94330 97685
FAX : (91) (33) 2243-2459
E-MAIL : steelco@cal2.vsnl.net.in

FAG AUTHORISED INDUSTRIAL DISTRIBUTOR

BRANCH : * HPL LINK ROAD, HALDIA - 721 602, (M) 094340-09024.
*DHIMRAPUR ROAD,RAIGARH-496001,(M)09301088335, 07762-234006

****

व्यक्तिगत संस्मरण

सहज व्यक्ति थे इन्दर कुमार गुजराल

– सीताराम शर्मा

इन्दर कुमार गुजराल से मेरा पहला परिचय ४३ साल पहले सन् १९६९ में हुआ था, वे सूचना एवं प्रसारण मंत्री थे और मैं पत्रकारिता से जुड़ा था। उनमें लोगों को अपना बनाने की अद्‌भुत क्षमता थी। संभवतः इसी गुण के कारण दक्षिणपंथी से वामपंथी सभी दलों ने एकमत होकर गुजराल साहब को बिखरी राजनीति के दौर में सर्वसम्मति से सन् १९९७ में भारत के प्रधानमंत्री पद के लिए चुना। मेरे रूस में राजदूत रहते हुए, मास्को क्यों नहीं आते, पत्नी को भी साथ लाइये..., बड़ी आत्मीयता एवं सहजता के साथ गुजराल साहब ने निमंत्रण दिया। नौ दिन, १२ से २० मई, १९७८, मैं पत्नी सहित गुजराल साहब का मास्को में मेहमान रहा। उन दिनों रूस में शाकाहारी भोजन की बड़ी समस्या थी। गुजराल साहब, विशेषकर उनकी पत्नी शीला जी ने, हमारे शाकाहारी भोजन का विशेष ख्याल रखा। शीला जी ने बताया कि मास्को में दाल, चावल, गेहूँ, सब्जी आदि की बहुत ही किल्लत है, दूतावास के लिए अधिकतर ऐसे सामान एयरफोर्स के विमान द्वारा भारत से लाये जाते हैं। उनके साथ काफी समय साथ बिताने एवं राजनीतिक चर्चा का अवसर मिला। गुजराल साहब इंदिरा गांधी के काफी नजदीकी रहे। आपातकाल में संजय गांधी की नाराजगी के चलते उन्हें सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से हटाकर योजना मंत्री बना दिया गया था एवं बाद में वे रूस के राजदूत बने, जो एक प्रकार से उनका राजनीतिक निष्कासन था।

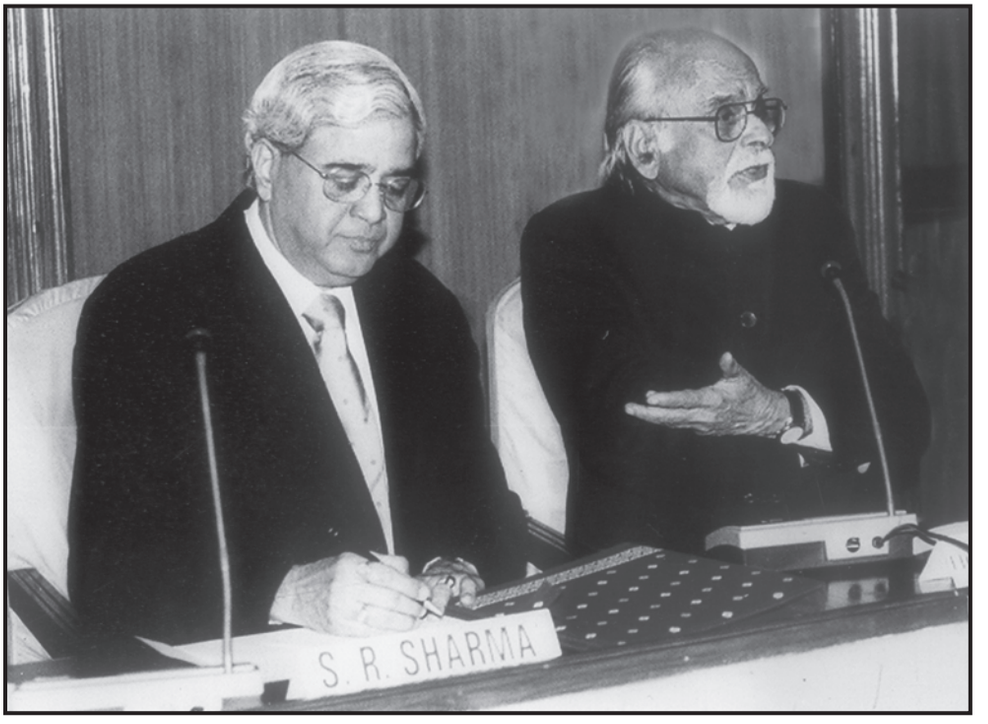

भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. इन्दर कुमार गुजराल के साथ लेखक

गुजराल साहब ने बताया कि इंदिरा जी मुझसे इस बात से नाराज थीं कि आकाशवाणी एवं दूरदर्शन विरोधी दलों का जवाव क्यों नहीं दे पा रहे हैं। उनका सोचना था कि प्रचार माध्यमों से विरोधियों को खत्म करने का चमत्कार हो सकता है। इंदिरा जी ने एक दिन कहा, 'सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय आपके बस की बात नहीं है। प्रेस का कठोर हाथों से दमन करना होगा।' यहाँ तक कि एक कैबिनेट मीटिंग में मेरी उपस्थिति में उन्होंने कहा, 'सूचना मंत्री अपनी

विश्वसनीयता के पीछे पागल हैं।' उन दिनों को याद करते हुए गुजराल साहब ने कहा था, 'एक दिन अचानक इंदिरा जी मुझसे देश की आवास समस्या, योजना आदि पर बातचीत करने लगीं एवं इन विषयों पर मुझे एक नोट बनाने को कहा। मैं सूचना मंत्री था! कुछ अटपटा अवश्य लगा पर खुश था कि प्रधानमंत्री अन्य विषयों पर भी मुझसे परामर्श करती हैं। लेकिन कुछ घंटों बाद ही बात सामने आ गयी, जब बिना पूर्व जानकारी के राष्ट्रपति भवन से विज्ञप्ति जारी हुई कि मुझे सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय से योजना विभाग में स्थानांतरित कर दिया गया है।' अपने राजदूत नियुक्त होने के संदर्भ में गुजराल साहब ने कहा, 'मेरा राज्यसभा का कार्यकाल समाप्त हो गया था। मैं इंदिरा जी से अपने आगे के भविष्य के विषय में बात करने मिलने पहुँचा। मेरे कुछ कहने से पहले ही इंदिरा जी ने कहा, 'आगे क्या इरादा है? मैं आपको रूस में भारत का राजदूत बनाकर भेजना चाहती हूँ।' मेरी आनाकानी को नजरंदाज करते देख मैंने पूछा, 'इंदिरा जी क्या आप मुझसे नाराज हैं? इंदिरा जी ने तल्खी से जवाब दिया, 'आप गलत हैं, जिससे नाराज होते हैं, उसे फिजी भेजते हैं, मास्को नहीं।'

२१ अप्रैल सन् १९९७ को गुजराल साहब ने भारत के प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। प्रधानमंत्री गुजराल की प्रथम कलकत्ता यात्रा के एक दिन पहले राजभवन से मेरे पास राज्यपाल के ए.डी.सी. का फोन आया कि राज्यपाल डॉ. ए. आर. किदवई आपसे मिलना चाहते हैं। नियत समय पर पहुँचने पर राज्यपाल महोदय ने कहा कि प्रधानमंत्री के सम्मान में राजभवन में आयोजित रात्रिभोज में आमंत्रित करने के लिए प्रधानमंत्री भवन से समाचार आया है। कृपया अवश्य पधारें एवं समय से पंद्रह मिनट पूर्व पहुंचने का आग्रह किया। राज्यपाल महोदय जब रात्रिभोज के लिए प्रधानमंत्री की अगुवाई के लिए उनके कक्ष में गये तो मुझे अपने साथ ले गये। गुजराल साहब ने अपने उसी प्रसिद्ध जज्बे के साथ मेरा स्वागत किया। इसी यात्रा के दौरान एक और दिलचस्प घटना घटी। मैं पश्चिम बंगाल संयुक्त राष्ट्र संघ संस्था के कुछ पदाधिकारियों – जनाब हाशिम अब्दुल हलीम, न्यायाधीश यूसुफ, आदि के साथ प्रधानमंत्री से मिलने राजभवन गया था। बातचीत के दौरान चीन में आयोजित एशिया–प्रशांत सम्मेलन में प्रतिनिधित्व की चर्चा हुई। गुजराल साहब ने कहा – भारत-चीन संबंध बहुत महत्वपूर्ण है और मुझसे अनुरोध किया, कि "आप चार-पाँच विशिष्ट बुद्धिजीवियों को प्रतिनिधिमंडल में लेकर जाएँ।" मेरे कहने पर कि बुद्धिजीवियों–विचारकों के पास टिकट का पैसा कहाँ है, गुजराल साहब ने मासूमियत से पूछा, 'एक टिकट के लिए कितने पैसे लगते हैं?' मेरे मुंह से निकल गया कि भारत के प्रधानमंत्री टिकट के पैसों का हिसाब लगा रहे हैं। गुजराल साहब ने उसी समय वहाँ उपस्थित प्रधानमंत्री कार्यालय में ज्वाइंट सेक्रेटरी को हवाई टिकटों की व्यवस्था करने का निर्देश दिया और मुझसे कहा कि आप तैयारी करें। मैंने विशिष्ट व्यक्तियों के पांच नामों के साथ प्रधानमंत्री को पत्र भेज दिया। कुछ दिनों उपरांत उक्त महिला ज्वाइंट सेक्रेटरी से खबर लेने पर पता चला कि 'प्रोसेस' चल रहा है। सभी प्रतिनिधि यात्रा की तैयारी में थे। सम्मेलन की तिथि से कुछ दिनों पहले सरकार का पत्र मिला कि आपका अनुरोध स्वीकार नहीं किया जा सकता है। मैं बड़े धर्मसंकट में फँस गया। विशिष्ट बुद्धिजीवियों में शामिल पूर्व न्यायाधीश, विश्वविद्यालय के उपकुलपति, पत्रकार, विधायक एवं सांसद को मैं क्या जवाब दूँ? प्रधानमंत्री के वादे और उनके आदेश के बावजूद यह कैसे हुआ? मुझे सरकारी तंत्र पर गुस्सा आ रहा था। मैं कैसे अपने मित्रों को चेहरा दिखा पाऊँगा? मैंने कुछ गुस्से में प्रधानमंत्री के नाम पर अपने धर्मसंकट की चर्चा करते हुए एक कड़ा पत्र लिखा। पत्र मिलते ही ज्वाइंट सेक्रेटरी ने फोन पर पूछा कि आप क्या सचमुच चाहते हैं कि यह पत्र प्रधानमंत्री को प्रस्तुत किया जाये – आपने कुछ ज्यादा ही लिखा है। मैंने कहा – 'आपको प्रधानमंत्री ने मेरे सामने ही निर्देश दिया, आप उसका पालन नहीं कर पाईं। कम से कम यह पत्र प्रधानमंत्री के टेबुल पर पहुँचा दें। यह मेरा पहला अनुभव था कि सरकारी तंत्र प्रधानमंत्री से भी कहीं अधिक ताकतवर है। गुजराल साहब जैसे सज्जन, बुद्धिमान, आदर्शवादी, मूल्य-आधारित राजनेता भारतीय राजनीति में बिरले रहे हैं। उनसे मेरी अंतिम मुलाकात गत वर्ष उनके निवास स्थान ५ जनपथ (दिल्ली) में हुई, जब उन्होंने अपनी आत्म-जीवनी की हस्ताक्षरित प्रति मुझे भेंट की थी। ★★★

With Best Compliments from :

DEORAH SEVA NIDHI

CHARITABLE TRUST DEDICATED TO SERVICE

(Founder Trustee - Late S. L. DEORAH)

13E, RAJANIGANDHA

25 BALLYGUNGE PARK

KOLKATA - 700 019

With Best Compliments :

P. D. TULSYAN

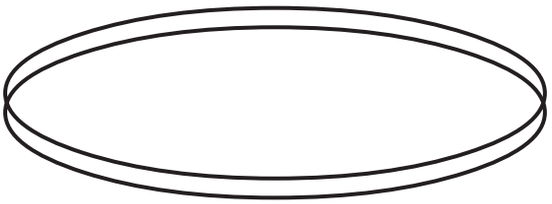

M/s. G.L. Investment Pvt. Ltd.

5A, Robinson Street, Kolkata - 700 017

Phone : (033) 2290 6717

समाज के लिए क्यों आवश्यक है मारवाड़ी सम्मेलन

– विनय सरावगी

एक प्रश्न अक्सर पूछा जाता है कि मारवाड़ी सम्मेलन की उपयोगिता क्या है और यह संगठन करता क्या है? प्रान्तीय अध्यक्ष के रूप में मेरे कार्यकाल के दौरान मुझसे भी यह सवाल कई बार किया गया है। इसके उत्तर में मैं प्रश्नकर्ता से एक सवाल करता हूँ – फायर ब्रिगेड की उपयोगिता क्या है? आग बुझानेवाली गाड़ियां महीनों यूं ही खड़ी रहती है, बिना किसी काम के। लेकिन जब आग लगती है तो फायर ब्रिगेड की यही गाड़ियां सर्वाधिक उपयोगी बन जाती है। जरा सोचिए, फायर ब्रिगेड न हो तो क्या हो?

बस, लगभग यही स्थिति मारवाड़ी सम्मेलन की है। विगत वर्षों में कुछ ऐसे मौके आये, जब कतिपय राज्यों में स्थानीय स्तर पर मारवाड़ी समाज के विरुद्ध आंदोलन किये गये। असम में तो इस आंदोलन को हिंसात्मक रूप दे दिया गया। कई मारवाड़ी परिवारों को वहां से पलायन करना पड़ा और जो वहां थे, वे स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रहे थे। उड़ीसा में भी एक बार ऐसा ही वातावरण बनाने का प्रयास किया गया। यह तो सर्वविदित है कि इन आन्दोलनों के पाछे राजनीतिक कारण थे और कुछ निहित स्वार्थी तत्वों ने इन्हें हवा दी। कारण चाहे जो रहा हो, परिणाम यही हुआ कि मारवाड़ियों को संकटपूर्ण हालात से गुजरना पड़ा।

ऐसे कठिन समय में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन सक्रिय हुआ और मारवाड़ी समाज की सुरक्षा हेतु सर्वोच्च स्तर पर पहल की। मेरे पिताजी स्व० हनुमान सरावगी उन दिनों अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। उन्होंने तत्काल व्यक्तिगत स्तर पर तत्कालीन गृह राज्यमंत्री श्री सुबोधकांत सहाय से सम्पर्क किया और साफ शब्दों में कहा कि मारवाड़ी समाज के परिवारों की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाये जाएं, अन्यथा पूरे देश में मारवाड़ी अपने समाज की रक्षा के लिए एकजुट होकर उठ खड़े होंगे और यदि इस क्रम में अप्रिय स्थिति उत्पन्न हुई तो इसकी पूरी जिम्मेदारी केन्द्र सरकार की होगी।

इस चेतावनी का तुरंत असर हुआ और श्री सहाय ने असम में तैनात केन्द्रीय बलों को आदेश दिया कि मारवाड़ी समाज के लोगों पर हमला करने वाले अथवा धमकी देने वाले तत्वों पर कड़ी निगरानी रखी जाये और इस समाज के लोगों की हर हालत में सुरक्षा की जाये। नतीजा यह हुआ कि हिंसात्मक घटनाओं पर शीघ्र काबू पा लिया गया। मेरे पिताजी ने स्थिति पर लगातार नजर रखी और असम के मारवाड़ियों को आश्वस्त किया कि उनकी सुरक्षा के लिए मारवाड़ी सम्मेलन हर संभव कदम उठायेगा।

यदि उस समय मारवाड़ी सम्मेलन ने कार्रवाई न की होती तो हालात और बिगड़ सकते थे। यही है मारवाड़ी सम्मेलन की उपयोगिता। उसके बाद केन्द्र सरकार के साथ-साथ पूरे देश में एक संदेश गया कि मारवाड़ी समाज का कोई व्यक्ति या परिवार देश के किसी भी हिस्से में हो और उनकी संख्या चाहे जो हो, मारवाड़ी सम्मेलन उसके पीछे खड़ा है। इसमें समस्त मारवाड़ी समाज का पूरे देश में मनोबल ऊंचा हुआ और एक संगठन के रूप में मारवाड़ी सम्मेलन के प्रति आस्था बढी।

इस बात का उल्लेख करना उचित होगा कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था है, जिसका विस्तार लगभग सम्पूर्ण राष्ट्र में है। अधिकांश राज्यों में इसकी प्रान्तीय इकाइंयां पूरी सक्रियता से कार्यरत हैं, जिनके अधीन जिला शाखाएं हैं। समाज पर अनायास आये संकट का सामना करना हो, कुप्रथाओं के उन्मूलन का प्रश्न हो अथवा समाज से जुड़े अन्य मुद्दे हों, सदैव मारवाड़ी सम्मेलन ही आगे बढ़कर समाज के साथ पूरी ताकत से खड़ा होता है। सही मायने में मारवाड़ी सम्मेलन का कोई विकल्प नहीं है।

सम्मेलन की बदलती भूमिका

यह तो हुआ मारवाड़ी सम्मेलन की भूमिका का एक पहलू। इससे हटकर विचार करें तो इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि मारवाड़ी समाज में व्याप्त कतिपय कुप्रथाओं को समाप्त करने में सम्मेलन की उल्लेखनीय भूमिका रही है। पर्दा प्रथा तथा बाल विवाह के खिलाफ

पहली आवाज सम्मेलन के ही मंच से उठी थी, जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आये। इन कुप्रथाओं के विरुद्ध आंदोलन के दौरान सम्मेलन के पदाधिकारियों को कितना अपमान सहना पड़ा, इसकी जानकारी कुछ ही लोगों को है। बालिका-शिक्षा के लिए भी सम्मेलन के मंच से निरन्तर आह्वान किया जाता रहा और आज उच्च शिक्षा के क्षेत्र में लड़कियां लड़कों से कहीं आगे हैं, पीछे तो बिलकुल नहीं हैं।

लेकिन अब, बदलते परिप्रेक्ष्य में सम्मेलन की भूमिका भी बदल गयी है। पर्दा प्रथा और बाल-विवाह कुछ क्षेत्रों में छोड़कर अब समस्या नहीं रहे। उच्च शिक्षा का महत्व अब किसी को बताने की जरुरत नहीं। प्रश्न है कि अब सम्मेलन क्या करे अथवा इसे क्या करना चाहिए?

किसी न किसी रूप में दहेज तथा दिखावा व फिजूलखर्ची समस्याएं हैं, लेकिन इनके विरोध में लीक पीटते रहना कोई मायने नहीं रखता। चर्चा होनी चाहिए, जो कि होती रहती है। संयुक्त परिवारों का टूटना और नयी पीढ़ी में संस्कारों का अभाव-नयी समस्याओं के रूप में सामने आ रहे हैं। इन्हीं का दुष्परिणाम हैं – परिवार के वृद्धजनों की उपेक्षा तथा तलाक आदि की घटनाओं में वृद्धि। पहले इनके इक्का-दुक्का मामले सुनने में आते थे। पर अब लगता है कि यह अपवाद की बजाय नियम बनते जा रहे हैं। इन पर गंभीर चर्चा होनी चाहिए कि इनमें सम्मेलन की भूमिका क्या हो?

समाज का एक बड़ा तबका मध्यमवर्गीय है, जो किसी तरह अपना भरण-पोषण कर रहा है। बेरोजगार युवक भी हैं, विशेषकर जो उच्च शिक्षा प्राप्त या विशेषज्ञता प्राप्त नहीं हैं। इनके लिए सम्मेलन क्या कर सकता है, इस पर भी विचार किया जाना चाहिए।

छवि सुधारने का प्रयास होना चाहिए

कुल मिलाकर, मारवाड़ी समाज की छवि आज भी आम लोगों के बीच नकारात्मक ही है। हमारा समाज देश के लिए, राज्य के लिए तथा अन्य समाजों के लिए इतना कुछ करता है, फिर भी हमारे खिलाफ टिप्पणियां होती रहती हैं। संक्षेप में कहा जाये तो मारवाड़ी समाज नकारात्मक प्रचार का शिकार है। एक ओर हमारी उपलब्धियों को गौण कर दिया जाता है और दूसरी ओर हमारी त्रुटियों को इतना बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है कि बस इन्हीं की चर्चा होती है।

इसका एक बड़ा कारण है – मीडिया में मारवाड़ी समाज का नगण्य प्रतिनिधित्व। अधिकांश बड़े अखबार मारवाड़ी समाज के हैं, लेकिन सम्पादको की संख्या नगण्य है। इससे समाज की बात मीडिया में नहीं आ पाती।

उदाहरणस्वरूप, कुछ समय पूर्व जब केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने राजस्थानी तथा भोजपुरी को एक ही बैठक में एक साथ संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित करने के प्रस्ताव को सैद्धांतिक सहमति दी तो अगले दिन लगभग सभी समाचार पत्रों में भोजपुरी के सम्बंध में तो समाचार प्रमुखता से प्रकाशित हुआ, लेकिन राजस्थानी को पूरी तरह गौण कर दिया गया। समाज के लोगों में भी कोई उत्साह नजर नहीं आया, क्योंकि अधिकांश को इसकी जानकारी भी नहीं थी। जबकि भोजपुरी भाषियो ने रंग–गुलाल खेलकर होली मना ली।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व० हनुमान सरावगी ने रांची में संवाददाता सम्मेलन बुलाकर समाज के लोगों को इसकी जानकारी दी और केन्द्र सरकार से मांग की कि शीघ्र इस प्रस्ताव को संसद से पारित करवाकर अमली जामा पहनाया जाये।

बाद में, मैंने भी जब मौका मिला, इस ओर समाज का ध्यान दिलाया और केन्द्र सरकार से पत्राचार जारी रखा। साथ ही, झारखण्ड में राजस्थानी को दूसरी भाषा का दरजा प्रदान करने की मांग राज्य सरकार के सामने पुरजोर तरीके से रखी।

दूसरा कारण है – अपनी छवि के प्रति समाज की उदासीनता। मारवाड़ी समाज के प्रति कोई अभद्र टिप्पणी कर दे या अपमानजनक भाषा का प्रयोग करे तो हमारी प्रतिक्रिया सामान्यतः नजरअंदाज करने की होती है। हमारा दृष्टिकोण है – बोलता है तो बोलने दो, लिखता है तो लिखने दो। यह प्रवृत्ति उचित नहीं है। इसका असर सम्पूर्ण समाज की छवि और इसके मनोबल पर पड़ता है।

इस विषय में मारवाड़ी सम्मेलन को और अधिक जागरूक होना होगा। जब कभी सम्मेलन की ओर से किसी दुष्प्रचार अथवा अभद्र टिप्पणी का विरोध हुआ, इसके अच्छे परिणाम सामने आये। वर्तमान युग इंटरनेट तथा 'ट्विट्र' का है। सम्मेलन का एक प्रकोष्ठ (सेल) होना चाहिए, जो मीडिया में किसी भी रूप में मारवाड़ी समाज के बारे में व्यक्त विचारों पर नजर रखे और अपनी प्रतिक्रिया दे। विचार यदि सकारात्मक हैं तो उनकी सराहना करे तथा विचार नकारात्मक हैं तो उनका सटीक विरोध करें। इससे मारवाड़ी समाज के बारे में कुछ कहने या लिखने से पहले कोई व्यक्ति सावधान रहेगा।

अखिल भातवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के स्थापना दिवस पर इन सब विषयों पर गहराई से विचार किया जाए तो भविष्य में इसके सार्थक परिणाम सामने आयेंगे।

(लेखक झारखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष हैं।)

SHABRO METALS & TECHNOLOGIES LIMITED

217-222,Tribhuwan Complex, Ishwar Nagar (Opp. New Friends Colony), New Delhi-110 065 (INDIA), Tel: +91 11 66629292 – 95

Fax: +9111 6662 4053, 2693 4466, Website: www.smtl.co.in Email: info@smtl.co.in

COMMODITIES

- ✓**Ferrous Scrap**
- ✓**Ferro Alloys**
- ✓**Steel Products**
- ✓**Iron Ore**
- ✓**Coal**
- ✓**Manganese Ore**
- ✓**Cement Clinker**

TECHNOLOGY PROVIDER

- ✓**Ore Beneficiation**
- ✓**Pelletization**
- ✓**Iron & Steel Making**
  - • **Coke Oven**
  - • **Sintering**
  - • **Blast Furnace**
  - • **BOF Converter**
  - • **Continuous Caster**
- ✓**Underground Coal Mining**
- ✓**Cement Plant**
- ✓**Prefabricated Steel Structure**
- ✓**Aerated Autoclaved Block**
- ✓**Equipment for Steel and Cement Plant**

PARTNER IN VALUE ADDITION....

....WE VALUE RELATIONSHIP

MEMBERSHIPS

worldsteel ASSOCIATION | CII Confederation of Indian Industry | BIR | ISRI Institute of Scrap Recycling Industries, Inc. | FIMI | FICCI

CERTIFICATIONS

D&B | CRISIL A Standard & Poor's Company

Vijay Sharda
Chairman and Managing Director

Vineet Sharda
Joint Managing Director

Ashutosh Agrawal
Deputy Managing Director

Akhil Jain
Director –Corporate & Finance

OFFICES :-

CHENNAI
TEL:-+91 44 43561313
Email:- sunil@smtl.co.in

GOA
TEL:-+91 832 2416066
Email:- sanjay@smtl.co.in

KOLKATA
TEL:-+91 33 2230 3714
Email:- vineet@smtl.co.in

Associate Company

Steel Corporation of Bombay

Fortuna Tower, 2nd Floor, Suite # 13, 23A, Netaji Subhas Road, Kolkata - 700 001,
Email :sharda_kolkata@rediffmail.com, Tel: 033 2230 3714 , 3022 5551, Fax : 033 2213 3201
Res: 033 2287 4117 , 2287 7113, Mob: +91 98310 87003
Deals in : Bars & Rods, Steel Structurals (Angle / Channel / Joist), Sheets & Plates, Flats & Squares, Pipes & Rails.

HPC

Himalaya Paper Company

2nd Floor, Draupadi Mansion, 11, Brabourne Road, Kolkata – 700 001 (INDIA)

Phone	:	(91-33)2242-2023/4668/4494/8218/8277
	:	(91-33)3292-4776/4777/4778
Facsimile	:	(91-33)2242-6972
E-Mail	:	himalayapaper@airtelmail.in

Importers, Exporters & Dealers for all varieties of Paper & Boards

Wholesale Dealers & Authorised Agents :

❖

JK PAPER LTD.

❖

TRIDENT LIMITED (TRIDENT GROUP)

❖

APRIL FINE PAPER TRADING PTE LTD

❖

KOHINOOR PAPER & NEWSPRINT (P) LIMITED

❖

Dealers in :

JK Copier, Sparkle Copier , Easy Copier,
"JK Tuffcote", "JK Ultima", Coated Paper /Boards,
and other products from **JK Paper Ltd**

Diamond Line, Silverline, Crystalline, Prime Line, Superline etc. from
Trident Limited (Trident Group)

APRIL PREMIUM PRINT, PAPER ONE PRESENTATION, from
APRIL FINE PAPER TRADING PTE LTD

Creamwove & other Papers from
Kohinoor Paper & Newsprint (P) Ltd

(Four Decades In Paper Marketing)

आदर्श लोक सेवक : म्हारी डायरी रो एक पानो (साल २००३)

– नथमल केडिया
साहित्य महोपाध्याय

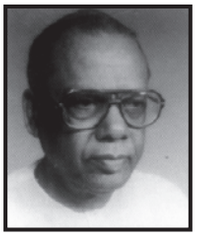

सुप्रसिद्ध गांधीवादी चिन्तक, करमयोगी काका कालेलकर री ढ़लती उमर मायल एक बार उनरा दरसन कर ने तथा भासन सुनने रो मौको मिल्यो हो। उमर रै ऊँ पड़ाव पर भी उनरी खिमता गजब री ही। जात्रा करती तो जईया जीवन रोजा हिस्सो ही होगो ही। ऊँ दिन उनने बिनोद मांय कैयो भी हो – मृत्यु मेरो पीछो करती जद फलाने गाँव सैर पुगै तब तक म्हे दूजै गांव चल्यो जाऊँ ई लिये आज तक बचेड़ो हूँ।

ऊँ ई मुजब अहमदाबाद माय सद्विचार परिवार (भोत बड़ी जनसेवी संस्था) रा अध्यक्ष आदरजोग हरिभाई पंचाल है। इनरी जीवन सैली भी ऊँ ही रास्ते पर चलती दीसै। पैले रोज फोन कर्यो, तो भोत धीमी आवाज सुनायी पड़े – काल तबियत एकाएक भोत खराब होगी, कमजोरी भोत है। डाक्दर एकदम आराम करने रो बोल्यो है। पर ठीक बीजू दिन तबियत रा हालचाल पूछने फोन करूं तो उत्तर मिलै फलानै कार्यक्रम माँय गया है – पतो नी कब वापस आवेला। म्हैं जब भी अहमदाबाद जाऊँ तो उनसूँ जरूर मिलने री चेष्टा करूं – इयाँ रा लोग अब जलदी सी दीसै ही कोनी। जिनसूँ मिलकर मन ने एक सकून मिलै, सान्ति मिलै। ई बार तो गुजरात माय नरसंहार रै समै इयाँ रा लोगों री भोत याद आयी। सो अहमदाबाद पूगनै रै दूसरे दिन ई म्हे फोन कर्यो – बोल्या – भूकम्प माँय म्हे लोग यो काम कर्यो – बो काम कर्यो। म्हे इधर माँय उनसूँ थोड़ो आत्मीय होगो हो सो बीच माय ही बोल पड्यो – म्हे नै या बताओ ई बार रै दंगा माँय आपरी काँई भूमिका रैसी। म्हें जाने हो कि आदरास्पद हरिभाई इयाँ रै लोगाँ माँय है जिका बड़े से बड़े तूफान बवण्डर मांय भी आपरो दीयो बलतो राख सकै सो भरोसो तो हो ही। बै बोल्या – ई बार रो भूकम्प नी हो यो तो भयकम्प हो। म्है आपने आज रात नै फोन करूँला तब बाताँ होबेली। हां तो रात नै उनरो फोन आयो और बात चालू कर नै रै सागै सागै बोल्या – केडियाजी। आज म्हारे हाथाँ तीन, एक देसभक्त संत एक करूणा संत और एक काव्य संत रो सम्मान हुयो। पैलो संत डॉ० एच.एल. त्रिवेदी रो परचो देता बोल्या – ये अमेरिका माँय किडनी रा नामी डाक्टर हा। एकबार आपरै पिताजी सूँ मिलनै भारत आया हा तब पिताजी रै एक दोस्त जिकानैं ये चाचाजी बोलता इना नै बोल्या – अरै तूं ई देस माया जलम लियो – अठै ई बड़ो हुयो। अब इनै कुछ देने की बारी आयी तब जाकर बिदेस माँय बसगो और उठै रै लोगाँ ने लाभ देने लागगो। ई देस रो कर्जो तो तेरे ऊपर रै जावैगो। चाचाजी री या बात इन ने लाग गयी और उठै जमा जमायी भोत आमदनी वाली प्रेक्टिस छोड़कर अठै आकर लोगां रो इलाज करनै लागगा।

दूजा करूणा संत है डाक्टर बसन्त भाई फरीख। इनरे असपताल (सफाखाने) माय एक करसो आपरी पूरा म्हीना री गर्भवती लुगाई नै लेयकर आयो। संजोग ईया को बैठ्यो बा एक लड़की नै जलम देयकर गुजर गयी। अब वो करसो हाय तोबा करणै लागगो। म्हे म्हारी खैतीबाड़ी करूँला कि इनने पालूँ पोषूंगा। जद खेती नी करूलाँ तो भूखो मर जाऊला। बंसत भाई रो नयो नयो ब्याव हुयो हो। बै आप री जोड़ायत ने बुलाई कि जद तूँ कवै तो आपाँ या बच्ची नै खोले (गोद) ले लेवा। बा हामी भरी जद ये आपरी जोड़ायत के सागै एक परतिज्ञा और करी कै भविष्य माँय आपां कोई नीजी सन्तान पैदा नी करालाँ।

तीसरा काव्य संत है भाई कवि माधव रामानुजम। इनाने सात्विक काव्य री रचना कर लोगाँ माय भोत चोखा विचार फैलाया है। उनने म्है भोत ध्यान देकर सुनु हूँ – उनारो बोलनो भी बिना रूके जारी है। एक फांसी कैदी है -

- जिकै ने फांसी देने रो हुकुम हो गयो है – उनने म्हें बोल्या देख। तै ने फांसी होवने सूँ अठै री अदालत सूँ तो तनै छुटकारो मिल जावेलो पर ऊपर आले री अदालत मांय तेरो विचार होवेलो ही। वे बोल्या – आप ई बतावो म्हें काँई करू? म्हें बोल्यो – तूँ अभी तक लोगां री जान लेयी है। कीन्नेइ जान देयी नी है तो कोई नै जान देकर जा। बो म्हेनै देखे लाग्यो – म्हें बोल्या – तूँ तेरी किडनी दान मांय दे दे – तो ऊनसूँ कोई नै जान मिल जावे ली। बो राजी राजी तैयार होगो। ऊँ आदमी रो किडनी डोनेट रो आपरेसन डा० त्रिवेदी री अस्पताल मॉय ई हुयो और भी बे बोल्या – अबी तीन दिन पैला सेठ स्रेणिक भाई कस्तूर भाई आपरै ट्रस्ट सूँ म्हा लोगा ने तीन लाख रुपया दिया कि म्हें पिछले हिन्दु-मुसलमान दंगा माय पीड़ित लोगाँ री मदद करूँ। ई रूपया सूँ म्हें लोग ७० परवारा नै तीन हजार कर कै पुनर्वास के लिए टापरॉ बनवाने रे वास्ते दिया है – मकान बनवाने मांय जिका आदमियाँ रो स्रम लागेरो 'वो मुस्लिम यूथ फोर हारमनी' आला बिना एक बी पीसो लिया देवेगा। ई काम माय म्हारा दो लाख दस हजार खरच हुया बाकी रा ४० हजार रूपया मानीता जनसेविका मृणालिनी साराभाई जिकी दंगा ग्रस्त लोगां माय भोत महत्व रा काम कर री है उनरी संस्था ने दे देवांगा। म्हे आदर जोग हरिभाई री बात भोत ध्यान देकर सुनर्‌यो हूँ। साच्याणी जन सेवा इन्ने के वै। कीं के प्रति आक्रोस नी गुस्सोनी जो कोई अन्याय अत्याचार कर्‌यो बो जानै। म्है तो पीड़ित लोगां रै सागे हाँ। म्हे ने आसा बन्धे कै गुजरात री भौम सद्‌विचाराँ री उपजाऊ भौम है, कै साबरमती माँय नरमदा रो पवित्तर पाणी ई बै रयो है, कै गांधी आस्रम माँय गुजरात रा महान संत नरसी मेहता रो भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाने है' री अनुगूंज ई सुनाई दे रयी है। ★★★

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
के
78 वें स्थापना दिवस
पर
हार्दिक शुभकामनाएं

वीणा खीरवाल
राष्ट्रीय सचिव

लता अग्रवाल
राष्ट्रीय अध्यक्ष

अखिल भारतीय मारवाडी महिला सम्मेलन
३०३, मिलेनियम टावर
आर रोड, बिस्टुपुर, जमशेदपुर

मेरे ही साथ क्यों?

– राम कुमार गोयल

मेरे ही साथ क्यों? कष्टों या समस्याओं के लम्बे दौर से गुजरने के बाद यह प्रश्न, हर जगह पर कचोटता रहता है। आम तौर से बार-बार पीछा करने वाले इस प्रश्न का उत्तर उस समय स्पष्ट हो जाता है, जब हम ***कर्म के नियम*** को समझ लेते हैं। जो कुछ भी प्रतिदिन हमारे साथ घटित होता है, उसके पीछे एक कारण होता है। प्रसिद्ध संत ***साधु वासवानी*** कहते हैं, "जैसा आप बोओगे, वैसा ही काटोगे।" आप कांटे बो कर सेब नहीं काट सकते। हम जीवन के खेत में प्रतिदिन बीज बो रहे हैं। हर विचार जो हमारे मस्तिष्क में आता है, हर वह शब्द जिसका हम उच्चारण करते हैं, हर वह कार्य जो हम करते हैं, हर वह भावना जो हमारे अन्तर्मन में उठती है, हर वह भाव जो हमारे भीतर जागृत होता है, सभी वे बीज हैं जिन्हें हम अपने जीवन के खेत में बोते हैं। कालान्तर में, ये बीज पौधों के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं और वृक्ष बन जाते हैं तथा कड़वे या मीठे फल पैदा करते हैं – जिन्हें हमें खाना पड़ता है।

स्वामी शिवानन्द कहते हैं, "पहाड़ मिट्टी के छोटे-छोटे कणों से बने होते हैं। सागर पानी की छोटी-छोटी बूंदों से बना होता है। इसी प्रकार जीवन अति सूक्ष्म विवरणों, कार्यों, वाणी तथा विचारों की असीम श्रृंखला है – चाहे वह अच्छी हो या बुरी या इसके परिणाम दूरगामी हों।" एक पुरानी कहावत है, "जब बालक पैदा होता है, वह अपनी किस्मत साथ लाता है। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक अपने कर्म लेकर आता है। एक ही परिवार में एक बेटा करोड़पति हो सकता है जबकि दूसरा इतना गरीब कि उसका परिवार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भोजन, वस्त्र, आवास तथा शिक्षा का मोहताज हो सकता है। यह उनके ***कर्म*** या ***भाग्य*** पर आधारित है।"

संतों ने हमेशा कहा है, "जब हम जन्म लेते हैं तो इस संसार में बन्द मुट्ठी लेकर आते हैं, जिनमें हमारा भाग्य बंद होता है और जब इस संसार से विदा होते हैं तो हम खाली हाथ जाते हैं।" किंतु मैं इससे सहमत नहीं हूँ। जब हम इस संसार से विदा होते हैं तो हमारे विचार, शब्द तथा क्रिया-कलाप, अदृश्य कर्म के रूप में हमारे साथ जाते हैं और वस्तुस्थिति यह है कि इनमें से कुछ तो बंद मुट्ठियों में अगले जन्म में हमारे साथ आ जाते हैं। हमें विचार करना चाहिये कि एक बालक स्वस्थ, सुंदर व बुद्धिमान क्यों पैदा होता है जबकि एक अन्य बालक विकलांग या दुष्प्रवृत्ति लेकर पैदा होता है। यह हमारे पूर्व जन्मों के विचारों, शब्दों तथा कर्मों का परिणाम है, जो हम जन्म के समय अपने साथ लेकर आते हैं।

विपत्ति में फँसा मनुष्य अपने भाग्य को कोसता है, किंतु वास्तव में भाग्य को दोष नहीं देना चाहिये, यह तो उसके अपने कर्मों का फल है। वर्तमान जीवन ही एकमात्र जीवन नहीं है, जिसे आप जी रहे हैं, यह उन अनगिनत जीवनों में से एक है, जो आपने अब तक जिए हैं। व्यक्ति जो आज भोगता है, वह उसके 'कर्म' का फल हो सकता है, जो उसने अपने किसी पूर्व जन्म में किया है। प्रभु ने बहुत सी प्राकृतिक सुविधाओ से युक्त सुन्दर, परिपूर्ण, खुशहाल तथा शांतिपूर्ण विश्व का निर्माण किया है ताकि इसमें रहने वाले जीव उसका उपभोग कर सकें। हम सब प्रभु के बालक हैं और प्रभु हम में से प्रत्येक को खुश, स्वस्थ, समृद्ध व सफल देखना चाहता है तथा वह यह भी चाहता है कि हम सभी उन अच्छी चीजों का आनन्द उठायें, जो उसने हमारे लिये बनाई हैं।

इसलिये आप स्वयं अपने भाग्य तथा अपने जीवन के निर्माता हैं। हर विचार, भावना, इच्छा, कार्य 'कर्म' का निर्माण करता है और हम हजारों, शायद लाखों वर्षों से कर्म करते आ रहे हैं। ***कर्म के सिद्धांत*** में ***बीज का सिद्धांत*** निहित है। युद्ध के मैदान में सामना करने के लिये हमें आत्मा की

शक्ति (***आत्म-शक्ति***) की जरूरत होती है। यह शक्ति शारीरिक शक्ति से अधिक महत्वपूर्ण है। ***भगवान श्रीकृष्ण*** ने ***भगवद्गीता*** के माध्यम से संदेश दिया है कि व्यक्ति का सबसे घातक दुश्मन 'इच्छा' है।

यीशु मसीह

प्रभु यीशु के ये शब्द अत्यंत सुंदर हैं, "मेरे पास प्रातःकाल में कुछ नहीं होता और रात्रि में भी कुछ नहीं होता। फिर भी मुझ से धनवान कोई नहीं है।" प्रभु यीशु हम सबमें सबसे धनी थे क्योंकि उनकी कोई इच्छा नहीं थी। हमें जीवन में आराम तथा खुशियों का श्रेय अपने अच्छे कर्मों को नहीं देना चाहिये और कष्ट या बुरी परिस्थितियों के लिये प्रभु को नहीं कोसना चाहिये। यही जीवन-चक्र है। खुशी तथा शांति से पूर्ण आरामदेह जीवन जीने का सबसे अच्छा तरीका है, संतोष।

प्रकृति का अपना तौर-तरीका है और यह उसके अनुसार काम करती है। प्रकृति का हर कार्य स्वचालित ढंग से होता है और कोई उसे चलाता नहीं है। जो व्यक्ति 'प्रकृति के मार्ग' का अनुसरण नहीं करता, उसे उसके परिणाम भुगतने पड़ते हैं। महान से महान संतों के वरदानों से भी इन परिणामों से कभी बचा नहीं जा सकता, सिवाय उस वरदान कि संत हमें सहिष्णुता का वरदान दें। प्रभु प्रेम का प्रेम है। वह हमें कष्ट कभी नहीं भेजेगा, जब तक कि वह हमारे लिये अच्छे न हों। शारीरिक एवम् अन्य व्याधियाँ निरुद्देश्य नहीं होती। वे हमें ***दिव्य जीवन*** में विकसित होने का सबक सिखाती हैं। यदि हम खुशहाल जीवन जीना चाहते हैं तो हमें अच्छे विचारों, अच्छे शब्दों तथा अच्छे व्यवहार के बीज बोने चाहिये।

अपने मुखमंडल पर मुस्कान रखिये – अपने भीतर प्रेम व विश्वास के साथ, तो जीवन स्वर्ग के समान बन जायेगा। ***जीवन एक सफर*** है। जैसे एक उद्वेलित नदी धने जंगलों, पहाड़ी क्षेत्रों तथा पर्वतों से टकराते हुये अपने बहाव के साथ मार्ग बनाते हुये समुद्र में विलीन हो जाती है, उसी प्रकार जीवन भी ***झूले से कब्र*** की ओर अग्रसर हो रहा है।

जीवन के सफर को मिट्टी की बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक गहरी कंदरा का प्रतिरूप माना जाता है। पानी इन कंदराओं के बीच से अपने मार्ग की रुकावटों को पार करता हुआ बहता है। कंदराओं के बीच से बहता हुआ पानी स्वयं को नये भूमि प्रदेश के अनुकूल बनाता है तथा भंवर जैसी सभी अज्ञात रुकावटों से जूझता हुआ आगे बढ़ जाता है। कंदरा के बीच से गुजरते हुये पानी के समान दृढ़ तथा लचीले बन जाइये। ऐसा करने से आप सफलता-दर-सफलता प्राप्त कर सकते हैं। पानी का अनुकरण करने का अर्थ है, यह जानना कि संरक्षा व प्रगति के लिये परिस्थितियों का उपयोग कैसे किया जायेगा।

एक लोहार था। वह प्रभु से असीम प्यार करता था, जबकि उसे अनेक कष्टों व रोगों का सामना करना पड़ता था। उसका एक परिचित नास्तिक था। एक दिन उसने लोहार से पूछा, "जो प्रभु आपके लिये इतनी तकलीफें व रोग भेजता है, उस प्रभु पर आप कैसे विश्वास करते हैं?" लोहार ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "जब मुझे कोई औजार बनाना होता है तो मैं लोहे का एक टुकड़ा लेता हूँ और उसे आग में रख देता हूँ। इसके बाद मैं इसे निहाई (लोहे को कूटने के लिये लोहे का एक बड़ा टुकड़ा) पर रखकर कूटता हूँ और यह देखता हूँ कि यह सख्त होता है या नहीं। यदि यह सख्त हो जाता है तो मैं उससे कोई उपयोगी चीज बना लेता हूँ। यदि नहीं होता है तो मैं उसे कचरे (स्क्रैप) के ढेर में फेंक देता हूँ।" उसने कहा कि यह प्रक्रिया मुझे प्रभु की बार-बार प्रार्थना करने की प्रेरणा देती है कि हे भगवान! मुझे कष्टों की अग्नि में रखिये किंतु मुझे कचरे के ढेर में मत फेंकिये।

परमपूज्य दादा साधु वासवानी कहते हैं, "प्रत्येक महान आदमी को कष्ट सहन करने पड़ते हैं। भगवान कृष्ण, भगवान राम, भगवान बुद्ध तथा प्रभु यीशु को भी मौत की परछाइयों वाली घाटियों से गुजरना पड़ा था। हम बोलने वाले कौन होते हैं? राम दुःख, मानसिक वेदना तथा शारीरिक वेदना से कैसे बच सकते हैं? जो बुराई आप करते हैं, वह आपके साथ रहती है; जो अच्छाई आप करते हैं, वह लौटकर आपके पास आती है।" वे आगे कहते हैं, "आपके जीवन का सिद्धांत होना चाहिये – ***जीने का अर्थ है देना***।

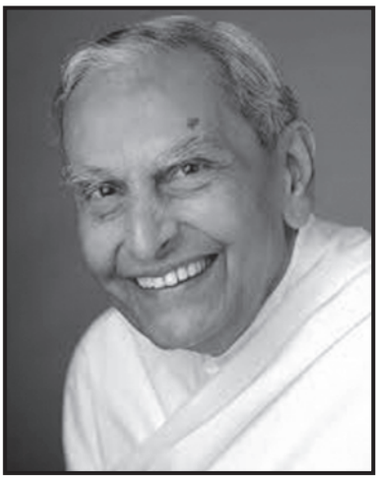

दादा साधु वासवानी

जीवन में कुछ बातें होती हैं, जिन्हें हमेशा आसानी से बदला जा सकता है। किंतु हम उन्हें बदलने के लिए समय ही नहीं देते। हम शिकायत करते रहते हैं। किंतु जब परिवर्तन का समय आता है, हम आमतौर से लम्बी सांस लेते हैं और उसके बाद कहते हैं, "परेशानियों की हद हो गई!" उसके बाद हम शिकायत करते रहते हैं, "मेरे साथ ही ऐसा क्यों? मेरे साथ ही ऐसा क्यों?" प्रसन्नचित्त व बुद्धिमान लोग शिकायत नहीं करते। वे अवसर पर अधिकार जमाते हैं। कई बार हम देखते हैं कि अच्छे लोग कष्ट भोगते हैं और बुरे लोग मजे लूटते हैं। इस संदर्भ में आश्चर्यजनक सच्चाई यह भी है कि जो व्यक्ति दूसरों के प्रति घृणा ईर्ष्या, लालच, अहं तथा कुत्सित भावनायें रखता है, वह भी अपने आपको अच्छा इंसान समझता है। कुछ लोग यह सोचते हैं कि ईमानदार, विनम्र, परिश्रमी, दूसरों का शोषण न करने वाले, जरूरतमंदों की सेवा के रूप में समाज सेवा करते हुये, तीर्थ यात्रा व प्रभु की प्रार्थना करते हुये भी उन्हें कष्ट क्यों उठाने पड़ रहे हैं। जीवन में कुछ खराब घटनायें होती रहती है और यह जीवन का एक भाग है।

लोग हमारी समस्याओं को सुनना नहीं चाहते बल्कि हमसे अपेक्षा करते हैं कि हम उनकी समस्याओं पर गौर करें। हम यह मानकर कि ईश्वर ने हमें बनाया है, प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं और यह आशा रखते हैं कि वह हमारी प्रार्थना सुनेगा व हमारी समस्याओं व परेशानियों को हल कर देगा। कभी शिकायत मत करो! जीवन वास्तव में सीधा-सादा है बशर्ते कि आप यह याद रखें कि आपकी परेशानियाँ आपके अपने कर्मों का फल हैं। शिकायत करने की बजाय कल्पना करें कि आप अपने जीवन को किस प्रकार से बदलना चाहते हैं। आपकी कल्पना आपकी प्रार्थना है। हर कार्य से पहले, एक सुविचारित निर्णय लें और उद्घोष करें, ***मैं इस आश्चर्यजनक यात्रा का आनंद उठाऊँगा***। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप यात्रा का आनंद उठाना चाहते हैं या नहीं।

अनुभव वह नहीं है जो आपके साथ घटित होता है। अनुभव वह है जो आपके साथ घटित होने वाली घटनाओं के प्रति आप करते हैं। प्रतिदिन आप अपने गंतव्य के निकटतर चलते जाते हैं; आपका गंतव्य है, प्रभु। प्रभु केवल गंतव्य ही नहीं है, आपका मार्ग भी है।

अतः, इस यात्रा, जिसे ***जीवन*** कहते है, का आनंद उठाइये। जीवन में हर कदम पर प्रभु आपके साथ है। आप स्वयं सोचिये! आपको पता चल जायेगा कि प्रभु ने आपको जीवन में कितने वरदान दिये हैं। "मेरे साथ ही क्यों?" प्रश्न के प्रति प्रभु के उत्तर को समझिये। प्रभु हमें कभी भी इतने कष्ट नहीं देगा कि हमारा विश्वास उठ जाये।

जीवन एक नदी के समान है। आप उसी पानी को दोबारा नहीं छू सकते क्योंकि जो बहाव बह गया है, वह फिर से लौटकर नहीं बहने वाला है। अतः अपने जीवन के हर क्षण का ध्यान रखिये।

(लेखक सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं।)

With Compliments & Best Wishes
for Success of
78th Foundation Day Function
of A.I.M.F.

Consolidately Yours
Akash Goenka
Secretary- U.P. AIMF, Kanpur
Goldiee House, 51/40, Nayaganj, Kanpur (UP)

With Best Compliments :

Sunirman Towers Pvt. Ltd.

2, Rowland Road
Kolkata - 700 020
Phone : 30520518/3052 1232
Emial : niddhisiddhidevelopers@gmail.com

मारवाड़ी सम्मेलन की जीवन यात्रा : क्या खोया क्या पाया

– डॉ० श्यामसुन्दर हरलालका

राष्ट्रीय स्तर पर मारवाड़ी सम्मेलन की यात्रा सन् १९३५ में असम के प्रसिद्ध शहर डिब्रूगढ़ से प्रारंभ हुई, जो निरंतर अविराम चल रही है। इस यात्रा में बहुत से पड़ाव आये, कई नये साथी मिले और पुराने बिछुड़ गये। प्रवासी मारवाड़ी समाज विरासत में अपनी वेश-भूषा, रिवाज, खान-पान, भाषा, संस्कृति की एक अनमोल सौगात साथ लेकर मूल राजस्थान, हरियाना और मालवा की भूमि को अलविदा कहकर एक अनजान और नये रास्ते पर निकल पड़ा, एक नये आसमां की तलाश में।

भिन्न-भिन्न भाषा, संस्कृति, मान्यता, खान-पान, रीति-रिवाजों के बीच समाज अपने आप को अकेला पाकर अपरिचित वातावरण में असहज अनुभव करने लगा। फलतः तत्कालीन समाज ने संगठन की आवश्यकता को महसूस किया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद धन के प्रवाह से समाज में आर्थिक सम्पन्नता का शुभारंभ तो हुआ, लेकिन दूसरी और नैतिक और जीवन मूल्यों के गिरावट ने भी दस्तक देना प्रारंभ कर दिया है।

सम्मेलन ने अपनी यात्रा के दौरान शिक्षा-प्रसार, घूंघट प्रथा-उन्मूलन, विधवा विवाह को मान्यता और बुद्धिजीवी वर्ग के लिए वातावरण तैयार करने हेतु वैचारिक क्रान्ति को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दिया। नारी शिक्षा पर जोर देते हुए समाज ने बालिका विद्यालय व महाविद्यालयों की स्थापना के लिए प्रोत्साहन देकर समाज की नारी जाति को शिक्षित कर एक नये समाज की संरचना की। युवा वर्ग को एकजुट करके मजबूत शक्ति के रूप में परिणित करने के लिए बहुत बड़ा प्रयास किया। १९७८ – पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के अष्टम अधिवेशन में इन पंक्तियों के लेखक के सद्-प्रयासों से एक प्रस्ताव पारित कर समिति भी गठित की गई थी।

स्वाधीनता के बाद विभिन्न प्रदेशों में आर्थिक क्रान्ति में प्रवासी मारवाड़ी समाज ने सक्रिय भागीदारी को निश्चित करने के प्रयासो में स्थानीय समाज के साथ समरसता को प्राथमिकता देने में अवहेलना की। फलस्वरूप वैमनस्यता, तनाव और हिंसक संघर्ष की ओर उनका मार्ग प्रशस्त किया।

समाज पर विभिन्न प्रदेशों में आक्रमण हुआ। जबरन धन वसूली के लिए सदाव मारवाड़ी समाज को निशाना बनाया जाता रहा है। सम्मेलन ने जातीय संघर्ष की स्थिति में समय-समय पर केन्द्र व गृह-राज्यों में ऊँचे स्वरों में विरोध दर्ज किया, फलस्वरूप आशाजनक परिणाम भी सामने आये।

नारी शिक्षा में आशातीत प्रगति से स्वावलंबन में वृद्धि हुई, फलस्वरूप यह आर्थिक क्रान्ति व भोगवादी संस्कृति के युग में नारी स्वावलंबन समयोचित है। बदलते सामाजिक और आर्थिक परिदृष्य में संयुक्त परिवार बिखरने लगे और रह गये केवल एकल परिवार, जो जीवन की भाग-दौड़ में संतानो को संस्कार देने में भी असमर्थ रहे। जीवन साथी चुनने के लिए संतान स्वयं स्वतंत्र निर्णय लेने लगी, एवं अभिभावक बेवसी का राग अलापते हुए मौन सहमति देकर सामाजिक मान्यता के घेरे में ला खड़ा किए। मानसिक विचारों की विषमता, भोगवाद के प्रति उत्कंठा, दाम्पत्य जीवन में आये बिखराव के कारण पति-पत्नी के बीच दूरियाँ बढ़ने लगीं और परिणामस्वरूप तलाक और परित्यक्ताओं की संख्या में बाढ़ सी आ गई।

परित्यक्ताओं की समस्या के साथ उन बेबस, लाचार शिशुओं को भोगना पड़ता है जमाने भर के दुःख व यातना। फलतः उनमें से अच्छे नागरिक के जन्म की आशा क्षीण हो गई है। मारवाड़ी समाज विभिन्न वर्गों में बँटा हुआ है। जैसे जैन, अग्रवाल, ओसवाल, माहेश्वरी, जाट, माली आदि जिनके रीति रिवाज, धर्म, खानपान, भाषा में कुछ भिन्नता है। फलस्वरूप उनके अपने संगठन हैं, जिसका वे संचालन स्वयं करते हैं। शिक्षा के प्रसार व नारी जाति के जीविकोपार्जन के लिए बाहरी दुनिया में प्रवेश के साथ-साथ लड़के-लड़कियों में मेल-जोल, प्रेम-प्रसंग का स्वछन्द यौनाचार, नशीले पदार्थों का सेवन बढ़ रहा है। अभिभावक मूक दर्शक की भांति संतान की जिद्द के समाने घुटने टेक चुका है। इस परिवर्तन

के फलस्वरूप समाज अंतर्जातीय विवाह की राह पर दौड़ने लगा, जिसमें दहेज का कोई स्थान नहीं है। पारिवारिक बंधन टूटने लगे, रिश्तो के मायने बदलने लगे।

मारवाड़ी समाज के मौलिक संस्कार – सदाचार, इमानदारी, विश्वसनीयता, सादगी, सरलता, लगनशीलता व कठोर परिश्रम द्रुतगति से अलविदा हो रहे हैं, जिसकी नींव पर समाज ने मारवाड़ी अर्थ व्यवस्था व व्यापार जगत में अपनी एक आकर्षक छवि बनाई थी। मजबूत धरातल के अभाव में भवन की नींव कभी भी गिर सकती है। चरित्र-निर्माण ठोस संस्कारों की धरती पर जन्म लेता है। मजबूत इरादेवाले ही इसे पा सकते हैं। इसी से समाज को बल मिलता है। आने वाले दिनों में भी संस्कार, नैतिकता, चरित्र निर्माण आदि प्रासंगिक होंगे।

दहेज, आडम्बर, दिखावा, फिजुलखर्ची, अंतर्जातीय विवाह, परित्यक्ताओं की बढ़ती कतार, कन्या-भ्रूण-हत्या, युवकों में उग्ररूप से बढ़ता हुआ भोगवाद, विलासिता आदि सामाजिक समस्या के चिंतन-बिंदु होंगे जिस पर हमें एक ठोस दिशानिर्देश देना होगा। अतर्कलह से परिवार में बढ़ते तनाव, अनबन व महिलाओं के प्रति बढ़ती घरेलू हिंसा, प्रताड़ना के कारण आत्महत्या या हत्या एक घिनौना व कलंकपूर्ण अध्याय है, जिस पर समाज की आत्मा को उद्वेलित करना होगा। हम नहीं चाहते मधु या रितिका जैन जैसे हत्याकाण्ड की पुनरावृति हो। इसकी रोकथाम सिर्फ कानून के दण्ड विधान से होना संभव नहीं है। इसके लिए आवश्यक है संस्कारों के कठोर धरातल पर सामजिक ढाँचे को पुनः स्थापित करना।

प्रवासी मारवाड़ी समाज को आनेवाले दिनों में अपनी पहचान बनाये रखने के लिए अपने संस्कारों के साथ-साथ अपनी संस्कृति, भाषा, खानपान, वेषभूषा, आत्मीय-परिजनों के प्रति उदारता, गरीबों के प्रति दया, समाज हित कार्यों के प्रति उत्तरदायित्व, आध्यात्मिक कार्यों के प्रति सम्मान, स्वास्थ के प्रति जागरूकता, स्थानीय समाज की भाषा-संस्कृति के प्रति समरसता का भाव, सामाजिक व राजनैतिक सुरक्षा के प्रति चेतना को जागृति करना होगा।

(लेखक पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष हैं।)

With Best Compliments from:

BALAJEE
ENTERPRISES

(Mfg. of High Class Cotton Hosiery Goods)

15/2, Galif Street, Kolkata - 700 003
Phone : 2530 2055 (M) 94330 07710

With Best Wishes

सन्मार्ग

www.sanmarg.in

पूर्वी भारत का सर्वाधिक
लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

" Khabre Anek Sachai Ek "

*94% of Hindi Readers read Sanmarg * IRS*

Circulation : 1,10,491 as per ABC

(January - June 2012)

Address : Sanmarg Bhawan

160B, C.R. Avenue. Kolkata - 700007

Contact No : 7101 5021, 7101 5026

Email : ads@sanmarg.in, editorial@sanmarg.in

& reporting@sanmarg.in.

Fax : 9883999432 (reporting), 9883777432 (Ads)

Jharkhand, Bihar, Orissa, Bengal

With Best Compliments from :

JAI BHARAT COMMERCIAL CORPORATION

23/24, Radha Bazar Street
3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phones : 2242 5889, 2242 7995, 2231 8944
Fax : 2242 9813
Email : jbccsonthalia@yahoo.com

With Best Compliments from :

KISWOK INDUSTRIES PVT. LTD.
An ISO 9001 Company
Manufacturers & Exporters of:-
Automobile Castings, Ductile Iron & Grey Iron Castings

Head Office: 11, Brabourne Road, Kolkata – 700 001,
Ph: (033) 2242 7920/7921,Fax: (033) 2242 5487
Email: info@kiswok.com,Web: www.kiswok.com

Factory:-

1: Bipranna Para, Via- Begri, Domjur, Howrah 711411
Ph: (033) 2669 6658/59/60, Fax: (033) 2669 6661

2: 62/1, Bhattanagar, Luluah, Howrah 711203,
Ph: (033) 2651 9107

3: 1, Kundan Lane, Liluah, Howrah 711204
Ph: (033) 2645 6892

मारवाड़ी समाज : हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी?

– विजय कुमार गुजरवासिया

अपने मारवाड़ी समाज को मर्यादित परम्पराओं, मान्यताओं, काम करने की कुशलता, सच्चाई आदि दिव्य गुणों के कारण विशेष स्थान प्राप्त रहा है। चकाचौंध वाली पाश्चात्य शैली के पीछे चलने में हमारे समाज की जीवन शैली, इसकी समरस्ता, इसकी जागरूकता किस रूप में है, कितनी सशक्त है, आगे बढ़ रही है अथवा नीचे गिर रही है, आज यह अत्यन्त ही विचारणीय प्रश्न है।

सादगी, सद्विचार, परदुखकातरता लेकर हमारे पुरखे अपनी जन्म-भूमि से दूर आकर प्रवासी जीवन व्यतीत किए। उस समय धन की कमी कष्टप्रद यातायात, सीमित संसाधन रहते हुए भी उन्होंने अपनी लगन, धर्मनिष्ठा, सच्चाई एवं विलक्षण व्यावसायिक बुद्धि से समाज को प्रभावयुक्त सम्पन्नता के उच्च शिखर पर पहुँचाया। उनका आदर्श था सर्वेभवन्तु सुखीनः। एक दूसरे की सहायता करना, सुख दुख में शामिल होना, दिखावा और आडम्बर से दूर रहना, स्थानीय वातावरण में घुल मिलकर रहना और सामाजिक समरसता बनाये रखना उनके मूलमंत्र थे। निर्धारित नैतिक नियमों को सभी मानकर चलते थे। लोग समाज से डरते थे। पाप पुण्य का विचार था पारिवारिक समरसता बनी रहती थी।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। यातायात के साधन बढ़े। नये आविष्कारों ने जीवनशैली को आरामप्रद बना दिया। सम्पन्नता और साक्षरता बढ़ी, मारवाड़ी समाज सिर्फ व्यवसाय में ही नहीं बल्कि अन्याय क्षेत्रों में भी किसी से पीछे नहीं रहा, किन्तु ज्यों ज्यों आर्थिक उन्नति हुई त्यों त्यों सामाजिक चेतना अवनत होती गई। सामाजिक नियमों की आज खुले आम अवहेलना हो रही है। पाश्चात्य आधुनिकता की चकाचौंध में हमारी मान्यताएँ, परम्परायें, धार्मिक निष्ठाएँ, चारित्रिक सौम्यता एवं समरसता धराशाई हो रही है। पुरानी पीढ़ी के आदर्शों को अप्रासंगिक कहने में नई पीढ़ी शान समझती है।

धन का भौड़ा प्रदर्शन, वहशियाना मनोवृत्तियों का नंगा नाच, पारिवारिक कलह, अनर्गल कारणों से विवाह-विच्छेद आदि चिन्तनीय विषय है। अधोपतन के इस रूप को देखकर और आँखों पर पट्टी बाँधकर समाज कब तक मौन साधे रह सकता है? समाज की छाती पर मूंग दलने की लोमहर्षक घटनाओं को किस हद तक बर्दास्त किया जा सकता है? रिश्तों नातों की खुलेआम अवहेलना, परदुखकातरता का अभाव, बड़े बुजुर्गों के अनादर की चरम सीमा, कब तक सही जाती रहेगी? हमें मिलजुलकर भटकते समाज को पुनः प्रतिष्ठित करना होगा, भूले भटको को राह दिखानी होगी, सामाजिक और राजनैतिक चेतना को जगाना होगा, भाईचारे का पाठ पढ़ाना होगा।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का होली मिलन कार्यक्रम

पर्दा प्रथा, बाल विवाह प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, अंधविश्वास, अशिक्षा आदि समस्याएँ दूर हुई किन्तु आज जो नई समस्याएँ समाज के सामने मुँह बाए खड़ी हैं उन्हें कैसे रोका जाय, यह हम सभी को मिल-बैठकर विचार करना होगा और उनके निराकरण के उपाय करने होंगे। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन इन ज्वलन्त प्रश्नों के समाधान के लिये निरन्तर प्रयत्नशील है। सबसे प्रमुख समाधान है - समाज को पूर्ण संगठित होना, समरस होना,

सचेतन होना और भावी पतन की आंधी को रोकने के कारगर उपाय लागू करना।

विगत २१-२२ जुलाई २०१२ को राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों के २ दिवसीय संयुक्त सम्मेलन का आतिथ्य भार सम्हालते हुए हमने एक नाम, एक संविधान एवं एकल सदस्यता का भरपूर समर्थन किया। राजस्थान एवं हरियाणा के प्रवासी मारवाड़ी बंधुओं की कलकत्ता स्थित प्रायः सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों को एकजुट एवं एकमत करने के प्रयास में आमंत्रित करके एक सितम्बर २०१२ को एक संगोष्ठी की। समाज को सोई हुई अवस्था से जागृत करने के लिये इस प्रकार की संगोष्ठियाँ, सेमिनार और सभाएँ अधिक से अधिक हों इस प्रकार का प्रयास करना है।

हमारे समाज की परम्परा थी कि जब भी किसी व्यक्ति के ऊपर लक्ष्मीजी की कृपा होती थी तो वह सबसे पहले समाज के बारे में सोचता था। विद्यालय, धर्मशाला, औषधालय, गौशाला आदि बनाने अथवा उनके योगदान करने का विचार सबसे पहले आता था। विवाह आदि मांगलिक कार्य सम्पन्न होने पर संस्थाओं को आर्थिक अनुदान देने का प्रचलन था। मेरे विचार से सामाजिक संरचना को मजबूत करने के लिए इस प्रथा को पुनर्जीवित करना चाहिए। ब्याह-शादी में लाखों करोड़ों खर्च करनेवालों को सामाजिक संस्थाओं को भी यथासाध्य अर्थदान करना चाहिए। भक्ति मन में होती है दिखावे व आडम्बर में नहीं। धार्मिक आयोजनों में धन का भौड़ा प्रदर्शन और अनावश्यक खर्च रूकना चाहिए। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, गौशाला, वैज्ञानिक अनुसंधान, वैकल्पिक रोजगार, प्याऊ धर्मशाला एवं परोपकार के स्थाई कार्यों पर अधिकाधिक खर्च होना चाहिए। कविवर दिनकर जी ने लिखा है -

"भागी जाती ज्योति, ज्ञान करता किसकी रखवाली है,
सब कुछ पाकर भी मनुष्य क्यों इतना खाली खाली है?"

हमारा समाज कर्मप्रधान न होकर अर्थप्रधान हो गया है, इसलिए मानसिक तनाव से ग्रस्त है। धनोपार्जन करना बुरी बात नहीं है किन्तु सिर्फ अपने और अपने परिवार के भौतिक सुखों पर ही केन्द्रित रहना अच्छा नहीं है। दीन-दुखियों और कमजोरों की सहायता करके जो सुख-शांति मिलती है वह अवर्णनीय है।

'जीयो और जीने दो' मारवाड़ी समाज का मूल सिद्धान्त रहा है। पश्चिमी सभ्यता की अवधारणा 'खाओ, पियो, मौज करो' ने हमारे सामाजिक ढाँचे में घुसपैठ कर ली और नैतिक संरचना को छिन्न-भिन्न कर दिया। आये दिन तलाक हो रहे हैं, बुजुर्गों का अनादर हो रहा है बूढ़े माँ-बाप उपेक्षित और निराश्रित हो रहे हैं। फैशन की अंधी दौड़ में लज्जा तिरोहित हो रही है।

चाँद कवि के शब्दों में -

"पागड़ी तो माथां स्युं गमी, नाड़ पण ऊँची तो राखो।
कमी कपडैरी कोनी है, लाज नै ढापी तो राखो।"

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का कम्प्यूटर शिक्षण केन्द्र

मेरा मानना है कि देश-विदेश भ्रमण करें, किन्तु अपनों को, अपने समाज को, अपनी जन्मभूमि को नहीं भूलें। सुख सुविधाएँ अपनाएँ किन्तु माता पिता एवं बुजुर्गों को भी ससम्मान साथ रखें। अंग्रेजी एवं अन्य भाषाएँ सीखे, लेकिन मातृभाषा राजस्थानी को न भूलें। नए आविष्कार अपनाएँ, कम्प्यूटर में पूर्ण प्रशिक्षित हों, वाणिज्य-व्यवसाय और बढ़ावें, स्त्रीशक्ति को और सशक्त करें, युवाशक्ति को जोड़ें, राजनैतिक शक्ति अर्जित करें। हमारी संस्कृति हमारी परम्पराएं हमारी मान्यताएँ हमारे सद्‌गुण, हमारे समाज की अमूल्य धरोहर है - इन्हें हमें कभी भी नहीं भूलना है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी के शब्दों में -

"हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी?
आओ विचारे बैठकर ये समस्याएँ सभी।"

(लेखक पश्चिम बंग प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष हैं।)

धर्म व सेवा के नाम पर आडम्बर, दिखावा, शोहरत.....

जी हाँ, यह सब विष बेल की नाईं वर्ग विशेष के कुछ धनाढ्यों में बढ़ती जा रही है, सुरसा के विकराल मुख की तरह। प्रश्न है क्या यह भगवत्प्राप्ति व भवबन्धन से छुटकारा पाने का साधन है?

एक तरफ तो भाग्यशाली प्रभु-पुत्रों की अकूत विलासिता-सम्पन्नता, तो दूसरी ओर 'शापित प्रभुपुत्रों' की अन्न के दाने कूड़ों के ढेर से चुनने की कष्टकारी विपन्नता! धार्मिकता के नाम पर (यानि भगवत्व प्राप्ति हेतु) भागवत, रामायण, देवी-देवता, पाठ-पूजन, शत-सहस्र कुंडलीय यज्ञानुष्ठान आदि आयोजित हो रहै हैं.... विशाल पंडाल, दिव्य साज-सज्जा, कई-कई तरह के उपकरण-व्यवस्था — दिव्य शब्दावलि अलंकृत उपाधिधारी श्री १०८, श्री श्री १००८ के अमृत वर्षी प्रवचन कर्ता, निष्णात् पंडितगण पूर्व-निर्धारित विपुल राशियों के विनिमय में अवतरित होते हैं (पंडित स्त्रियाँ भी) – आकर्षक वेश-भूषा, आभूषण इतने मानों दूकानों की शोरूम हों....।

उन परोपकारी संतों के लिए धर्मप्राण भक्तजन खर्चीले आकर्षक निमंत्रण-पत्र व समाचार पत्र-विज्ञापन (जिसमें १०० तक भक्तों के नाम भी होते हैं) – आमंत्रित सिद्ध संतों की उपाधियाँ व गुणगाथा भी अकल्पनीय होती हैं - एक हैं (हिन्दी समाचार-पत्र से उद्धृत) सिद्धि सम्राट गुर्वानंद जी ईश्वरीय सत्ता से विभूषित एक अवतरित महामानव कहलाते हैं, विश्व की २७ प्रकार की ज्योतिष का पूर्ण ज्ञान हैं उन्हें, वर्तमान में सर्वोत्तम सिद्धियों से सिद्ध आत्मा, जो भाग्य पढ़ते ही नहीं, भाग्य बदल भी सकते हैं.... वे ऐसे सद्गुरु हैं जो आत्मा में परमात्मा करवा कर भगवत्ता प्राप्त करा देते हैं..... भूत, भविष्य, वर्तमान को जानने के लिए सातों कुंडलिनी जागृत कर प्रबल शक्तियों को प्राप्त कर चुके हैं.... १७०३ तांत्रिक सिद्धियों का पूर्ण ज्ञान आदि आदि....। विश्वसनीय है न? इस प्रकार के मिलते-जुलते कार्ड व विज्ञापन प्रायः देखने में आते हैं, अस्तु!

इधर में हर प्रकार सुविधा-विलास के क्रूज व वायुयानों में आयोजक कथा-पाठ आदि नामी-गिरामी कई उपाधियों से युक्त पीयूष वर्षी विद्वानों के द्वारा मोक्ष के द्वार की कुंजी (आशीष) प्राप्त कर रहे हैं।

वास्तविक धर्म-कर्म व सेवा-कर्म को जो थोड़ा कुछ पढ़ा-जाना है –

• अच्छा बनो अच्छा करो • पर हित सरिस धरम नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई • परोपकाराय पुण्याय, पापाय पर पीड़नम् • सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भागभवेत • मानव की पीड़ा में यथासम्भव सहायक हों, दूर करें • प्राणिमात्र में ईश्वरीय तत्व है • धार्मिकता व सेवा भावना हेतु मन की शांति ईश्वरीय सम्पदा है, सांसारिक बंधन से मुक्ति है • सुविधा हो तो यथाशक्ति उसका उपयोग वंचितों के लिए अस्पताल, स्वास्थ्यकेन्द्र, शिक्षा-दीक्षा, बुनियादी आवश्यकताओं के लिए होम करना है • त्याग से अधिक कुछ नहीं • मानव-सेवा, मानव कल्याण ही ईश्वर पूजा है।

चेतो बंधु यही धर्म का मार्ग है, प्रभु का मार्ग है। झूठ, कपट, लोभ, अहंकार, आडम्बर आदि का त्याग करके ही प्रभुधाम में जा सकोगे।

(विनम्रता पूर्वक निवेदन है किसी व्यक्ति/समाज की धार्मिक पूजा-पद्धति, विचारों के प्रति किंचित मात्र भी चोट पहुँचाना नहीं है। ज्ञातव्य होगा पाठकों को हमारे देश व विशेषकर विदेशी कुबेरपति अपनी आपार-आय-सम्पत्ति का अधिकांश समाजसेवा व कल्याणार्थ प्रदान कर शान्ति, यश-कीर्ति व प्रभु-स्नेह प्राप्त कर रहे हैं – उनको प्रणति!)

- श्यामसुन्दर बगड़िया
कोलकाता

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : 2210-3480, 2210-3485
Fax No. : 2231-9221
e-mail : roadcargo@vsnl.net

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

अम्बु शर्मा को सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार

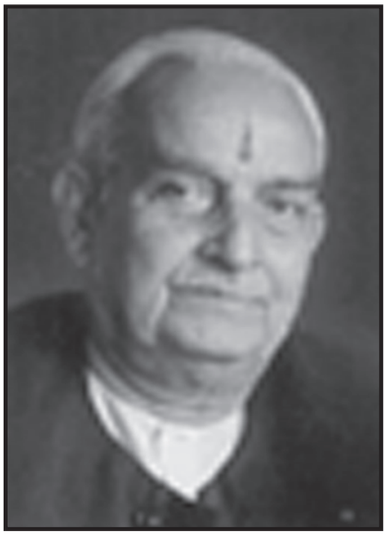

श्री अम्बु शर्मा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा प्रत्येक वर्ष स्थापना दिवस पर दिया जाने वाला सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार इस वर्ष २५ दिसम्बर २०१२ को ज्ञान मंच सभागार में राजस्थानी भाषा के मूर्धन्य साहित्यकार श्री अम्बु शर्मा (महमिया) को दिया जायेगा। पुरस्कार के तरत २१ हजार रुपये, शॉल व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। इस आशय का निर्णय सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार निर्णायक मंडल की कोलकाता में हुई बैठक में लिया गया। बैठक की अध्यक्षता श्री रतन शाह ने की। बैठक में सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, निवर्तमान अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा, उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, महामंत्री श्री संतोष सराफ, श्री जुगल किशोर जैथलिया के अलावा कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया व संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका उपस्थित थे।

गौरतलब है कि १ नवम्बर १९३४ को राजस्थान के झुंझनूं में जन्में श्री शर्मा ने स्कूली शिक्षा के दौरान ही राजस्थानी भाषा में लेखन आरंभ कर दिया था। राजस्थानी भाषा में अम्बू रामायण की रचना कर आपने काफी ख्याति अर्जित की। इसके अलावा वर्षों से आप राजस्थानी भाषा में नैणसी पत्रिका का सफल संचालन सम्पादन कर रहे हैं।

सम्मेलन की जोरहाट शाखा का दीपावली मिलन

मारवाड़ी सम्मेलन की जोरहाट शाखा द्वारा गत् दिनांक १४ नवम्बर २०१२ को दीपावली मिलन समारोह का आयोजन बड़े ही धुमधाम तथा हर्षोल्लास के साथ श्री मारवाड़ी ठाकुरबाड़ी के प्रांगण में किया गया। पिछले लगभग १५ वर्षों से मारवाड़ी सम्मेलन की जोरहाट शाखा द्वारा आयोजित होली एवं दीपावली मिलन समारोह, समाज के लिये एक अनूठा उदाहरण रहा है। होली एवं दीपावली मिलन समारोह सामूहिक रूप से मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा करने का निर्णय श्री मारवाड़ी ठाकुर बाड़ी स्थित सभी विवाह भवन की संस्थाओं (अग्रवाल सभा, महेश्वरी सभा, दिगम्बर एवं श्वेताम्बर सभा) द्वारा संयुक्त रूप से लिया गया था और तभी से यह कार्यक्रम अनवरत बिना किसी रुकावट के चल रहा है।

कृपा

हे ईश्वर!
तुमने जो मुझे दिया, और, तुमने जो मुझे नहीं दिया
और, जो तुमने मुझे देकर, वापस ले लिया,
उस हर एक बात के लिए, मैं तुम्हारा आभारी हूँ।
क्योंकि,
जो तुमने मुझे दिया वो तुम्हारी "दयालुता",
जो तुमने मुझे नहीं दिया, उसमें मेरी "भलाई",
जो तुमने मुझे देकर, ले लिया, वो मेरी "परीक्षा",
हे प्रभु! मेरी दृष्टि ऐसी बनाए रखना,
जिससे मुझे हर स्थिती में,
हर परिस्थिति में, हर पल में,
तुम्हारी कृपा का दर्शन होता रहे।

– श्याम सुन्दर खेमाणी
कोलकाता

SKIPPER PRODUCTS

SKIPPER Limited

Skipper Limited has successfully optimized its integrated value chain to consistently create a spectrum of quality-managed products through an expanding production infrastructure for the domestic and overseas markets.

MS & GI PIPES | PVC PIPES | SWR PIPES & FITTINGS
SWAGED POLES | HIGH MAST POLES | OCTAGONAL POLES
TRANSMISSION TOWERS | TELECOM TOWERS
SCAFFOLDING SYSTEMS | TRENCHLESS DRILLING

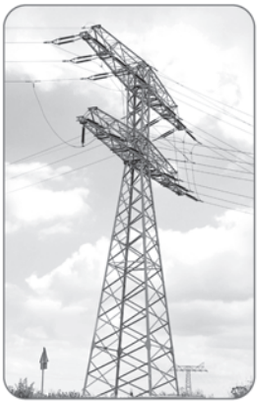

a4creations.com

Skipper Limited, 3A Loudon Street, Kolkata 700 017, P 033 2289 5731, E mail@skipperlimited.com, W skipperlimited.com

सम्मेलन की कानपुर शाखा के दीप पर्व मिलन समारोह में मेधावी छात्र पुरस्कृत

-

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कानपुर शाखा द्वारा १८ नवम्बर २०१२ को अग्रसेन स्मृति भवन, मेस्टन रोड, कानपुर में दीप पर्व मिलन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी उत्साह के साथ सदस्य परिवारों ने भाग लिया। इस अवसर पर ४ नवम्बर २०१२ को संस्था द्वारा आयोजित अर्न्तविद्यालय सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में विजयी प्रथम ११ प्रतियोगियों मुदित अग्रवाल, निखिल अग्रवाल, अभिषेक यादव, पुष्कर अवस्थी, शुभ्रा गुप्ता, वैभव चौहान, पवनकुमार यादव, पारस अवस्थी, नेहा गुप्ता, विनय गुप्ता, एवं पुष्कर ओमर को आकर्षक पुरस्कार देकर उनका उत्साहवर्द्धन किया गया। श्रीमती प्रीती अग्रवाल को लुटेरों के साथ साहस एवं वीरता से सामना करने हेतु स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। संस्था के संरक्षक श्री हनुमान प्रसाद तोषनीवाल ने उक्त पुरस्कार वितरित किये। संस्था के अध्यक्ष सत्यनारायण सिंहानिया ने अपने सम्बोधन में सदस्यों का स्वागत करते हुये छात्र-छात्राओं के ज्ञान को आलोकित एवं मुखर बनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुये इस कार्यक्रम को नियमित रूप से आगे बढ़ाने का संकेत दिया। साथ ही साथ नागरिक दायित्वों का पालन हेतु शीघ्र ही नगर में सभी स्थानों पर दायित्व-बोध के पोस्टर लगाने हेतु कदम बढ़ाने की बात कही। इस अवसर पर अन्नकूट के प्रसाद का आयोजन किया गया जिसे रुचिपूर्वक सभी ने ग्रहण किया। इस आयोजन में महामंत्री अनिल परसरामपुरिया, उपाध्यक्ष विश्वनाथ पारीक, महेशचन्द्र शर्मा, मंत्री अरुण सिंहानिया, मनोज अग्रवाल, कोषाध्यक्ष हरीओम तुलस्यान, महेश भगत, संजय अग्रवाल, श्रीगोपाल तुलस्यान, आलोक कानोडिया, अरूण जाजू, राकेश पोद्दार, पुरुषोत्तम अग्रवाल, बालकृष्ण शर्मा, भजनलाल शर्मा, हनुमान कानोडिया, गोपाल वर्मा, सजीव झुनझुनवाला, विनोद खेमका आदि ने सक्रिय भागीदारी की।

Subscribe **Business Economics :**

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

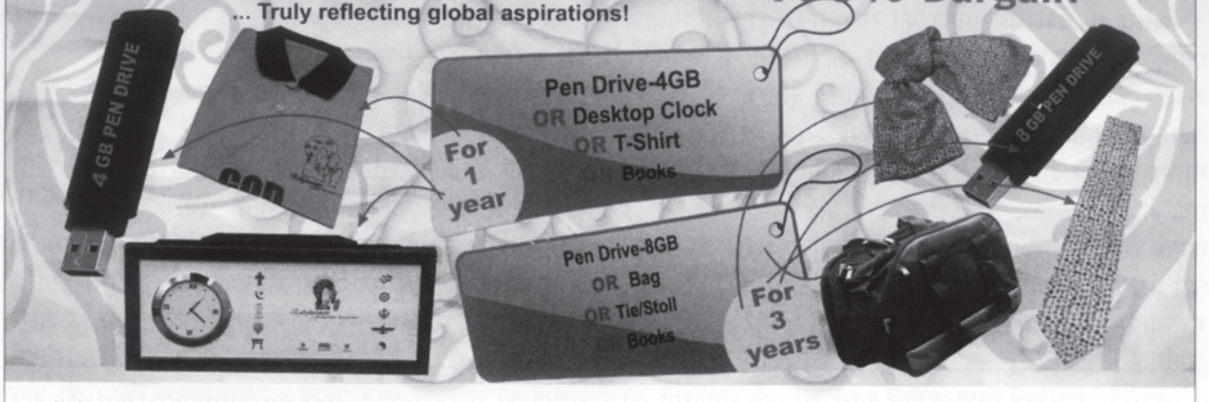

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | For 3 years Books of choice upto ₹ 1440

Business Economics Subscription Form

Name : Mr./Ms.____________________

Address :____________________

____________________ City/District:____________________

State:__________ Country:__________ Pin Code :

E-mail :__________ Mobile :__________ Landline :__________ STD CODE

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No.__________ dated:__________ for Rs.__________ drawn on:__________

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature:__________ date:__________

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :
1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-

सम्मेलन की लखीमपुर (असम) शाखा का दीपावली मिलन व नयी कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण

लखीमपुर मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी महिला मंच एवं मारवाड़ी युवा मंच के संयुक्त तत्वाधान में गत १८ नवम्बर २०१२ को मंच भवन में दीपावली मिलन समारोह का कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

इस समारोह का उद्घाटन मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष बलबीर प्रसाद शर्मा, महिला मंच की उपाध्यक्षा मोहिनी देवी राठी एवं युवा मंच के अध्यक्ष आनंद अग्रवाल ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस समारोह में आमंत्रित मुख्य-अतिथि के रूप में गुवाहाटी से पधारे पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय महामंत्री श्री मधुसुदन सिकरिया एवं सम्मेलन के प्रांतीय संयुक्त मंत्री राजकुमार तिवाड़ी थे।

समारोह में विशिष्ट अतिथि लखीमपुर चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष उदयशंकर हजारिका, लखीमपुर नगरपालिका के चेयरमैन कामिनी बोरा एवं धेमाजी मारवाड़ी सम्मेलन के मंत्री हमेश खंडेलिया थे। इस प्रोग्राम के साथ ही मारवाड़ी महिला मंच लखीमपुर का उनतीसवाँ स्थापना दिवस भी मनाया गया। मारवाड़ी महिला मंच द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। वहीं लॉटरी ड्रॉ भी किया गया।

मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी युवा मंच के नव निर्वाचित सदस्यों से आगन्तुक अतिथियों द्वारा शपथ पाठ करवाया गया। सम्मेलन के अध्यक्ष छत्तरसिंह गिड़िया, सचिव नरेश दिनोदिया, कोषाध्यक्ष राज चौधरी एवं युवा मंच के अध्यक्ष मनोज भारद्वाज, सचिव रंजु शाह, कोषाध्यक्ष मनोज लदड़ ने सभी पदाधिकारियों के साथ शपथ ग्रहण किया।

लखीमपुर शाखा के नये पदाधिकारी

अध्यक्ष
छत्तर सिंह गिड़िया

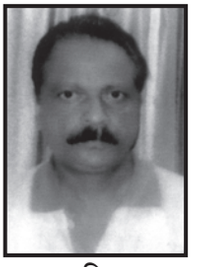

सचिव
नरेश दिनोदिया

कोषाध्यक्ष
राज चौधरी

उपाध्यक्ष
हीरालाल जैन
भागिरथ लाहोटी

संयुक्त सचिव
नन्द किशोर बजाज
मोहन लखोटिया

सह-सचिव
महेन्द्र लाहोटी

तुलसी साहित्य अकादमी का सम्मान समारोह

मध्यप्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी भोपाल द्वारा गत १७ नवम्बर २०१२ को १२वें तुलसी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तुलसी साहित्य अकादमी एवं अखिल भारत वैचारिक क्रान्ति मंच के संयुक्त तत्वाधान में "वैचारिक क्रान्ति की आवश्यकता एवं प्रक्रिया" पर आयोजित गोष्ठी में देश के विभिन्न भागों से आए विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए।

समारोह के द्वितीय चरण में तुलसी साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का लोकार्पण किया गया और तत्पश्चात कुल १८ साहित्यकारों को सम्मानित किया गया जिनमें उत्तर प्रदेश से ३, दिल्ली से १, राजस्थान से ५, बिहार से २, छत्तीसगढ़ से १, महाराष्ट्र से १ और मध्य प्रदेश से ६ साहित्यकार शामिल थे।

समारोह में डॉ. मुनीस त्यागी एवं डॉ. राज कुमार तिवारी 'सुमित' मुख्य अतिथि के रूप में और डॉ. राधेश्याम योगी, श्री जवाहर लाल मधुकर एवं डॉ. अली अब्बास उम्मीद विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुए। वक्ताओं ने सभी सम्मानित साहित्यकारों को उनकी साहित्यिक उपलब्धियों एवं तुलसी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. मोहन तिवारी 'आनन्द' को अकादमी के उत्तरोत्तर विकास हेतु बधाइयाँ दीं।

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images
PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
Front-lit-flex
Back-lit-flex
Woven P/E
Self Adhesive vinyl
Building wrap
One way vision
Vehicle / fleet graphics
Floor and wall graphics
Reflective Signage
Frosted vinyl
Canvas
Translite
Photo realistic poster paper
Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of-the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

मूर्धन्य साहित्यकार कन्हैयालाल सेठिया 'राजस्थान रत्न' से सम्मानित

From The Telegraph dated 20th December 2012

CALCUTTA'S POET WHO WAS RAJASTHANI'S VOICE

RAKHEE ROYTALUKDAR Jaipur, Dec. 19 : When the 20-year old Calcuttan moved Tagore to tears with his poem one balmy evening in 1939, the budding talent was not holding out a premise to Bengali poetry.

Kanhaiyalal Sethia, living and studying in a city resonating with the sounds of a new and liberated Bengali literature, was instead paying his dues to his native Rajasthani tongue and a nation longing for political freedom.

The young man who smuggled a tiranga from Calcutta to Sujangarh in Rajasthan to defy a colonial ban on proces-sions also kept the flag of Rajasthani literature flying in his faraway new home, where his family had migrated when he was just nine.

On Monday, four years after his death in Calcutta, his ancestral state honoured its beloved bard with one of the seven inaugural Rajasthan Ratna awards, whose other recipients included ghazal singer Jagjit Singh and musician Vishwa Mohan Bhatt .

If the prime historical ties between Bengal and Rajasthan have been forged by migrant businessmen from the desert state, Kanhaiyalal the poet built a unique literary bridge between them.

His grandson Siddharth, 39, who came to Jaipur with his father to receive the Rs 1 lakh prize, paid.tribute to that link. "Calcutta being the cultural capital of India, where artists and writers are honoured, perhaps inspired him to carry on writing as no other city would have," the graduate of St Xavier's College, Calcutta, told **The Telegraph**.

"My grandfather, a loving and gentle man, was mainly , responsible for my learning the Rajasthani language despite living in Calcutta."

Kanhaiyalal spoke Rajasthani at home and insisted that other family members do so too. It was a poem written in his mother tongue and steeped in veer ras (chivalry) that had so moved Tagore, who had himself turned Rajput Bravery into verse.

In Rajasthan, every school-child knows Kanhaiyalal's Dharti Dhora Ri, which describes the desert sand and its hues and has been adopted as the state anthem. The Rajputana Rifles and the Border Security Force use the song as one of their official tunes, and it has inspired a documentary by Gautam Ghose titled Land of Sand Dunes, which is how the poem's title translates into English.

Kanhaiyalal was born on September 11, 1919, in dry and dusty Sujangarh in Churu district,' about 200km from Jaipur, from where many families migrated to Calcutta in search of greener pastures. Kanhaiyalal's family moved to the Bengal capital in 1928 and opened a garment and jute business.

But Kanhaiyalal never wanted to become a merchant. He plunged into the Swadeshi movement, wore khadi and persuaded his father to stop selling Manchester cloth. The spirit of those days never left his poetry, much of which is marked by national-istic zeal. His famous Peethal Aur Pathal, which depicts an episode from Rana Pratap's life, was aimed at motivating In-dians to throw the British out.

Kanhaiyalal wrote in Hindi and Urdu too and received the Sahitya Akademi Award for his poem Lilatamsa and the Jnanpith Moortidevi in'1986. But he did not ignore his adopted home. When the Partition riots broke out, he formed the East Bengal Relief Society in 1946 and penned the poem Noakhali to express the nation's anguish.

Raj Parbha Pangharia, a Jaipur-based gynaecologist and writer, said she was inspired by the simplicity and precision of Kanhaiyalal's writings. "It's amazing how, coming from a small place like Sujan-garh, he had this deep knowledge of so many things and could express them in such simple words."

Kanhaiyalal lived in Ashutosh Mukherjee Road in Bhowanipore and graduated from Scottish Church College. He founded the Vichar Manch in Calcutta for upcoming talents in Rajasthani literature, painting and other cultural fields. In 1978, he formed, the Rajasthan Parishad, an organisation of Calcutta-based Rajasthanis.

Kanhaiyalal opened several schools, colleges and a medical college in Bikaner and Sujangarh and initiated the establishment of universities in Ajmer, Kota and Bikaner.

महेश बैंक में बीमा विषयक प्रशिक्षण

महेश बैंक के बेगम बाजार स्थित स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज में बीमा विकास प्राधिकरण के मार्गदर्शन में बैंक के बीमा विभाग के अधिकारियों के लिए ऑनलाईन प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं बैंक द्वारा संचालित कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र और कम्प्यूटर लैब की कार्यप्रणाली का अवलोकन करने उत्तरप्रदेश सहभागी वन प्रबन्धन एवं निर्धनता उन्मूलन परियोजना (जापान इन्टरनेशनल को-ऑपरेशन एजन्सी द्वारा सहायता प्रदत्त) के प्रधान निदेशक श्री राजीव कुमार IFS, परियोजना के निदेशक श्री अतुल जिन्दल IFS एवं उत्तरप्रदेश सरकार के प्रधान वन संरक्षक श्री सी.पी. गोयल IFS विशेष रूप से उपस्थित थे।

सम्माननीय अतिथियों का स्टॉफ ट्रेनिंग कॉलेज में स्वागत करते हुए बैंक के चेयरमैन रमेश कुमार बंग ने बीमा विभाग के अधिकारियों हेतु विशेष रूप से आयोजित ऑनलाईन प्रशिक्षण की प्रक्रिया बतायी तथा बीमा व्यवसाय के विकास एवं प्रशिक्षण की विशेषता बताते हुए कहा कि इससे न केवल बैंक कर्मियों की दक्षता बढ़ती है अपितु ग्राहक को भी बीमा क्षेत्र में आ रहे परिवर्तनों के साथ समुचित पॉलिसी के चयन में सुविधा मिलती है।

आत्म विश्वास

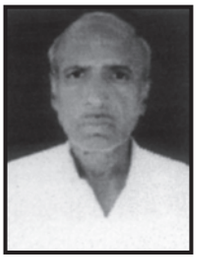

मैं हथेली पर हिमालय तौल सकता हूँ,
और पी सकता समूचे सागरों को साँस में ही,
नाप सकता श्रृष्टि सारी तीन डग में,
और रच सकता नया ब्रह्माण्ड क्षण में,
मैं मनुज विराट।
नूतन सौरमंडल को बना दूँ एक पल में,
रच नया सकता गगन मैं,
रच नई सकता धरा मैं,
रच नया सकता अनल, पय, वायु क्षण में,
और रच सकता नया मानव निमिष में,
श्रृष्टि नूतन, दृष्टि नूतन,
भाव सुन्दर, सत्य, शिव के
पल्लवित कर दूँ जगत में,
क्योंकि मैं कवि, हूँ प्रजापति,
चेतना नव घोल सकता हूँ।

– युगल किशोर चौधरी
चनपटिया (बिहार)

संस्कार के ताने

आओ बच्चों!
हम सब मिल एक कविता बनायें,
जिसे देश के बच्चे मिल,
एक साथ में गायें।
चंदामामा को ले गोदी
उसको खूब खिलायें
दूध-पतासा चम्मच भर-भर
उसको खूब पिलायें।
बहुत हो गया
"टिंकल-टिंकल"
अपने गीत बनायें।
मम्मी-पापा को भी,
आगे बढ़ ऐसी बात बतायें।
रोज-रोज सुनने पड़ते हैं,
संस्कार के ताने,
उनसे पूछो
किसने दिये–
छिपा-छपा के दाने।

– शम्भु चौधरी
साल्टलेक सिटी, कोलकाता

श्रद्धांजलि

प्रिय खेतान परिवार,

यारों का यार श्री कृष्ण खेतान नहीं रहा,

मन मानता ही नहीं, विश्वास होता ही नहीं कि हम सबका प्यारा एक ऐसा इंसान - निडर एवं दबंग जिसने हमेशा, हटके अपने लोगों के दुःख सुख में सच्चा साथ दिया, हमेशा हर परिचित के कोई भी कार्य हो, दिल खोलकर भाग लिया ही नहीं बल्कि अग्रणी रहा - वह यारों का यार अब हम सबके बीच नहीं रहा ! उसके साथ बिताये हुये हर पल हमेशा याद रहेंगे। मेरे तो पूरे परिवार से ही अंतरंग संबंध रहे हैं - हर काम व कार्यक्रम में श्रीकृष्ण कर्त्ता के रुप में ही रहते थे।

काश्मीर से कन्याकुमारी, कच्छ से कोहिमा भारत के किसी भी कोने में खेतान फैन अपनी ठण्डी हवा से सबको राहत और आनन्द प्रदान करता रहा है और करता रहेगा। किसी ने सच ही कहा है -

"है समय नदी की घार जिसमें हम सब बह जाया करते हैं
लेकिन कुछ लोग होते हैं जो इतिहास बनाया करते हैं"

हमारे श्रीकृष्ण खेतान ने भी इतिहास बनाया है और इतिहास के पन्नों में, अपने लोगों के दिल में एक अमिट छाप छोड़ गये हैं, उनकी क्षति हमेशा अपूरित रहेगी, यादें ही रह गयी हैं। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और परिवार को यह असीम वेदना सहन करने की ताकत दें।

– हरि प्रसाद बुधिया
कोलकाता

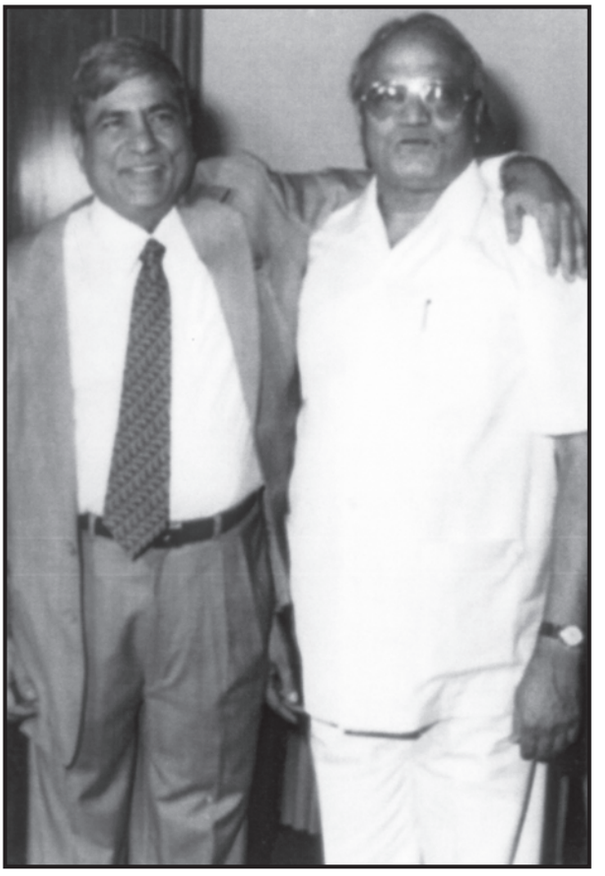

स्व. श्रीकृष्ण खेतान के साथ लेखक (बायें)

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं 'समाज विकास' परिवार की श्रद्धांजलि।

घुसपैठ की समस्या को राजनीति से ऊपर उठकर सोचें : भैयाजी जोशी

"घुसपैठ की समस्या केवल सीमावर्ती क्षेत्रों की नहीं है पूरे देश की सुरक्षा इससे संबद्ध है। इसे हिन्दू-मुसलमान की दृष्टि से न देखकर भारतीय और विदेशी नागरिकों के बीच के गंभीर प्रश्न के रूप में विवेचित करना चाहिए। राजनीतिक दृष्टि से ऊपर उठकर सोचने से ही इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है" - ये उद्‌गार हैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरकार्यवाह श्री सुरेशजी उपाख्य भैयाजी जोशी के, जो ९ दिसम्बर २०१२ को कोलकाता में राष्ट्रधर्म प्रकाशन लिमिटेड लखनऊ एवं श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, कोलकाता के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पं० वचनेश त्रिपाठी स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 'घुसपैठ : एक राष्ट्रीय चुनौती विषय' पर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। व्याख्यानमाला में प्रख्यात पत्रकार श्री के. विक्रम राव को भानुप्रताप शुक्ल स्मृति राष्ट्रधर्म सम्मान २०१२ प्रदान किया गया।

श्री के. विक्रम राव ने आचार्य विष्णुकांत शास्त्री का भावपूर्ण स्मरण करते हुए कहा कि भानुप्रताप शुक्ल वैचारिक ईमानदारी के सच्चे प्रतीक थे। श्री राव ने कहा कि सौदेबाज संपादकों के युग में राष्ट्रधर्म के तेजस्वी संपादकों की निष्ठा अनुकरणीय है।

श्री विमल लाठ ने कहा कि घुसपैठ की समस्या कैंसर की तरह फैल रही है। उस पर गंभीरता से विमर्श की आवश्यकता है। राष्ट्रधर्म लखनऊ के संपादक श्री आनंद मिश्र अभय ने कहा कि वैचारिक संघर्ष के इस युग में राष्ट्रवादी विचार सुप्रतिष्ठित हों। श्री प्रकाश बेताला तथा भाजपा के पूर्व अध्यक्ष श्री तथागत राय ने भी अपने विचार प्रकट किए।

धन्यवाद ज्ञापन किया कुमारसभा के पूर्व अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने। श्री आनंदमोहन चौधरी, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी तथा श्री महावीर बजाज भी उपस्थित थे। अतिथियों का स्वागत किया सर्वश्री मोहनलाल पारीक, अरुण मल्लावत, गिरिधर राय, भंवरलाल मूंधड़ा एवं बंकट लाल गग्गड़ ने।

अमिरिकी सरकार द्वारा हिन्दू देवी-देवताओं पर डाक टिकट

अमिरिकी सरकार के डाक विभाग ने हिन्दू देवी-देवताओं पर पहली बार डाक-टिकट जारी किए हैं। भगवान श्रीकृष्ण, शिव-पार्वती, मुरूगन, वेंकटेश्वर, गणेश, लक्ष्मी एवं साई बाबा के चित्रों वाले कुल सात डाक टिकट जारी किए गए हैं जो न सिर्फ अमेरिका में भारतीय मूल के लोगों के बढ़ते प्रभाव बल्कि विश्व समुदाय में हमारी संस्कृति की स्वीकार्यता का परिचायक एवं प्रत्येक हिन्दू हेतु गौरव का विषय है।

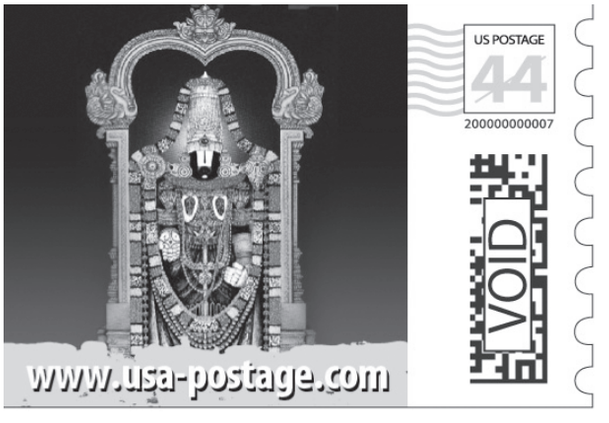

गज़ल

- **रामचरण यादव**, बैतूल (म.प्र.)

कोई भीड़ से घिरा हुआ, कोई तो अकेला है
कुदरत का खेल अनोखा, माया का झमेला है

पाप-पुण्य के बाद ही देखो, कर्मो का फल मिलेगा
कहीं खुशी की है सौगाते, कहीं गमों का मेला है

देखकर ये दृश्य यहां का, मन कहीं लगता नही
जानबूझकर या मजबूरी में, खेल ऐसा क्यों खेला है

दामन में कई दाग मिलेंगे, जो कहां कब धुल सके
आज भी भटकते फिर रहे, कई गुरु कई चेला है

हर हाल में मिलके रहेगी, सजा अपने कर्मो की
किसी ने रातें रोकर काटी, दिन में दुख को झेला है

भ्रष्टाचार तो फैला जग में, इसका दिखता अंत नहीं
मंहगाई की मार देखिये, कीमती हुआ ये केला है

बेटी बचाओ देश बचाओ

बहन बिना भाई अधूरा, बेटी बिना कन्यादान अधूरा,
बहु बिना घर अधूरा, पत्नी बिना पति अधूरा
माँ बिना बच्चे अधूरे, कन्या बिना दुनिया अधूरी

मैं बेटी हूँ, न ही, कोई कर्जदार। हर युग में सतायी हूँ,
तो क्या हुआ, बस कह दो अपनी हूँ, परायी नहीं।

जब बेटी सतायी जाती है, मातृत्व सौ-सौ आँसू बहाती है।
कलप जाता है माँ का दिल, धरती भी डोल जाती है।

कुदरत हैं बेटियाँ, कुदरत का करिश्मा नहीं,
दुनिया को बनाए रखे, वो अमृत है बेटियाँ।

रूलाए उम्रभर, भगवान ऐसी जिंदगी न दे।
बना दे पराई जो किसी को, ऐसा रिश्ता न दे।

सूरज की रूह, चाँद का चेहरा है बेटियाँ, बाईबिल, कुरान, गीता हैं बेटियाँ।
रौशन करेगा बेटा तो एक ही कूल को, पर दो कुलों की लाज को रखती हैं बेटियाँ।

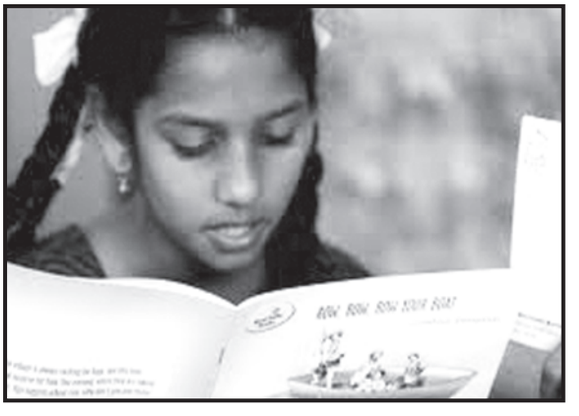

जो लिखा जा चुका है, जो लिखा जा रहा है, जो लिखा जायेगा।
गर्व से फूले नहीं समाओगे, जब बेटी के नाम से पहचाने जाओगे।

संबंधों की है पावन गरिमा, रिश्तों की हैं धड़कन बिटिया।
सखिया सह निहारें पल-पल, पीहर वाला आँगन बिटिया।

कुमकुम रोली चंदन बिटिया, परिवारों का बंधन बिटिया।
मेंहदी सा जीवन महकाए, वेणी पायल कंगन बिटिया।

होती है अजीब सी कैफियत, जब छोड़ कर जाती है बेटियाँ।
सब कुछ लगता है सूना-सूना, कितना रूला जाती हैं बेटियाँ।

माँ बापू की फिक्र में डूबी, अश्रु की छलकन बिटिया।
भाई के माथे की शोभा, देहरी का अभिनन्दन बिटिया।

आज ये अनचाही है, पर कल ये सबकी चाहत हो सकती है।
इस देश को नेतृत्व देने के लिए, बेटी बचाओ, स्वाभिमान जगाओ।

– गौरी शंकर गुप्ता
राजनांदगांव (छ.ग.)

घूमते–घूमते

देखा है कोलकाता के धूल भरे
काशीपुर मुहल्ले में
शाम!
गुजरता हूं इस सामने वाली सड़क से
उस गली के अंदर
जहां महौल गर्माता है
शाम की हल्की सर्दी में
सर पर बोझ वाले मजदूरों के कमरे
चाय-पान की दुकानें,
देसी का ठेक, एफएम की तान
गली की मादकता में झूमती है हवा
मुर्गा तलाशती युवतियां
खड़ी हैं कतार में
ताकती-मुस्कुराती-घूरती
नजर बचाकर गली पार करता
कोई भद्र शिक्षक लौट रहा है
शायद कोई ट्यूशन निपटाकर,
देखता हूं पान की दुकान की ओर
मटियाई वर्दी में सूखे ओठों वाला,
एक पुलिस।
दब जाता हूं रास्ता देने के लिए
तीन मोटी औरतों को,
नजर पड़ती है
नाली से सटी एक कोठरी पर
जहां कोई बच्चा याद कर रहा है
स्कूली पाठ
या उस पीछे वाले कमरे में
छोड़ आया था जिसे क्रम में
जहां संकुचित गृहस्थी में
वह गूंथ रही थी आटा।
और उधर आगे
रास्ता रोककर कैरम खेलते
दादाओं की गहमागहमी
तभी गुजरता है सामने से
फटी लुंगीवाला
वह रिक्शावाला
घुटता है दम मेरा
इस गली में
बेबस-बोझिल जिंदगी
लग गई है सबको
किसी छूत के रोग की तरह
मुड़ता हूं गली से मेन रोड की तरफ
किनारे, पालीथीन की झुग्गियों का सिलसिला,
गोश्त की दुकानें सहसा मूर्तिवत होता मैं,
एक विकल मुर्गे की चूंचूं सुनकर
कोमल शिकंजे में
फड़फड़ाती पांखों वाला मुर्गा
गर्दन सिकोड़े, असहाय, चित।
तेज छुरा चमचमाता है
उस बच्चे के हाथ में,
सामने ग्राहकों की भीड़
पुकारता है मुर्गा मुझे
अंतिम बार
पूरी आत्मीयता के साथ
इंद्रियां मूर्छित, मन मूढ़वत
भागना चाहता हूं, अपने आप से
पागल सड़कों की
उन्मादी सभ्यताओं से।

– कृष्णचंद्र द्विवेदी
(साभार : दैनिक जागरण,
दीपावली विशेषांक)

Anant Education Initiative | Anant footprints of knowledge

supported by infinity

Anant Education Initiative

Anant merit scholarship is for deserving, aspiring meritorious students from the economically weaker sections of the society.

Anant reaches out to meritorious students, who have secured **70% in Class X & Class XII** Board exams.

50% of the total number of scholarships awarded every year are **for girl students. Physically challenged students** are given preference.

For donation call : 91-33-40050410

All **donations** are eligible for **deduction** under **section 80G(5)(vi)** of Income Tax Act.

Infinity Tower I, 9th floor, Plot A3, Block EP, Sector V, Salt Lake Electronics Complex, Kolkata 700 091 | info@ananteducation.org | www.ananteducation.org

स्व. गोविन्द प्रसाद डालमिया भारतीय डाक विभाग द्वारा सम्मानित

विख्यात समाजसेवी स्व. गोविन्द प्रसाद डालमिया के सम्मान में भारतीय डाक विभाग ने उनके जन्मदिवस १२ नवम्बर पर, २००९ में उन पर स्मारक डाक टिकट जारी किया।

१२ नवम्बर १९१० को लक्खीसराय, बिहार में जन्मे स्व. डालमिया एक सक्रिय स्वतंत्रता सेनानी एवं शिक्षाविद थे और उन्होंने कुष्ट-रोग निवारण, विकलांग बच्चों के पुनर्वास, दलित/जनजाति उत्थान, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में दीर्घकाल तक महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अनेक पुरस्कारों से सम्मानित स्व. डालमिया १९३७ से १९७२ तक बिहार विधान सभा/परिषद के सदस्य एवं तीन सत्रों में बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष रहे।

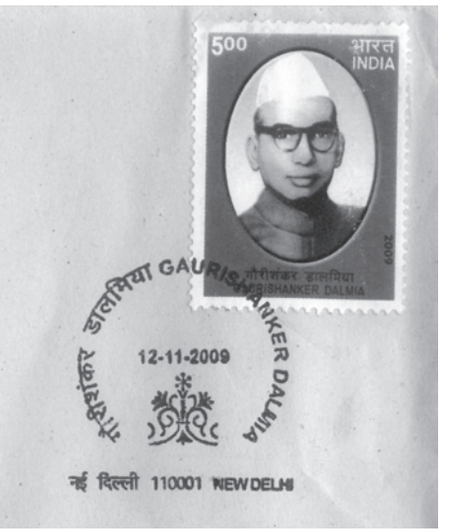

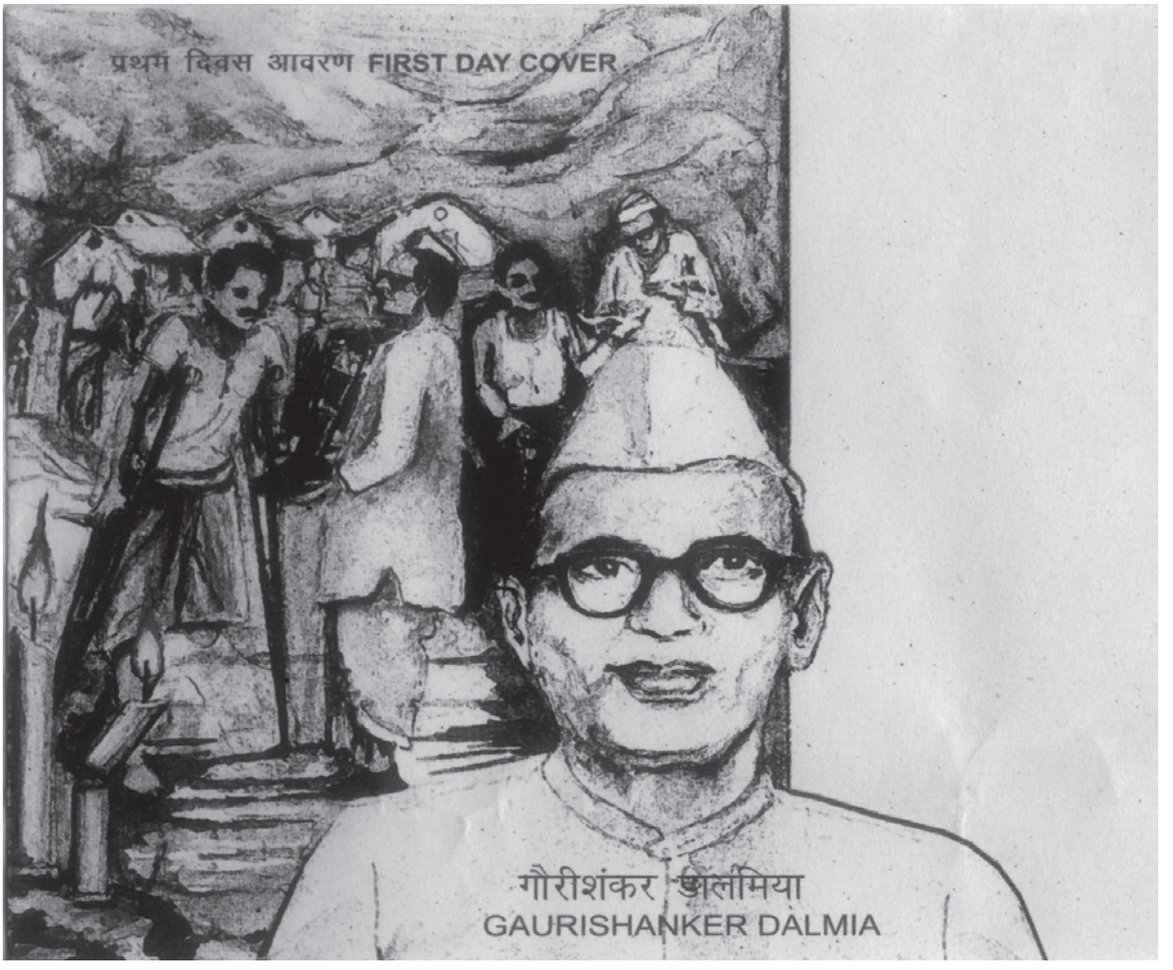

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda SREI Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

2 Yrs. PGDM ₹ 1,00,000 (AIMA ALL INDIA MANAGEMENT ASSOCIATION)

2 Yrs. #MBA + PGDM ₹ 1,70,000 (AIMA ALL INDIA MANAGEMENT ASSOCIATION)

3 Yrs. #BBA ₹ 75,000

2 Yrs. #MBA + PGPM ₹ 85,000

3 Yrs. #BCA ₹ 75,000

2 Yrs. #MBA (Hospital Mgmnt.) ₹ 95,000

DUAL SPECIALISATION AVAILABLE

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA/PGDM

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE WITH 50% SCORE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- APTITUDE TEST
- APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

Assistance for placement

- Eminent Faculty
- Online Application Facility
- Regular / Weekend Classes
- Hostel
- AC Classrooms
- P G Accommodation

Complimentary Courses

- Spoken English
- Foreign Languages
- Bengali & Sanskrit
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development
- Theology

Other Courses

- Company Secretaryship
- Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Retail Management
- Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I
- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit, Bengali and Hindi
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examinations (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview
- Certificate Course on Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Vocational & Technical Training
- Entrepreneurship Development
- Diploma in Banking and Finance
- Certificate course on theology

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379 • E-Mail : info@iisdedu.in • Website : www.iisdedu.in

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor, Kolkata- 700017, Ph : (033) 2290 0338

विश्व के आठ सबसे धनी व्यक्तियों का हश्र !

सन् १९२३ में, विश्व के सबसे धनी व्यक्तियों में शामिल आठ ने एक बैठक की। उनकी सम्मिलित संपदा, अनुमानतः, अमरिकी सरकार की संपत्ति से भी अधिक थी। इन लोगों को पैसे कमाने और संपत्ति अर्जित करने की कला आती थी। किन्तु, २५ वर्षों के अंतराल में:

१. सबसे बड़ी स्टील कम्पनी के अध्यक्ष, चार्ल्स स्वाब, दिवालिये होकर मरे।
२. सबसे बड़ी गैस कम्पनी के अध्यक्ष, हावर्ड हब्सन, अपना मानसिक संतुलन खो बैठे।
३. महानतम माल-व्यापारियों (कॉमोडिटी ट्रेडर्स) में से एक, आर्थर कट्टन, अपने ऋण नहीं चुका पाने की स्थिति में मरे।
४. न्यूयार्क के स्टॉक एक्सचेंज के प्रमुख, रिचर्ड स्विट्नी, जेल भेजे गए।
५. अमेरिकी राष्ट्रपति के कैविनेट के एक सदस्य, अल्फ्रेड फॉल, का कारावास माफ इसलिए किया गया ताकि वे अपने घर में अपनी आखिरी सांसें ले सकें।
६. वाल स्ट्रीट के चोटी के व्यापारी और 'ग्रेटेस्ट बीयर ऑन वाल स्ट्रीट' के नाम से प्रसिद्ध जेस्सी लीवरमोर ने आत्महत्या कर ली।
७. विश्व की सबसे बड़ी एकाधिकार वाली कंपनी के अध्यक्ष, इवार क्रूगर, ने आत्महत्या कर ली।
८. बैंक ऑफ इन्टरनेशनल सैटेलमेंट के अध्यक्ष, लियोन फ्रेजर, ने आत्महत्या कर ली।

इन सज्जनों ने जीना नहीं सीखा सिर्फ पैसे कमाना सीखा!

पैसों से भूखों के लिए भोजन, बीमारों के लिए औषधि, जरूरतमंदों के लिए कपड़ों का प्रबंध किया जा सकता है; किन्तु, यह विनिमय का माध्यम मात्र है। हमें दो प्रकार की शिक्षाओं की आवश्यकता है – एक वह जो हमें जीने के संसाधन जुटाना सिखाए और दूसरी वह जो हमें जीना सिखाए। लोगों ने अपनी आपको पूरी तरह अपने व्यवसाय में डुबो रखा है...

पानी का जहाज पानी के बिना चल नहीं सकता। जहाज को पानी की जरुरत होती है, किन्तु पानी अगर जहाज में घुसने लगे तो जहाज संकट में आ जाएगा और डूब जाएगा। इसी प्रकार, हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ कमाना अनिवार्य है किन्तु हमें इस 'कमाना' को अपने हृदय पर अधिकार नहीं करते देना है – इससे जीने का संसाधन हमारे विनाश का कारण बन जाएगा। आइए, कुछ क्षण को रुकें और अपने आप से पूछें, "**क्या पानी हमारे जहाज में घुस चुका है**?"

बेरो पाड़ तो सरी बीरा

बेरो पाड़ तो सरी बीरा धरती कंईयां हालै?
नजर पसार तो सरी बैरी धेरा कंईयां घालै?
तेरी भैण रो दिवलो बुतर्यो के दिवलां नै पूजै?
जठै खून री होली होरी के दिवाली सूझै?
टीको कंईयां कालो पड़गो आज मनाता सूण?
बीरा के तन्नै आवे कोनी जीजोजी री ऊण?
तोरण बंदरवाल वांध कै, क्यूं घर द्वार सजावै?
एं विपदा क दिन मं क्यूं मेरी माँ को दूध लजावै?
हवा सूंघ कै देख बीर क्यूं बाँ स खून री आवै?
भाई रहतां भैण आज क्यूं आंसूड़ा दुलकावै?
उठकै देख बादलां कानी धूओं कितणो होवै,
भैण छुहागण होना चाली बीरो दिवलो जोवै।
कोई क जीणै रा जोता, कोई सेज सजावै,
भैणा रो सुहाग है लुटर्यो भाई रास रचावै।
रोली रो टीको मत काढ़ै, मोली मतां लपेटै।
जा भारत री सीवां पै बैर्यां न क्यूंना समेटै?
जदी भैण सूं नेह घणो है जड़दे आज संदूखां,
भाई बैण मिल दोन्यूं चालां धर कांधै बंदूखां।

– जगदीश प्रसाद पाटोदिया "चाँद"
हावड़ा (प. बंग)

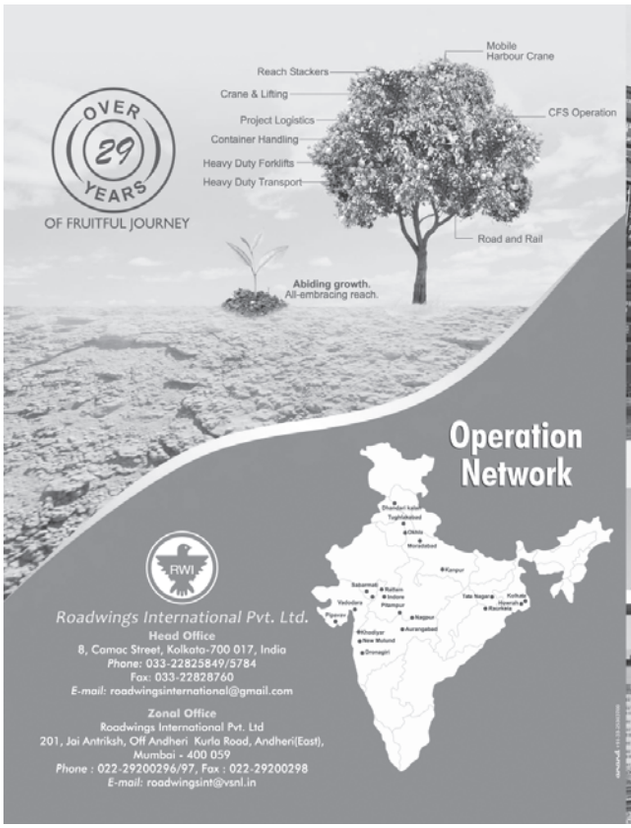

Mobile Harbour Crane
Reach Stackers
Crane & Lifting
Project Logistics
CFS Operation
Container Handling
Heavy Duty Forklifts
Heavy Duty Transport
Road and Rail
OVER 29 YEARS
OF FRUITFUL JOURNEY
Abiding growth.
All-embracing reach.
Operation Network
Roadwings International Pvt. Ltd.
Head Office
8, Camac Street, Kolkata-700 017, India
Phone: 033-22825849/5784
Fax: 033-22828760
E-mail: roadwingsinternational@gmail.com
Zonal Office
Roadwings International Pvt. Ltd
201, Jai Antriksh, Off Andheri Kurla Road, Andheri(East),
Mumbai - 400 059
Phone : 022-29200296/97, Fax : 022-29200298
E-mail: roadwingsint@vsnl.in
Roadwings International Pvt. Ltd.
Lifeline in Logistics
In 1983 on the auspicious day of "Rathyatra" Sri Shrawan Kumar Sureka enjoying support of his father Sri Bhani Ram Sureka, promoted Roadwings International Pvt. Ltd. Beginning with cargo handling and transport but with vision of emerging as the most preferred integrated multi-modal logistics service provider in the country, he pursued his cherished object with relentless effort and zeal.
Hard work, keen business acumen and natural leadership qualities enabled Sri Sureka to achieve progressive growth of his company and expand customer base to include reputed organizations and high profile concerns like Haldia Petrochemicals Ltd., Hindustan Copper Ltd., UB & Mcdowell, BHEL, SAIL, FCI, NTPC, MSTC, Kolkata Port Trust, Bombay Port Trust, Pipavav Port, Mormugao Port Trust etc.
Rich experience of his father over five decades and the support extended by a dedicated team of professionals and other personnel, have helped to fulfill the vision of making Roadwings International Pvt. Ltd., the undisputed leader in logistics services sector.
The company believes in excellence, in innovation and service which have helped it to rise from the status of general cargo handling and transporter to leader in container handling and logistics services. In collaboration with KONE cranes a Swedish firm, the company bagged a prestigious contract from the Container Corporation of India, a Public Sector Undertaking, for supply, erection and commissioning of 33 no. of Reach Stackers at the Terminals of CONCOR. The company with its pool of specialized technical manpower took upon operation and maintenance of heavy and sophisticated handling equipments at many parts of India.
The company now provides high productivity equipment, logistics services and maintenance of machines to Ports, Railways and its subsidiaries, and is a professionally managed multi-crore growing organization with specialization in containerized cargo handling and logistics services and operation and maintenance of machines where specialized technical skill is involved.
Today, under the able leadership of its Managing Director Sri Shrawan Sureka, Roadwings has emerged as a leading multi - modal, innovative logistics service provider in supply, transportation & cargo handling chains with its network expanded to 11 Inland Container Depots and 5 Ports across India. The company's current annual handling is over 1 million TEUs which is expected to cross 1 million mark by 2012-13.
Presently Roadwings operates a Container Freight Station (CFS) at Aurangabad taking on lease the infrastructure from Central Warehousing Corporation. The company has also plans to build and operate CFS of its own at Pipavav, Gujarat for which necessary land has been taken and the project is in its advance stage.
MC Dowel
JNPT
Recognized by Indian Banks' Association
The infrastructure created by the company with customers in mind comprise the following Fleet of state-of-the art equipment, both owned and under collaboration:
• Handling of containerized cargo
• Coal, Iron ore, Cement, Minerals, Jute, Fertilizers
• Turnkey project cargo
• Bulk / Break Bulk Cargo
• Ports, Shipping & logistics
• Specialized ODC equipment & Machinery Transportation
• Door to Door service
• Rail - Road Air Cargo transfer facility
• Vessel & Railway Rake loading / unloading

With Best Compliments from :

MIRONDA
TRADE & COMMERCE PVT. LTD.

MIRONDA TRADE & COMMERCE PVT. LTD.

MERCURY INTERNATIONAL

MALVIKA COMMERCIAL PVT. LTD.

AMIT FERRO-ALLOYS & STEEL (P) LTD.

SB TOWERS, 3RD FLOOR,
37, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA - 700 017, INDIA

PHONE : 2289-5400
FAX : 2289-5401
EMAIL : info@mirondagroup.com

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :---

SHYAM SANITARY PVT. LTD.

Registered Office : 3, Jadunath Dey Road, Kolkata : 700 012

Show Room : 10, Nirmal Chandra Street, Kolkata : 700 012

Phone No.: 2212 2735, 2237 4673, 2221 9959, 2225 7674, 4017 9650, 4066 3033 Fax No. 2225 6095

E-mail : dokania.pradip@rediffmail.com

JOHNSON MARBONITE , NITCO FLOOR TILES, ASIAN VITRIFIEDTILES, DUCON PVC CISTERN
DUCON SEAT COVER, STAINLESS STEEL SINK, MARC, ESSCO, PARRYWARE, SONET (ISO 9801)
FINECERA, PRIYA SANITARYWARES.

Authorised Distributors

ASSOCIATED CONCERN : ANKIT SANITATION
112, COLLEGE STREET, KOLKATA 700 012 PHONE : 2237 4019
FAX : 2221 7474

Open your on-line trading account at most competitive rates

RAJASTHALI COMMODITIES PVT. LTD.

(One Stop Financial Shop)

Share Broking : Equity & F & O
Commodities : Mutual Fund · IPO · On-line Trading

16, Kishan Lal Burman Road, Bandhaghat, Salkia, Howrah-711 106
Phone : 2655-0436 / 3761 / 5670

www.stockideas.in

For intra day and delivery calls on share markets and commodities
Ask for a free trial call : 9831301335

नये युग के नये अर्जुन सुन !

दुनिया में एक से एक बढ़कर
वाहन है, स्कूटर है, कार है
हवाई जहाज है और अन्तरिक्षयान है
पर लक्ष्मी के लिये तो
आज भी उल्लू ही महान है
उल्लू पर वह इतना
विश्वास करती है कि न
आऊटडेटेड मानती है
न राइट ऑफ करती है
नये टेंडर तक नहीं निकालती है
अनुबंधित वाहन की बात हो
तो भी टालती है और तो और
उल्लू की सेवा उसे
इतनी भाती है कि वह जहां
ले जाए वहीं चली जाती है
यही कारण है कि
शताब्दियों से वे ही लोग
धनवान हैं और वे ही
हट्ठे-कट्ठे हैं जो या तो
उल्लू हैं या उल्लू के पट्ठे हैं
फिर क्यों देर करते हो?
सफल होना हो तो आप भी
यह फार्मूला अपनाओ
दो के उल्लू बनो
बीस को उल्लू बनाओ
उल्लू पर गज़ल लिखो
उल्लू पर कसीदा लिखो
अपना उल्लू सीधा करो
चाहे जैसे भी हो
इसे गाली की तरह से मत लो
इसकी कीमत को पहचानो
बी.ए. या एम.ए. डिग्री से भी
बड़ी मानो ऐसा करोगे तो
आपकी सारी
विपदाएं छंट जाएंगी
उल्लू को पटाओगे तो
लक्ष्मी आप ही पट जाएगी
चोरियां भी करोगे तो
साहूकार कहलाओगे
बड़े नेताओं की तरह
बचते ही जाओगे
उल्लू की सेवा में ही
आपका उद्धार है
नये युग के नये अर्जुन सुन
मेरी गीता का तो यही सार है।
उल्लू की करामात तो
यह है कि देवी
इस कदर रीझ जाएगी कि
छप्पर पड़ौसी का फटेगा पर
लक्ष्मी आपके घर आवेगी।

– **गौरीशंकर 'मधुकर'**, बीकानेर (राजस्थान)

BANK SURPASSES ₹2000 CRORE BUSINESS

REACHING ANOTHER SUMMIT

2000 crore and lots more...

Mahesh Bank is growing from strength to strength - the rising business which has now crossed ₹2000 crore reflects its unique place. What's more, the bank has also introduced Direct RTGS / NEFT facility, RuPay ATM Card facility, Internet Banking, Mutual Funds, Point of Sale Services (POS) and added many innovative products.

Contemplating to expand branch network as RBI has acceded to the request of the Bank to extend its area of operation in the entire States of Maharashtra, Rajasthan & Gujarat.

It's all possible owing to the confidence reposed by its key pillars of strength - customers, shareholders & well-wishers. The bank takes this opportunity to thank all for inspiring to succeed and supporting us with their patronage.

A big 'Thank You' once again to all, who made it possible.

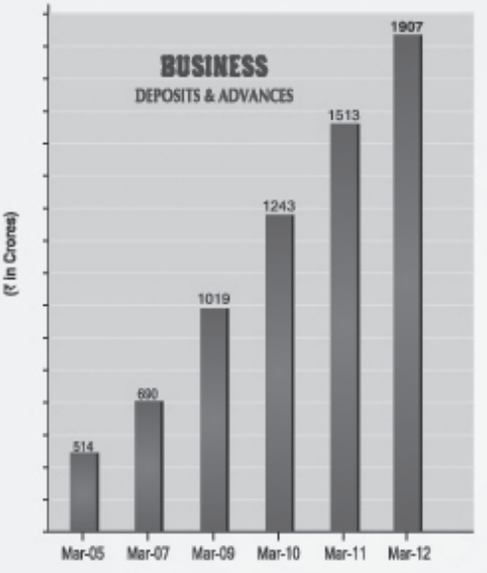

SALIENT FEATURES

- Network of 39 Branches with anywhere banking facility.
- Extending expeditious and courteous service to more than 3 Lakh Customers.
- Avail Rupay ATM Card facility.
- Direct RTGS / NEFT Facility from own platform.
- Technologically innovative "Net Banking" facility.
- Bank's Head Office has Accrediation of ISO 9001:2008 Certification.
- Remittances from abroad through Western Union Money Transfer.
- Tie up with Reliance for Mutal Funds Business.
- Life Insurance Solutions.
- Point of Sale services (POS) for Traders.
- e-Tax payment and e-Seva facility at select branches.
- Educational loans upto ₹20.00 Lakhs*.
- Acceptance of tax saving deposits under section 80C of Income Tax Act.
- Recipient of award from Banking Frontiers, Mumbai for "Operational Efficiency".

* Conditions apply.

महेश बैंक ESTD. 1978

MAHESH BANK

THE A.P. MAHESH CO-OP. URBAN BANK LTD. (MULTI - STATE SCHEDULED BANK)

H.O. : 5-3-989, 3rd Floor, Sherza Estate, N.S.Road, Osmangunj, Hyderabad - 500 095 (A.P.) INDIA
Phones : 040 - 24615296/5299, 23437100/101/102/103 & 105 Fax: 040-24616427

39 BRANCH Network | NET Banking | RTGS Funds Transfer | Point of Sale Services | Mutual Fund Services | Easy Credits for Trade & Industry | FOREIGN EXCHANGE FACILITY | Life Insurance Services | 100% CBS BRANCHES Anywhere Banking

E-mail: info@apmaheshbank.com
Website: www.apmaheshbank.com

BALAJI
(A BIJAY GUJARWASIA GROUP)

GANAPATI BALAJI SPINNING MILLS PRIVATE LIMITED

YARN MANUFACTURER

MILL ADDRESS:-
SONEPUR, SUBARNAPUR,
BALAJI NAGAR, ODISHA – 767 017
PHONE – 06654 220328
FAX – 06654 220050

HEAD OFFICE:-
7, GANESH CHANDRA AVENUE,
3rd FLOOR, KOLKATA – 700 013
PHONE – 033 2221 6717
FAX – 033 2211 0437

21, CAMAC STREET,
9TH FLOOR, BELL'S HOUSE,
KOLKATA – 700 016
PHONE – 033 2289 0081,
033 2282 0155
FAX – 033 2289 0082

(M) 098300 21565, E-MAIL: balaji_bijay@yahoo.co.in

SALTEE GROUP

SALTEE PLAZA

SALTEE SPACIO

ICE LOUNGE

STAR FACILITY HOTEL

DN-05 SALTEE LAKE

HAVELI RESTAURANT

BRONZE LOUNGE

BENCHMARKING
EXCELLENCE

SALTEE GROUP

Haveli An Ethnic Veg. Restaurant | SALTEE PLAZA The Business Hub | SALTEE SPACIO Nager Bazaar, Dum Dum | minus 6 | Bronze LOUNGE | BAR

SALTEE INFRASTRUCTURE LTD.

AE-40, Sector - 1, Salt Lake, Kolkata - 700 064, saltee@salteegroup.com, www.salteegroup.com

With Best Compliments from :

Krishi Rasayan Exports Pvt. Ltd.

कृषि रसायन एक्सपोर्टस प्रा० लि०

Regd. Office :
FMC Fortune, Block A-11, 4th Floor
234/3A, A.J.C. Bose Road
Kolkata - 700 020, India
Tel . : +91-33-2287 5730/5831, 2283 9454
Fax : +91-33-22871436
Email : kr@krishirasayan.com
Website : www.krishirasaya.com

Factory : (a) Plot 170, Industrial Area, Baddi, Dist : Solan (HP), Tel. : 01795 44594
(b) 1st Parallel Road, Industrial Growth Centre, Samba, Jammu (J&K)
(c) Shed No. 2A, Large Industrial Estate, Muzaffarpur, Bihar. Telefax : 0621 2275481

With Best Compliments from :

BALKRISHNA MAHESHWARI

33, RAJA SANTOSH ROAD

KOLKATA-700027

Mobile : 9330835423

LAKHOTIA TRANSPORT CO. PVT. LTD.

H. O. : 26, TARACHAND DUTTA STREET, KOLKATA - 700 073
Near Md. Ali Park between Moon Light & Krishna Cinema Hall
Ph. : 2235 4802 / 4493 / 7254 / 4979, 2221 8406 / 8413
Fax : 033 2235 4978, E-mail : ltc55@vsnl.net

MUMBAI	DELHI	CHENNAI
307, Arihant Building	Apsara Complex	48, Verrappan Road
64-D, Ahmedabad street	P.O. Chikamberpur	2nd. Floor, Soucarpet, Chennai
Mumbai-400 009	U.P. Border	Ph. : 044 25357858/59,09383589555
Ph. 022 5631 4761-4766/3253 8806	Ph.: 09350021890 / 09310772192	
Fax.56314767	0120-412 4355	